卐 ॐ गं गणपतये नमः 卐

!! श्रीराम !!

श्री राम जय राम जय जय राम

जोग लगन ग्रह बार तिथि सकल भए अनुकूल।
चर अरु अचर हर्षजुत राम जनम सुखमूल।।

सम्पादक मण्डल

पं0 दिनेश चन्द्र शर्मा
डॉ0 भगवान दास पटैरया
श्री जगदीश प्रसाद शर्मा 'सरल'

स्मारिका

विक्रमी संवत् 2073 सन् 2016-2017

वार्षिक अंक - 23

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति (पंजीकृत)

स्थानीय कार्यालय : ए-447, सैक्टर - 47, नोएडा - 201 303
वैबसाइट - www.shriramcharit.com, ई-मेल - contactus@shriramcharit.com
दूरभाष - 0120-2571547
चल - 9811056467

मुद्रक : एक्सप्रैस प्रिंट हाउस, गाजियाबाद
फोन : 9350772514
ई–मेल : expressprinthouse@yahoo.com

पाठकों से निवेदन

स्मारिका का यह तेईसवाँ अंक आपके हाथ में है। हमारा प्रयास रहा है कि इसमें भगवान श्रीरामजी के आदर्शों को प्रतिपादित करते हुए ऐसे लेख प्रकाशित किए जाएँ, जिनसे समाज में नैतिक मूल्यों का उत्थान हो। इस दिशा में हम कहाँ तक सफल हुए, यह आप ही बता सकते हैं। आशा करते हैं कि आप हमें पत्रिका पढ़कर **अपनी प्रतिक्रिया अवश्य भेजेंगे,** ताकि हम अगले अंकों में तदनुसार उसे समाहित कर सकें।

साथ ही यह भी निवेदन है कि आप अपने लेख निर्धारित समय अक्तूबर 2016 तक हमें भिजवाने का अनुग्रह करें, ताकि यथासंभव उन्हें अगले अंक में प्रकाशित किया जा सके। इस संबंध में निम्नांकित बिन्दु उल्लेखनीय हैं –

1. **लेखन श्रीरामचरितमानस में वर्णित प्रसंगों पर तथा लेख का शीर्षक चौपाई, दोहा आदि पर आधारित हो।**
2. लेख में उद्धरित दोहा–चौपाई आदि गीताप्रेस गोरखपुर से प्रकाशित 'श्रीरामचरितमानस' के अनुसार हों। कृपया संदर्भ निम्नांकित प्रकार से अंकित करें।

   (जामवंत के बचन सुहाए। सुनि हनुमंत हृदय अति भाए॥)

   (5 / 1 / 1)
3. लेख ई–मेल से भेजने हेतु कृपया पृष्ठ सं0 22 देखें।

स्मारिका के प्रकाशन में विज्ञापन से प्राप्त धन का महत्वपूर्ण योगदान है। अनुरोध है कि आप भी अपने संस्थान का विज्ञापन भेजकर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

विज्ञापन दरें इस प्रकार से हैं –

क्रमांक	विवरण	राशि (रुपयों में)
1.	प्रथम पृष्ठ के पीछे (दूसरा कवर पेज)	35,000
2.	अंतिम पृष्ठ (चौथा कवर पेज)	30,000
3.	अंतिम पृष्ठ के पीछे (तीसरा कवर पेज)	25,000
4.	पत्रिका के अन्दर पूर्ण पृष्ठ	15,000
5.	पत्रिका के अन्दर आधा पृष्ठ	10,000

पाठकों से प्राप्त सहयोग राशि का भी इसके प्रकाशन में योगदान सराहनीय है, अतः अपनी श्रद्धानुसार जो पाठक सहयोग राशि भेजना चाहें वे समिति के निम्नांकित खाते में जमा कर सकते हैं। भारतीय स्टेट (ब्रांच कोडः 15971) में चालू खाता सं0 35299035590 IFS Code : SBIN0015971

अध्यक्ष की ओर से

प्रिय श्रीरामचरितमानस प्रेमी बन्धुओ !

आजकल हमारे देश में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व में सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। समाज में पाश्चात्य संस्कृति का तेजी से प्रभाव बढ़ रहा है। हम अपनी शिक्षा, व्यवहार, समाज के प्रति कर्तव्य, धर्म तथा सेवा भावना से विमुख होकर मानव का हित करने की बजाय अहित कर रहे हैं। आज प्रेम और भाईचारे का स्थान हिंसा एवं वैमनस्य ने ले लिया है, जिसका प्रमुख कारण अत्यधिक सांसारिक वैभवों को प्राप्त करने की होड़ लगी है। ऐसी विषम परिस्थितियों में भी आपसी सद्भाव बढ़े, जन–जन में ईश्वरीय आस्था तथा भावी पीढ़ी में सुसंस्कार जाग्रत हों, इसी उद्देश्य से श्रीरामचरितमानस सत्संग समिति, नोएडा की सन् 1990 में स्थापना हुई। **इसका अगस्त 2015 को श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति में विलय हो गया है।**

हमारा उद्देश्य श्रीरामचरितमानस पाठ एवं प्रवचनों के माध्यम से मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीरामचन्द्रजी के पावन चरित्रों का प्रचार–प्रसार कर समाज एवं धर्म की सेवा करना है। इसके द्वारा हम सभी का कल्याण होगा। यह समिति अपने स्थापना काल से मार्च 2016 तक 414 मानस पाठ एवं कई प्रवचनों के कार्यक्रम आयोजित करा चुकी है। इसी कड़ी में अब तक अनेक विख्यात कथाकारों जैसे– संत प्रवर श्री विजय कौशलजी महाराज, रामभक्त पं0 मधुकरजी, श्री लक्ष्मीनारायण शर्माजी, पं0 रामगोपाल तिवारी, पं0 बलराम मिश्रजी, पं0 बैजनाथ शुक्लजी, श्री श्री 1008 श्री प्रेमाचार्यजी, श्री बैजूनाथजी महाराज, आचार्य श्यामसुंदर शरणजी, गोस्वामी रमाकांत चतुर्वेदीजी, मानस माधुरी अखिलेश्वरी देवी, आचार्य अखिलेश्वरानन्द (अंगदजी) महाराज, स्वामी श्री राजेश्वरानन्द सरस्वतीजी आदि के प्रवचनों का आयोजन किया जा चुका है। ऐसे ही कार्यक्रम भविष्य में भी होते रहें, ऐसी परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है।

गत 25 वर्षों की भाँति इस वर्ष भी शुक्रवार दिनाँक 15 अप्रैल 2016 को श्रीरामजन्ममहोत्सव का आयोजन अग्रसेन भवन, सैक्टर–33, नोएडा में किया गया है। इस स्मारिका के प्रकाशन में आर्थिक सहयोग के लिए हम सभी विज्ञापनदाताओं एवं दानदाताओं का आभार प्रकट करते हैं। इस वर्ष "श्रीरामनवमी" के पावन पर्व पर रामकथा एवं श्रीरामजन्ममहोत्सव का **आयोजन उपर्युक्त तिथि पर प्रातः 10 बजे से अपराह्न 2 बजे तक होगा। इस अवसर पर मानस मर्मज्ञ पं0 बैजूनाथजी महाराज श्रीरामकथामृत का पान कराएँगे।** मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस कार्यक्रम के द्वारा जन–जन में धार्मिक भावना का प्रचार–प्रसार होगा, समाज का नैतिक उत्थान होगा और प्रभु श्रीराम के आदर्शों पर चलकर हम स्वयं, अपने परिवार, समाज, देश और विश्व का कल्याण कर सकेंगे।

समिति द्वारा आयोजित मानस पाठ

श्रीरामचरितमानस सत्संग समिति (पंजीकृत), नोएडा द्वारा समय समय पर श्रीरामचरितमानस अखण्ड पाठ/सुन्दरकाण्ड पाठ एवं प्रवचन (सत्संग) का आयोजन किया जाता रहा है। इस क्रम में **मार्च 2016 तक 414 मानस पाठ आयोजित किये गये।** इसका विवरण समिति की विगत वर्षों की स्मारिका में भी प्रकाशित किया गया है। पिछले एक वर्ष में 13 पाठ एवं 2 प्रवचन (श्रीराम कथा ज्ञान यज्ञ) आयोजित हुए, जिनका विवरण निम्नांकित है। इस वर्ष श्रीरामकथा तथा प्रवचन के जो आयोजन हुए, उनका विवरण भी निम्नांकित है –

क्र.सं.	**तिथि**	**नाम व पता जिनके निवास पर कार्यक्रम आयोजित हुए**
1.	12.4.2015	श्री ए.के. सक्सेना, एच 329, बीटा II, ग्रेटर नोएडा
2.	18.4.2015	कर्नल डी.एल. गाँधी, सैक्टर–39, नोएडा
3.	20.4.2015	श्री कुलदीप कुमार, सी 7/6, यमुना विहार, दिल्ली 110053
4.	24.4.2015	पं0 दिनेश चन्द्र शर्मा, ए–447, सैक्टर–47, नोएडा
5.	15.8.2015	डॉ0 रविन्द्र कुमार शर्मा, बिजवासन, दिल्ली
6.	1.9.2015	डॉ0 प्रेम नंदन प्रसाद साही, ए–26 सैक्टर–49, नोएडा
7.	15.11.2015	श्री सुरेश दूबे, ए–77, सैक्टर–47, नोएडा
8.	14.1.2016	डॉ0 रोहित जैन, जे–20, सैक्टर–11, नोएडा
9.	29.1.2016	श्री देवेन्द्र तोमर, ए–67, सैक्टर–48, नोएडा
10.	12.2.2016	श्री प्रदीप पोरवाल, डब्ल्यू 172, सैक्टर–12, नोएडा
11.	15.2.2016	डॉ0 बी.पी. सिंह, डी 17, सैक्टर–15, नोएडा
12.	26.3.2016	श्री एम० सी० शर्मा, बी 84, सैक्टर–23, नोएडा
13.	31.3.2016	श्री लीलूराम वर्मा, सी 49, सैक्टर–23, नोएडा

प्रवचन श्रीराम कथा ज्ञान यज्ञ

क्र.सं.	**तिथि**	**कार्यक्रम/स्थान**	**कथा व्यास**
1.	26.3.2015 से 28.3.2015 तक	अग्रसेन भवन, सै0–33, नोएडा	मानस रत्न पं0 रामगोपालजी तिवारी श्रीरामजन्म महोत्सव (रजत जयंती वर्ष)
2.	22.8.2015	श्रीराम मन्दिर, सी ब्लॉक सैक्टर–36, नोएडा	मानस मर्मज्ञ पं० बैजूनाथजी महाराज (तुलसी जयंती समारोह)

इस अंक में

क्रमांक	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	अध्यक्ष की ओर से		3
2.	समिति के सदस्यों की सूची		7
3.	पाठकों के पत्र		9
4.	श्रीरामजन्ममहोत्सव (रजत जयंती वर्ष)की झलकियाँ		13
5.	तुलसी जयंती समारोह		23
6.	रामु नाम को कलपतरु	देवेन्द्र शर्मा	27
7.	राम की महाशक्ति हैं सिया	सरल शास्त्री	32
8.	अजय पर विजय एवं अमर की मृत्यु	मानस रत्न पं0 रामगोपाल तिवारी	35
9.	नाथ धरेउ नरतनु केहि हेतू	मानस मर्मज्ञ पं0 बैजूनाथजी महाराज	41
10.	अवसर पाइ बचन एक कहेऊँ	श्री रामवीर सिंह	46
11.	पैहहु सीतहि जनि पछिताहू	डॉ0 सहृदय नारायण उपाध्याय	49
12.	रिपुसूदन पद कमल नमामी	पं0 दिनेश चन्द्र शर्मा	55
13.	एहि महँ रुचिर सप्त सोपाना	श्रीमती राजवती देवी शर्मा	59
14.	सबरी देखि राम गृहँ आए	पं0 राजेश कुमार तिवारी	65
15.	राम कीन्ह चाहहिं सोइ होई	डॉ0 भगवानदास पटैरया	69
16.	नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्	श्री जगदीश प्रसाद शर्मा 'सरल'	73
17.	नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना	श्री विनोद शर्मा	81
18.	श्रीराम नाम चौपाई माला	ज्योति अरविन्द्र सैंतिया	85

क्रमांक	विषय	लेखक	पृष्ठ
19.	मन कामना सिद्धि नर पावा	श्रीमती ज्योत्सना प्रसाद	90
20.	बिनु सत्संग बिबेक न होई	वैद्य अच्युतकुमार त्रिपाठी	94
21.	भरतहि होइ न राजमदु	पं0 रामनरेश तिवारी	98
22.	हरि अनंत हरि कथा अनंता	श्रीमती रीता कश्यप	101
23.	जपहिं नामु जन आरत भारी	श्री सोमदत्त गुप्ता	105
24.	कामिहि नारि पिआरि जिमि	श्री रघुपति सिंह सिसौदिया	107
25.	मंत्रराजु नित जपहिं तुम्हारा	श्रीमती कुसुम पटैरया	110
26.	भरत सरिस को नाम सनेही	श्रीमती राजबाला शर्मा	114
27.	भए प्रगट कृपाला दीनदयाला	सुश्री प्रभा पांडेय	118
28.	अरुन पराग जलजु भरि नीकें	श्री रामजन्म सिंह	120
29.	रामकथा कलि कलुष बिभंजनि	श्री देवेन्द्र पांडेय	122
30.	बिनु संतोष न काम नसाहीं	श्री उमाकांत पांडेय	124
31.	समिति का वित्तीय वर्ष 2014–2015 का आय–व्यय विवरण		127
32.	श्रीरामचरितमानस के सिद्ध मन्त्र		129
33.	श्रीरामशलाका प्रश्नावली		135
34.	विक्रमी संवत् 2073 के व्रत, पर्व, त्यौहारों की सूची		139
35.	आरती एवं वन्दना		153
36.	श्रीरामचरितमानस पाठ के लिए आवश्यक सामग्री		160

विशेष : स्मारिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं।

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति (पंजीकृत)

स्थानीय कार्यालय : ए-447, सेक्टर-47, नोएडा-201 303

दूरभाष : 2571547

सदस्यों की सूची

क्र.सं.	नाम सदस्य	पता	दूरभाष	पद
1.	**पं0 दिनेश चन्द्र शर्मा**	**ए–447, सै0–47, नोएडा–201303**	**9811056467**	**अध्यक्ष**
2.	**डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी**	**1इ, वार्ड नं0 26, लक्ष्मीबाई रोड, देहरादून**	**09411714660**	**उपाध्यक्ष**
3.	**श्री देवेन्द्र सिंह अवाना**	**B 5/6, सामने C-4/106, सै0–31, नोएडा**	**9811602397**	"
4.	**डॉ0 भगवान दास पटैरया**	**डी–11, सै0–36, नोएडा**	**9899004263**	**महासचिव**
5.	**डॉ0 रविन्द्र कुमार शर्मा**	**593, ग्राम बिजवासन, नई दिल्ली**	**9911307799**	**सचिव**
6.	**श्री जे0के0 गुप्ता**	**सी–95, सै0–49, नोएडा**	**9810997834**	**कोषाध्यक्ष**
7.	**श्री लीलूराम वर्मा**	**सी–49, सै0–23, नोएडा**	**9312280743**	**कार्यकारी सदस्य**
8.	**श्री भिक्की लाल शर्मा**	**ए–105, सै0–20, नोएडा**	**9810836348**	"
9.	**श्री सूरजभान शर्मा**	**ए–141, सै0–20, नोएडा**	**8527132634**	"
10.	**श्री हुकमचन्द्र शर्मा**	**ग्राम निठारी, सै0–31, नोएडा**	**9213999744**	"
11.	**श्री विनोद शर्मा**	**ए–19, सै0–22, नोएडा**	**9891117721**	"
12.	**श्री सुभाषचन्द्र मित्तल**	**865, जोशी रोड, करोल बाग, दिल्ली**	**9210364442**	"
13.	**श्रीमती नीलम श्रीवास्तव**	**एम–126, सै0–25, नोएडा**	**8800439949**	"
14.	**श्री शम्भू दत्त शर्मा**	**जी–2/3, शताब्दी एन्कलेव सै0–49, नोएडा**	**9868101502**	"
15.	**श्री अश्विनी कुमार भारद्वाज**	**बी–365, सै0–92, नोएडा–201305**	**9999533891**	"
16.	डॉ0 मनोज कुमार पटैरया	25/3, सै0–1, पुष्प विहार, नई दिल्ली	9868114548	आजीवन सदस्य
17.	श्री लक्ष्मी नारायण	60, मातेश्वरी वार्ड नं0 11, नौ गाँव, (छतरपुर) म0प्र0	9893772149	"
18.	श्री कृष्ण कुमार मिश्रा	12/250, कोटेश्वर नगर, कोटा, जिला–रामपुर	9406379229	"
19.	श्री देवेन्द्र कुमार रावत,	266, वार्ड नं0 7, स्नेहल नगर, वर्धा (महाराष्ट्र)	9423645351	"
20.	श्री भगवानदास पाठक	शीतल डायमंड, ए.के. रोड, हीरानगर, सूरत	9909253797	"

क्र.सं.	नाम सदस्य	पता	दूरभाष	पद
21.	श्री रविशंकर चतुर्वेदी	शीतल डायमंड, ए.के. रोड, हीरानगर, सूरत	9945169080	आजीवन सदस्य
22.	श्री लीले सिंह प्रधान	ग्राम निठारी, सै0–31, नोएडा	9213664668	"
23.	श्री विशम्बर दयाल शर्मा	ग्राम निठारी, सै0–31, नोएडा	9289265996	"
24.	श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता	एफ–8, सै0–20, नोएडा	9810464009	"
25.	श्री इन्द्रजीत चौबे	एफ–13, सै0–20, नोएडा	9811323076	"
26.	श्री राधेश्याम शर्मा	ए–55, सै0–27, नोएडा	9999930102	"
27.	श्री मांगेराम भारद्वाज	ग्राम निठारी, सै0–31, नोएडा	9999232019	"
28.	श्री रामेश्वर दत्त शर्मा	ग्राम निठारी, सै0–31, नोएडा	9953508132	"
29.	श्री रणजीत सिंह विष्ट	एफ–110, सै–20, नोएडा	0120–2531182	"
30.	श्री भीम सिंह	मोती मैमोरियल, दुर्गा पार्क, पो0–वसुन्धरा ग्राम–दल्लूपुरा, दिल्ली–110096	9810181724	"
31.	श्रीमती कुसुम पटैरया	डी–11, सै0–36, नोएडा	9811201847	"
32.	श्री ए.के. सक्सेना	एच–329, बीटा–II, ग्रेटर नोएडा	9540274589	"
33.	श्री देबीचरन शर्मा	बी–109, सै0–22, नोएडा	9350859122	"
34.	वैद्य अच्युत कुमार त्रिपाठी	एच 129, सै0–41, नोएडा	9868943638	"
35.	श्री वेद प्रकाश बंसल	ए 33, सै0–19, नोएडा	9350732724	"
36.	श्री रघुनाथ प्रसाद शर्मा	बी–10A–7 B, सै0–34, नोएडा	9899797090	"
37.	श्री सीतश चन्द्र शर्मा	बी 170 B सैक्टर 26,नोएडा	8800969798	
38.	श्री सुरेन्दर कुमार ठक्कर	सी–623, सै0–19, नोएडा	9891445905	"
39.	श्री लाल मोहन चौधरी	ए–390, सै0–47, नोएडा	9899057335	"
40.	श्री अमर सिंह सेंगर	ए–162, सै0–20, नोएडा	0120–2440128	"
41.	श्री भू निधि शर्मा	डी–185, सै0–49, नोएडा	9871199809	"
42.	श्री श्रीपाल अवाना	ए–286, सै0–47, नोएडा	9210638386	"
43	श्री जगदीश प्रसाद शर्मा	116, होशियारपुर, सै0–51, नोएडा	9311384212	"
44	श्री यशपाल सिंह	बी–19, सै0–49, नोएडा	9810339398	"
45.	श्री सुरेन्द्र पाल शर्मा	226–ई, पॉकेट–1, मयूर विहार–1, नई दिल्ली–110091	9971430274	"
46.	श्रीमती मधुमालती	सी–623, सै0–19, नोएडा	9891707373	"
47.	श्री विद्याराम अवाना	एच–7, सै0–27, नोएडा	9891960087	"
48.	श्रीमती भारती चतुर्वेदी	बी–2/721, कैलाश धाम, सै0–50, नोएडा	9650990257	"

पाठकों के पत्र

उच्च कोटि की विचारमाला

श्रीरामचरितमानस सत्संग समिति की स्मारिका का 22वाँ वार्षिक अंक मैंने पढ़ा। मुझे ऐसा लगा कि स्मारिका उच्चकोटि की विचारमाला है। यदि प्रभु ने अवसर दिया तो मैं उस स्थान का जहाँ से यह प्रकाशित और विमोचित होती है, दर्शन करूँगा। इसमें प्रकाशित सभी लेख प्रभु प्रेमामृत से ओतप्रोत हैं।

डॉ0 सहृदय नारायण, उपाध्याय

ए–66, आवास विकास (नंदनपुरा) झाँसी (उ0प्र0) मो0 : 07860039496

सराहनीय प्रयास

श्रीरामचरितमानस सत्संग समिति द्वारा प्रकाशित स्मारिका एक अति सराहनीय प्रयास है। मैं समिति के सभी सदस्यों को, विशेषकर सम्पादक मंडल को साधुवाद ज्ञापित करता हूँ तथा ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि स्मारिका के रूप में यह प्रभु प्रेममय ज्ञान गंगा अविरल प्रवाहित होती रहे।

श्री राजेन्द्र कुमार C/o **श्री सूरजमल कुमावत** (ठेकेदार) मो0 : 09829492823

वार्ड नं0–5, मकान नं0 75, श्याम विहार कॉलोनी, स्टेशन रोड, चौयू, जिला जयपुर (राज0)

आध्यात्मिक अनुपम कृति

श्रीरामचरितमानस सत्संग समिति की स्मारिका प्राप्त कर हार्दिक आनंद की अनुभूति हुई। मेरे विचार से आध्यात्मिक जगत के लिए यह एक अनुपम कृति है। शनैः शनैः इसमें अवगाहन करूँगा तथा अपने ग्रन्थालय में संगृहीत कर जिज्ञासु सुधी स्वाध्यायी जनों को उपलब्ध कराऊँगा।

आचार्य श्री अवस्थी, वैदिक अध्यात्म चेतना मिशन

पिपराली रोड, सीकर (राजस्थान) – 332001 मो0 : 09636102254

स्मारिकाः गीता-रामायण की तरह पूजनीय

मैं विगत एक दशक से भी अधिक समय से श्रीरामचरिमानस सत्संग समिति, नोएडा द्वारा श्रीराम

जन्ममहोत्सव पर विमोचित वार्षिक स्मारिका को पढ़ता आ रहा हूँ। मैंने अनुभव किया है कि प्रति वर्ष इसमें प्रकाशित लेख उत्तरोत्तर उत्कृष्टता को प्राप्त कर रहे हैं। इसके 22वें अंक को मैंने आद्योपांत पढ़ा। सभी लेख मौलिक विचारधारा से ओतप्रोत हैं। कुछ लेखों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण झलकता है। समिति के सभी सदस्यों, विशेषकर जो इसके सम्पादन से जुड़े हैं, निश्चित रूप से साधुवाद के पात्र हैं जो श्रीरामचरितमानस के गूढ़ रहस्यों को सरल भाषा शैली में सुलभ कराने का प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं। मैंने इस अंक की कुछ प्रतियाँ समिति कार्यालय से मंगाई थीं, जिन्हें मेरे मित्रगण बड़े चाव से पढ़ रहे हैं। मेरा सुझाव है कि इस कल्याणकारी पत्रिका का सरकुलेशन और बढ़ाया जाये। मैंने यह भी अनुभव किया है कि यह स्मारिका अन्य पत्र–पत्रिकाओं से बिल्कुल भिन्न है। **सामान्यतया लोग पत्रिकाओं को पढ़कर रद्दी में बेच देते हैं, पर मैंने देखा है कि लोग इसे रामायण-गीता की तरह पूजनीय मानकर अपने घर के पूजा स्थान में सम्मानपूर्वक रखते हैं।**

शिव कुमार शर्मा, मो0 : 09711003051

MIG-776, मयूर वन कॉलोनी, ए.बी. रोड, मुरैना (म0प्र0)–476001

भारतीय संस्कृति का उन्नयन

मैं विगत दो वर्षों से स्मारिका से सम्बद्ध हूँ। बहुत ही स्पष्ट शब्दों से यह कहने को बाध्य हूँ कि समिति–सदस्य कोटिशः धन्यवाद के पात्र हैं, जो इस मंगलपूर्ण योजना को सहृदयता तथा सफलता के साथ आगे बढ़ा रहे हैं। सबसे महत्वपूर्ण तो यह लगा कि स्मारिका भारतीय संस्कृति के मूल्यों का उन्नयन करते हुए परम पूज्य गोस्वामी तुलसीदासकृत श्रीरामचरितमानस के तथाकथित विवादित विषयों का समाधान भी पूर्णतया पुरजोर विचारों से सम्पन्न करती है। गोस्वामी तुलसीदासजी का ज्ञान, गरिमा तथा प्रभु प्रेम अलौकिक है। उनकी काव्य रचना के बारे में **एक विदेशी आलोचक ग्रीयर्सन महोदय ने कहा है - "दूसरे मेरे कलम के अन्दर आ सकते हैं, परन्तु तुलसी! तुम स्वतंत्र हो। आपके ऊपर राम कृपा अपार थी।"**

उमाकान्त पाण्डेय, मो0 : 09335022837

आदर्श मार्ग, दिलदार नगर, जनपद–गाजीपुर (उ0प्र0)

सुन्दर सराहनीय स्मारिका

समिति द्वारा स्मारिका का प्रकाशन बहुत ही सराहनीय है, विशेषकर इस भौतिकवाद के समय में। स्मारिका बहुत ही सुन्दर है। मेरा सुझाव है कि इसका प्रसार और अधिक बढ़ाया जाए। पाठकों से प्राप्त सहयोग राशि को भी प्रकाशित किया जाए।

डॉ0 प्रमोद पालीवाल, मो0 : 9896531066

म0 नं0 44, सैक्टर–2, रोहतक (हरियाणा) – 12400

लेख रामभक्ति से ओतप्रोत

यह मेरा सौभाग्य है कि स्मारिका का अंक 22 वर्ष (2015–2016) मुझे प्राप्त हुआ। यह बहुत ही सुन्दर एवं भावपूर्ण पत्रिका है। इसका प्रत्येक लेख राम भक्ति से ओतप्रोत है, विशेषकर 'सरनागत बच्छल भगवाना' लेख अति प्रशंसनीय है, क्योंकि भगवान की शरण में गए बिना कल्याण संभव नहीं है। मैं कामना करता हूँ कि स्मारिका भविष्य में भी उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर अग्रसित होती रहे।

डॉ0 विनोद कुमार शर्मा (पट्टोजी),

ब्रज–शारदा नर्सिंग होम, 4, साउथ अर्जुन नगर, आगरा।

आत्मिक सुख प्राप्त हुआ

मैंने स्मारिका के सभी लेखों को पढ़ा। इससे मुझे आत्मिक सुख प्राप्त हुआ। इससे मुझे ज्ञानार्जन भी हुआ। इस हेतु मैं समिति का आभारी हूँ।

टी0 एल0 विश्वकर्मा,

ए–4/9, अनुजा विलेज, रतनपुर सड़क, होशंगाबाद रोड, पो0 मिसरोद, भोपाल, पिन – 462047

ज्ञानवर्धक समाजोपयोगी पत्रिका

स्मारिका का 22वाँ अंक मैंने आद्योपांत पढ़ा। इसके सभी लेख ज्ञानवर्धक हैं। इनमें वर्णित आचरण को व्यवहार में लाने से निश्चित रूप से समाज का नैतिक उत्थान होगा, अतः यह समाज के हर आयु वर्ग के लिए उपयोगी पत्रिका है।

जगत प्रकाश पालीवाल, मो0 : 9911242340

DB - 55D, LIG Plats, हरी नगर, नई दिल्ली – 110064

सहयोग राशि भेजने वालों को साधुवाद

स्मारिका प्रकाशनार्थ हमें इस समिति के सदस्यो के अतिरिक्त दिल्ली, रोहतक (हरियाणा), भीलवाड़ा, कोटा, सीकर, जैसलमेर, जूही और जयपुर (राजस्थान), चंडीगढ़, कैमूर (बिहार), चंद्रपुर (महाराष्ट्र), भोपाल, नरसिंहपुर, मुरैना, (मध्य प्रदेश), सुरेन्द्र नगर (गुजरात), कटक (उड़ीसा), गाजीपुर, मेरठ, एवं मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश), एरोड (तमिलनाडु), भाटापारा (छत्तीसगढ़) के पाठकों से सहयोग राशि प्राप्त हुई है। उनका पुण्यलाभ न घटे इस हेतु केवल उनका नाम–पता प्रकाशित किया गया है। उनके द्वारा भेजी गई राशि प्रकाशित नहीं की गई है। हम इन सभी पाठकों को साधुवाद ज्ञापित करते हुए आशान्वित हैं कि भविष्य में भी स्मारिका के प्रचार–प्रसार हेतु इसी तरह सहयोग करके हमारा उत्साह बढ़ाते रहेंगे।

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति (पंजीकृत)

स्थानीय कार्यालय : ए-447, सेक्टर-47, नोएडा-201 301 दूरभाष : 2571547

स्मारिका प्रकाशनार्थ सहयोग राशि भेजने वाले पाठक

क्र.सं.	नाम व पता
1.	डॉ0 प्रमोद पालीवाल, मकान नं॰ 44 सैक्टर– 3, रोहतक (हरियाणा) 124001
2.	डॉ0सहृदयनारायण, उपाध्याय, A 66 आवास विकास कॉलोनी, नंदनपुरा झाँसी (उ0प्र0)
3.	श्री विक्रम जी चौधरी, बकसी बाजार, कटक (उड़ीसा) 753001
4.	श्री एम.एस. गुप्ता, 28, समर गार्डन कॉलोनी, लखनऊ (उ0 प्र0)
5.	श्री ओमप्रकाश शर्मा, 4-M–47, दादाबाड़ी विस्तार योजना कोटा (राजस्थान) 324009
6.	श्री जुगल किशोर शर्मा, Kuchana, Q.A/83 चंद्रपुर (महाराष्ट्र) 442503
7.	श्री आर.सी. महात्मा, बड़े मंदिर के पास, भीलवाड़ा (राजस्थान) 3118011
8.	श्री गोवर्धन लाल पारासर, Dholi Manari भीलवाड़ा (राजस्थान) 311804
9.	श्री ओम सिंह, हाथी मथ्था, भीलवाड़ा (राजस्थान) 311804
10.	श्री मदन लाल झानवार, राजा जी का Kareda भीलवाड़ा (राजस्थान) 311804
11.	श्री टी.एल. विश्वकर्मा, HIG-A/49, अनुजा बिलेज, भोपाल (म0 प्र0) 462047
12.	श्री जी.जी. पधारिआ, 35, श्रद्धा सोसाइटी, सुरेन्द्र नगर (गुजरात) 363035
13.	श्री भोपाल सिंह, निदेशक, केन्द्रीय जल आयोग, नई दिल्ली – 110066
14.	श्री रतनलाल अग्रवाल, Inside Surana Building, Opp. Vikas Jewelleri, M.I. Road, जयपुर, राजस्थान–302001
15.	श्री राजेन्द्र पाल, 29 B, सैक्टर–30, CHD चंड़ीगढ़
16.	श्री सुदर्शन सिंह, जनता जाँच केन्द्र, जी0टी0 रोड, कैमूर (बिहार)
17.	श्री ओम सिंह, राजा जी का करेडा, भीलवाड़ा (राजस्थान) 311804
18.	श्री बनवारी लाल गुप्ता, लाल कोठी, टोंक रोड, कोटा (राजस्थान) 302015
19.	आचार्य श्री अवस्थीजी, पिपराली रोड, सीकर, राजस्थान–332001
20.	डॉ0 स्वदेश शर्मा, पो0 करप गाँव, जि0 नरसिंहपुर (म0प्र0) 487221

श्रीराम-जन्म महोत्सव की झलकियाँ

आधुनिक युग में भौतिक प्रगति अपनी चरम सीमा पर है। परिणाम स्वरूप भोग–विलास की सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हो रही है। इसे प्राप्त करने की होड़ लगी है, जिसकी आँधी में त्यागी–वैरागी कहे जाने वाले और संतों का जामा पहने लोग तक ढह रहे हैं, तब ऐसे समय में सामान्य जन की तो बात ही क्या है? कैसे भी हो सुख–सुविधाएं पाने के लिए धन चाहिए, चाहे उसे प्राप्त करने का मार्ग कैसा भी हो। ऐसी विषम स्थिति में अखिल ब्रह्माण्ड नायक भगवान श्रीराम का मर्यादा पुरुषोत्तम स्वरूप और उनकी मर्यादाओं का पालन करने की प्रेरणा जन सामान्य तक पहुँचाई जाए तो मानव समाज का अवश्य ही कल्याण होगा। इसी उद्देश्य से श्रीरामचरितमानस सत्संग समिति का सन् 1990 में गठन हुआ था और सन् 1991 से प्रति वर्ष श्रीराम जन्ममहोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। पावन बेला में श्रीरामकथा के माध्यम से जीवन में अनुकरणीय आदर्शों को समझाया जाता है तथा एक स्मारिका का विमोचन किया जाता है। स्मारिका में श्रीरामचरितमानस पर आधारित जीवन में परमार्थ पथ पर अग्रसर होने हेतु प्रेरणादायक लेख प्रकाशित किए जाते हैं। इस समिति द्वारा आयोजित होने वाले श्रीराम जन्ममहोत्सव की पच्चीसवीं वर्षगाँठ अर्थात् रजत जयंती वर्ष पर विशेष आयोजन स्वरूप 26 से 28 मार्च 2015 तक, 'त्रिदिवसीय' श्रीरामकथा का आयोजन हुआ और 28 मार्च को बड़े हर्षोल्लास सहित श्रीराम जन्ममहोत्सव मनाया गया। इस पावन बेला में श्रीरामकथा श्रवण कराने हेतु चित्रकूट धाम से पधारे मानस रत्न आचार्य पंडित रामगोपाल तिवारीजी एवं मध्य प्रदेश के रायसेन जिला से पधारीं मानस माधुरी सुश्री अभिलाषाजी के प्रवचनों के कुछ अंश पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत हैं।

दिनांक 26 मार्च 2015 को महाराजा अग्रसेन भवन, सैक्टर–32, नोएडा में प्रातः 10 बजे श्रीगणेश पूजन तथा भजन–कीर्तन से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। श्रीरामकथा का महत्व रेखांकित करते हुए सुश्री अभिलाषाजी ने श्रीरामचरितमानस की तीन कथाओं का वर्णन किया, जिनके अनुसार श्रीरामजी के दर्शन करने पर भी जो उनको नहीं जान पाए वे श्रीरामकथा सुनने–समझने पर श्रीरामजी को, उनके अखिल ब्रह्माण्डनायक स्वरूप को समझकर श्रीरामजी के दर्शन का आनंद प्राप्त करके अपना जीवन धन्य कर सके और सबसे दुर्लभ श्रीराम भक्ति प्राप्त कर पाए। ये तीन कथाएँ इस प्रकार से हैं –

(क) एक बार भगवान शिव, सतीजी के साथ कुंभज ऋषि के आश्रम में श्रीराम कथा श्रवण करने गए। वहाँ पर शिव–सती का बड़ा सम्मान हुआ जिसे देखकर सतीजी के मन में संदेह हो गया कि जो वक्ता हमारा इतना सम्मान कर रहा है वह भला क्या राम कथा सुनाएगा, क्योंकि ये कुंभज अर्थात् घड़ा के प्रतीक

हैं, जबकि शिवजी सिंधु (सागर) के; **'चरित सिंधु गिरिजा रमन'**। बस इतना संदेह होते ही उन्होंने श्रीरामकथा श्रद्धापूर्वक नहीं सुनी। इसका परिणाम यह हुआ कि जब शिव–सती कथा श्रवणोपरान्त वापिस कैलाश जा रहे थे, उसी समय श्रीरामजी सीता–हरण के पश्चात विरह–लीला कर रहे थे, जिसे देखकर सतीजी को संदेह हो गया। शिवजी ने उन्हें बहुत समझाया कि ये वही अखिल ब्रह्माण्डनायक श्रीराम हैं जिनकी कथा कुंभज ऋषि ने हमें सुनाई है –

जासु कथा कुंभज रिषि गाई। भगति जासु मैं मुनिहि सुनाई।।
सोइ मम इष्टदेव रघुबीरा। सेवत जाहि सदा मुनि धीरा।।

(1 / 51 / 7–8)

बहुत प्रकार समझाने पर भी जब सती का संदेह दूर नहीं हुआ, तब शिवजी ने उन्हें परीक्षा लेने की सलाह दी। जब वे सीताजी का वेश धारण करके श्रीरामजी के मार्ग में आगे खड़ी हो गईं, तब श्रीरामजी ने उनसे पूछा –

जोरि पानि प्रभु कीन्ह प्रनामू। पिता समेत लीन्ह निज नामू।।
कहेउ बहोरि कहाँ बृषकेतू। बिपिन अकेलि फिरहु केहि हेतू।।

(1 / 53 / 7–8)

श्रीरामजी के इस प्रकार के वचन सुनकर सतीजी को बहुत संकोच हुआ। वे समझ गईं कि ये साधारण राजकुमार नहीं हैं। श्रीरामजी ने उन्हें पूर्णतया आश्वस्त करने हेतु अपना और प्रभाव भी दिखाया। वही सतीजी जब पार्वती के रूप में जन्म लेती हैं और शिवजी से विवाहोपरान्त उन्हें प्रसन्न मुद्रा में देखकर इस प्रकार प्रश्न करती हैं।

प्रथम सो कारन कहहु बिचारी। निर्गुन ब्रह्म सगुन बपु धारी।।

(1 / 110 / 4)

सतीजी का संदेह था कि अखिल ब्रह्माण्ड नायक, कण–कण में व्याप्त ब्रह्म नर शरीर धारण ही नहीं कर सकता है। पर उन्होंने परीक्षोपरान्त श्रीरामजी का प्रभाव देख लिया था, अतः उन्हें विश्वास हो गया था कि निर्गुण ब्रह्म सगुण हो सकता है। पार्वती रूप में वे अब यह प्रश्न करती हैं कि किस कारण से निर्गुण ब्रह्म ने नर शरीर धारण किया। उनके सभी प्रश्नों के उत्तर में शिवजी ने उन्हें सम्पूर्ण श्रीरामकथा सुनाई, जिसे सुनकर उनका मोह–संदेह सब कुछ दूर हो गया। उन्हें श्रीराम का स्वरूप समझ में आ गया। वे कहती हैं।

नाथ कृपाँ मम गत संदेहा। राम चरन उपजेउ नव नेहा।।

(7 / 129 / 8)

(ख) किष्किन्धा काण्ड की कथा में श्रीहनुमानजी विप्र वेश धारण करके श्रीराम—लक्ष्मण के सामने खड़े हो जाते हैं और उनसे पूछते हैं —

को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा। छत्री रूप फिरहु बन बीरा।।

(4 / 1 / 7)

भगवान श्रीरामजी सामने खड़े हैं, पर श्री हनुमानजी पहचान नहीं पाए। श्रीराम कथा के माध्यम से ही वे भगवान को पहचान सके। उनके प्रश्न के उत्तर में श्रीरामजी अपनी कथा स्वयं इस प्रकार से सुनाते हैं —

कोसलेस दसरथ के जाए। हम पितु बचन मानि बन आए।।
नाम राम लछिमन दोउ भाई। संग नारि सुकुमारि सुहाई।।
इहाँ हरी निसिचर बैदेही। बिप्र फिरहिं हम खोजत तेही।।
आपन चरित कहा हम गाई। कहहु बिप्र निज कथा बुझाई।।

(4 / 2 / 1—4)

इस प्रकार के वचन सुनकर श्रीहनुमानजी ने भगवान श्रीराम को पहचान लिया अर्थात श्रीराम कथा सुनने पर ही भगवान को पहचान सके और तुरंत चरणों में गिर पड़े तथा अपने असली रूप में आ गए —

प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना। सो सुख उमा जाइ नहिं बरना।।

(4 / 2 / 5)

(ग) जब मेघनाद ने रणभूमि में श्रीरामजी को नागपाश में बाँध लिया था, तब नारदजी ने गरुड़जी को भेजकर वह बंधन कटवाया। उस समय गरुड़जी को मोह हो गया। यद्यपि उन्होंने श्रीरामजी का साक्षात दर्शन किया, पर वे समझ नहीं पाए। श्रीरामकथा के माध्यम से ही वे श्रीरामजी के स्वरूप को जान सके। श्रीगरुड़जी ने सर्वप्रथम नारदजी से पूछा कि जिनके नाम स्मरण से प्राणी भव बंधन काटकर संसार सागर से तर जाता है, वही ईश्वर एक निशाचर द्वारा कैसे बाँधा जा सकता है। नारदजी ने उन्हें ब्रह्माजी के पास जाने को कहा और ब्रह्माजी ने शिवजी के पास भेजा। शिवजी ने उन्हें इस प्रकार समझाया —

मिलेहु गरुड़ मारग महँ मोही। कवन भाँति समुझावौं तोही।।
तबहिं होइ सब संसय भंगा। जब बहु काल करिअ सतसंगा।।

(7 / 61 / 3—4)

इस प्रकार से समझाते हुए शिवजी ने कहा कि श्रीराम कथा सुनने के पश्चात ही तुम्हारा मोह दूर होगा। मैं तुम्हें ऐसे स्थान पर भेज रहा हूँ जहाँ नित्य हरि कथा होती है —

नित हरि कथा होत जहँ भाई। पठवउँ तहाँ सुनहु तुम्ह जाई।।

जाइहि सुनत सकल संदेहा। राम चरन होइहि अति नेहा।।

(7 / 61 / 7–8)

तदुपरान्त गरुड़जी नीलगिरि पर्वत पर जाते हैं, जहाँ पर काकभुसुंडिजी का निवास है और वे नित हरि कथा कहते हैं। उनसे सम्पूर्ण श्रीरामकथा सुनने के बाद गरुड़जी का संदेह दूर हो गया और वे कहते हैं –

गयउ मोर संदेह सुनेउँ सकल रघुपति चरित।
भयउ राम पद नेह तव प्रसाद बायस तिलक।।

(7 / 68क)

इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि श्रीरामकथा ही एकमात्र साधन है श्रीरामजी को जानने का, समझने का और उनका प्रेम प्राप्त करने का।

भवानी शिवा को श्रीरामकथा सुनाते हुए उनके प्रथम प्रश्न के उत्तर में भगवान शिव ने बताया कि श्रीराम जन्म का यही एक कारण है, ऐसा नहीं कहा जा सकता है।

हरि अवतार हेतु जेहि होई। इदमित्थं कहि जाइ न सोई।।

(1 / 121 / 2)

राम जनम के हेतु अनेका। परम बिचित्र एक तें एका।।
जनम एक दुइ कहउँ बखानी। सावधान सुनु सुमति भवानी।।

(1 / 122 / 2–3)

हरि के दो द्वारपाल जय और विजय थे जो विप्र शापवश रावण–कुंभकरण हुए। उनके संहार हेतु एक बार हरि–अवतार हुआ। जलंधर की पतिव्रता पत्नी के बल पर उसे संग्राम में कोई नहीं जीत सका। इससे उसका अत्याचार बहुत बढ़ गया। तब हरि ने छल करके उसकी पत्नी का पातिव्रत धर्म भंग किया। जलंधर संग्राम में मारा गया और वह अगले जन्म में रावण के रूप में आया, जिसे मारने के लिए परम सती बृंदा का शाप सत्य करने हेतु हरि ने अवतार लिया। एक बार नारद के शाप से हरि को अवतार लेना पड़ा। यह सुनकर गिरिजा चकित हुईं और बोलीं –

गिरिजा चकित भईं सुनि बानी। नारद बिष्नुभगत पुनि ग्यानी।।
कारन कवन श्राप मुनि दीन्हा। का अपराध रमापति कीन्हा।।

(1 / 124 / 6–7)

शिवजी ने समझाया कि भक्त के हितों का ध्यान रखते हुए ईश्वर वही करते हैं, जो वे चाहते हैं, फिर इसमें कोई ज्ञानी है या मूढ़, इसका कोई महत्व नहीं होता है –

बोले बिहसि महेस तब ग्यानी मूढ़ न कोइ।
जेहि जस रघुपति करहिं जब सो तस तेहि छन होइ।।

(1 / 124 क)

शिवजी ने विस्तार से नारद मोह की कथा सुनाई और बताया कि यदि 'काम विजय' का श्रेय नारदजी अपने ऊपर न लेते तो उन्हें अभिमान न होता और भगवान को वह लीला न करनी पड़ती,जिसके कारण क्रोधवश नारदजी ने श्रीहरि को शापित किया। इस कथा में यह विचारणीय तथ्य है कि जैसे किसी की थाली में भोजनार्थ अति गरिष्ठ पदार्थ आ जाएँ और वह पूरा–पूरा स्वयं ग्रहण कर ले तो अपच तो हो ही जाएगा। पर यदि वह प्रभु को भोग लगाकर उसका वितरण करके ग्रहण करे तो अपच नहीं होगा। इसी प्रकार अपनी सफलता के श्रेय का वितरण करने से अभिमान नहीं होगा। श्रीरामजी ने रावण विजय का श्रेय गुरु वशिष्ठजी और वानर–भालुओं को देकर हमें यह शिक्षा दी है।

गुर बसिष्ट कुलपूज्य हमारे। इन्ह की कृपाँ दनुज रन मारे।।
ए सब सखा सुनहु मुनि मेरे। भए समर सागर कहँ बेरे।।
मम हित लागि जन्म इन्ह हारे। भरतहु ते मोहि अधिक पिआरे।।

(7 / 8 / 6–8)

पर नारदजी से यह भूल हो गई कि उन्होंने काम विजय का पूरा का पूरा श्रेय स्वयं को दिया, जबकि हरि–स्मरण के कारण ही उनका एक स्थान पर दो घड़ी से ज्यादा न ठहर सकने का शाप बाधित हुआ। जिससे उनकी समाधि लग गई। कामदेव के आक्रमण के समय भी श्रीहरि ने ही उनकी रक्षा की।

सुमिरत हरिहि श्राप गति बाधी। सहज बिमल मन लागि समाधी।

(1 / 125 / 4)

सीम कि चाँपि सकइ कोउ तासू। बड़ रखवार रमापति जासू।।

(1 / 126 / 8)

चित्रकूट धाम से पधारे मानसरत्न आचार्य पंडित रामगोपाल तिवारीजी ने इसी प्रसंग को आगे बढ़ाते हुए बताया कि मुनि भरद्वाजजी ने श्रीरामजी को साक्षात देखा था। श्रीरामजी ने एक रात्रि उनके आश्रम में भी विश्राम किया था, पर फिर भी वे उनको तत्वतः नहीं समझ सके, अतः वे याज्ञवल्क्यजी से प्रश्न करते हैं।

रामु कवन प्रभु पूछउँ तोही। कहिअ बुझाइ कृपानिधि मोही।।

(1 / 46 / 6)

इसके उत्तर में याज्ञवल्क्यजी कहते हैं कि तुम मन–कर्म–वचन से श्रीराम भक्त हो। मैं तुम्हारी चतुराई समझ गया कि अब तुम श्रीरामजी के गूढ़ रहस्यों को सुनना चाहते हो, इसी कारण प्रश्न ऐसे किया है, जैसे अत्यंत मूर्ख हो।

रामभगत तुम्ह मन क्रम बानी। चतुराई तुम्हारि मैं जानी।।
चाहहु सुनै राम गुन गूढ़ा। कीन्हिहु प्रस्न मनहुँ अति मूढ़ा।।

(1 / 47 / 2–3)

भगवान के नाम का प्रभाव निर्गुण–निराकार ब्रह्म और सगुण–साकार ब्रह्म दोनों से अधिक है और 'रामकथा' का महत्व उससे भी अधिक है। जब रावण ने सीताजी का हरण किया, तब वे 'राम–राम' पुकार रही थीं। यह तथ्य सुग्रीवजी ने श्रीरामजी के सम्मुख इस प्रकार प्रकट किया –

राम राम हा राम पुकारी। हमहि देखि दीन्हेउ पट डारी॥

(4/5/5)

इस प्रकार 'राम–राम' पुकारने पर भी सीताजी की पीड़ा कम नहीं हुई, पर जब श्रीहनुमानजी ने लंका की अशोक वाटिका में छिपकर सीताजी को श्रीराम कथा सुनाई, तब श्रीराम गुणगान सुनते ही उनका दुःख दूर हो गया –

रामचंद्र गुन बरनैं लागा। सुनतहिं सीता कर दुख भागा॥

(5/13/5)

भरद्वाजजी ने श्रीरामकथा सुनने की विनती की थी, पर याज्ञवल्क्यजी ने उन्हें 'शिव कथा' यह कहकर सुनाई कि ऐसा ही प्रश्न पार्वतीजी ने शिवजी से किया था, जिसके उत्तर में उन्होंने उनको श्रीरामचरित सुनाया। शिव कथा सुनने से मुनि भरद्वाजजी प्रेमानंद में डूब गए। वह दृश्य देखकर मुनि याज्ञवल्क्यजी ने कहा कि अब तुम श्रीराम कथा सुनने के अधिकारी हो –

संभु चरित सुनि सरस सुहावा। भरद्वाज मुनि अति सुखु पावा॥
बहु लालसा कथा पर बाढ़ी। नयनन्हि नीरु रोमावलि ठाढ़ी॥

(1/104/1–2)

इस प्रसंग से यह सूत्र निकलता है कि श्रीरामकथा श्रवण करने के अधिकारी वे ही हो सकते हैं, जिन्हें शिव चरित्र भाता हो। शिवजी विश्वास के प्रतीक हैं, अतः ईश्वर में दृढ़ विश्वास होने पर ही कथा श्रवण की पात्रता प्राप्त होती है। पार्वतीजी श्रद्धा की प्रतीक हैं, अतः जब तक श्रद्धा नहीं होगी, तब तक श्रीरामकथा समझ में नहीं आएगी, क्योंकि गोस्वामी तुलसीदासजी इस संदर्भ में काकभुसुंडिजी के माध्यम से इस प्रकार से वर्णन करते हैं –

निर्गुन रूप सुलभ अति सगुन जान नहिं कोइ।
सुगम अगम नाना चरित सुनि मुनि मन भ्रम होइ॥

(7/73 ख)

पार्वतीजी के श्रीरामजन्म संबंधी प्रश्न के उत्तर में शिवजी कहते हैं कि ब्रह्म का सगुण साकार रूप में आना किस विशेष कारण से होता है, कहा नहीं जा सकता है, पर जैसा मैंने काकभुसुंडिजी से सुना है वह कथा मैं तुम्हें सुनाता हूँ। यह सुनकर पार्वतीजी आश्चर्य करती हैं कि भला एक कौआ क्या आपसे भी अधिक बुद्धिमान हो सकता है। इस पर शिवजी कहते हैं कि वह संवाद मैं बाद में कहूँगा, पहिले तुम श्रीराम जन्म

का कारण श्रवण करो –

सुनु सुभ कथा भवानि रामचरितमानस बिमल।
कहा भुसुंडि बखानि सुना बिहग नायक गरुड़॥
सो संबाद उदार जेहि बिधि भा आगें कहब।
सुनहु राम अवतार चरित परम सुंदर अनघ॥

(1 / 120 क, ख)

सम्पूर्ण श्रीरामचरित सुनाने के पश्चात भी शिवजी यही कहते हैं कि हे पार्वती! मैंने तुमको वही कथा सुनाई है, जो काकभुसुंडिजी ने गरुड़जी को सुनाई थी –

उमा कहिउँ सब कथा सुहाई। जो भुसुंडि खगपतिहि सुनाई॥

(7 / 52 / 6)

इस प्रसंग से यह शिक्षा मिलती है कि वक्ता चाहे किसी भी स्तर का हो उनसे श्रद्धा–विश्वासपूर्वक श्रीरामकथा श्रवण करनी चाहिए।

राजा भानुप्रताप ने चक्रवर्ती सम्राट बनने के पश्चात अपनी प्रजा का विधिवत पालन किया और अगणित यज्ञ कराए, पर मन में किसी प्रकार की इच्छा नहीं की –

जहँ लगि कहे पुरान श्रुति एक एक सब जाग।
बार सहस्र सहस्र नृप किए सहित अनुराग॥

(1 / 155)

हृदयँ न कछु फल अनुसंधाना। भूप बिबेकी परम सुजाना॥
करइ जे धरम करम मन बानी। बासुदेव अर्पित नृप ग्यानी॥

(1 / 156 / 1–2)

वही भानुप्रताप जब कपटी मुनि के सम्मुख जाते हैं, तब उनकी अंदर छिपी हुई कामना जाग्रत हो जाती है। यह ठीक उसी प्रकार से है, जैसे किसी के घर कोई अतिथि रात्रि के समय आए और उनसे भोजन करने का आग्रह किया जाए और वे मना कर दें, हालांकि वे भूखे होंगे। वही अतिथि भूख की तीव्रता से रात्रि में चुपके से रसोईघर में जाते हैं कि क्षुधा शांति हेतु कुछ तो मिल ही जाएगा। वे बड़ी सावधानी से कार्य करते हैं, पर डिब्बे से हाथ लगाते ही कई बर्तन नीचे गिर जाते हैं, जिनकी ध्वनि से घरवाले जाग जाते हैं और रसोईघर का दृश्य देखकर हैरान हो जाते हैं। अतिथि को बहुत शर्म आती है। यही हाल हुआ चक्रवर्ती सम्राट भानुप्रताप का। वे कपटी मुनि से यह वरदान मांगते हैं –

जरा मरन दुख रहित तनु समर जितै जनि कोउ।
एकछत्र रिपुहीन महि राज कलप सत होउ॥

(1 / 164)

ब्राह्मणों के शाप से भानुप्रताप का जन्म पुनीत पुलस्त्य ऋषि के कुल में तो हुआ, पर उसकी राक्षसी प्रवृत्ति हुई। उग्र तप करने पर जब ब्रह्माजी ने वरदान माँगने को कहा तब भी उसने पूर्व जन्म की कामना के अनुसार ही अमर होने का वरदान माँगा। ब्रह्माजी ने कहा कि अमर तो कोई नहीं हो सकता, पर तुम अपनी मृत्यु को चुन सकते हो कि कैसे मरोगे। रावण ने विचार किया कि मनुष्य और वानर तो हम राक्षसों के भोजन हैं, अतः उसने यह वर माँगा –

हम काहू के मरहिं न मारें। बानर मनुज जाति दुइ बारें॥

(1 / 177 / 4)

राजा भानुप्रताप ने विंध्याचल की यात्रा की और श्रीरामजी ने भी वनवास काल में वह मार्ग अपनाया। भानुप्रताप की वह यात्रा रावण जन्म का कारण बनी और श्रीरामजी की विंध्याचल यात्रा रावण वध का कारण बनी। श्रीरामचरितमानस के अनुसार –

बिंध्याचल गभीर बन गयऊ। मृग पुनीत बहु मारत भयऊ॥

(1 / 156 / 4)

बिंधि मुदित मन सुख न समाई। श्रम बिनु बिपुल बड़ाई पाई॥

(2 / 138 / 8)

भानुप्रताप की कथा से एक सूत्र यह भी प्राप्त होता है कि हमें अपनी वाणी और अपने अंदर की भावना में एकरूपता रखनी चाहिए। सांसारिक प्राणियों से तो हम यह दुराव कर भी सकते हैं, पर अन्तर्यामी भगवान के समक्ष तो पकड़े ही जाएंगे। कुछ लोग बड़े भावपूर्वक श्रीरामजी से यह प्रार्थना करते हैं –

अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहउँ निरबान।
जनम जनम रति राम पद यह बरदानु न आन॥

(2 / 204)

प्रार्थना करते हैं कि केवल भगवत्प्रेम चाहिए और यदि व्यापार में थोड़ी सी हानि हो गई तो सोचते हैं कि हम इतना दान पुण्य करते हैं, भगवान के शरणागत हैं फिर भी हमारे ही साथ ऐसा क्यों हो रहा है? **'अरथ न धरम न काम रुचि'** प्रार्थना भरतजी ने प्रयागराज से की थी। जब हमारा मन भरतजी की तरह सांसारिक द्वन्दों से ऊपर उठ जाए तभी वह प्रार्थना सफल होगी अन्यथा राजा भानुप्रताप की तरह दुर्दशा हो सकती है।

एक प्रकार से अमरत्व जैसा वरदान पाकर रावण विश्व विजेता बन गया और विभिन्न प्रकार के अत्याचारों में संलग्न हो गया। श्रीरामचरितमानस के अनुसार –

किंनर सिद्ध मनुज सुर नागा। हठि सबही के पंथहिं लागा॥
ब्रह्मसृष्टि जहँ लगि तनुधारी। दसमुख बसबर्ती नर नारी॥

(1 / 182 / 11–12)

रावण के अत्याचार से दुखित हो पृथ्वी धेनु रूप में तथा सभी मुनि, देवगण ब्रह्माजी के पास जाकर अपना दुःख सुनाते हैं, पर ब्रह्माजी भी रावण के अत्याचार को रोकने में अपने को असमर्थ बताते हैं, तब सभी अविनाशी ब्रह्म से अपना दुखड़ा सुनाने का विचार करते हैं, पर सोचते हैं कि वे कहाँ मिलेंगे। कोई कहता है कि वे बैकुंठ में रहते हैं तो कोई कहता है कि वे क्षीरसागर में होंगे –

बैठे सुर सब करहिं बिचारा। कहँ पाइअ प्रभु करिअ पुकारा।।
पुर बैकंठ जान कह कोई। कोउ कह पयनिधि बस प्रभु सोई।।

(1 / 185 / 1–2)

शिवजी कहते हैं कि हे पार्वती! मैं भी उस समाज के साथ था और अवसर पाकर मैंने कहा कि वह अविनाशी प्रभु तो सर्वत्र व्याप्त हैं और कण–कण की खबर रखता है। यह सुनकर देवगण निराश हो गए क्योंकि उस अविनाशी प्रभु को रावण के अत्याचारों का ज्ञान है फिर भी वह कुछ क्यों नहीं करता। तब मैंने समझाया कि उस अविनाशी, कण–कण में व्याप्त प्रभु को प्रकट करना होगा तभी वह हमारी सहायता कर सकेगा। उसे प्रकट करने का उपाय यह है –

हरि ब्यापक सर्बत्र समाना। प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना।।
देस काल दिसि बिदिसहु माहीं। कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं।।
अग जगमय सब रहित बिरागी। प्रेम तें प्रभु प्रगटइ जिमि आगी।।

(1 / 185 / 5–8)

यह जानकर कि अविनाशी प्रभु प्रेम से प्रकट होते हैं, सभी मुनि–देवगण ब्रह्माजी के साथ मिलकर सावधान होकर प्रेमपूर्वक नेत्रों से प्रेमाश्रु बहाते हुए इस प्रकार से प्रार्थना करते हैं –

जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंता।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रिय कंता।।

(1 / 186 / छंद)

सभी को भयभीत जानकर उनका शोक–संदेह दूर करते हुए आकाशवाणी हुई कि मैं कौशलपुरी (अयोध्या) में राजा दशरथ के घर नर रूप में प्रकट होऊँगा और तब नारद के वचनों को सत्य करते हुए संसार से अधर्म को दूर करूँगा। आकाशवाणी सुनकर देवगण हर्षित हुए। तब ब्रह्माजी ने देवगणों को इस प्राकर समझाया –

निज लोकहि बरंचि गे देवन्ह इहइ सिखाइ।
बानर तनु धरि धरि महि हरि पद सेवहु जाइ।।

(1 / 187)

चैत्र शुक्ल नौमी तिथि को मध्य दिवस में अखिल ब्रह्माण्ड नायक अविनाशी निर्गुण ब्रह्म कौशिल्याजी के कक्ष में प्रकट हुए –

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप निहारी।।

(1 / 192 / छंद)

यहाँ पर प्रश्न उठता है कि ब्रह्म का अवतार होता है अथवा वे प्रकट होते हैं या जन्म लेते हैं। यह आपकी अपनी भावना के अनुसार होता है। देवताओं के लिए यह अवतार है, ज्ञानियों और भक्तों के लिए प्रभु का प्रकट होना है, पर ईश्वर को पुत्र रूप में चाहने वाले दशरथजी के लिए यह प्रभु का जन्म है।

दशरथ पुत्रजन्म सुनि काना। मानहुँ ब्रह्मानंद समाना।।

(1 / 193 / 3)

माता कैकेई ने एक और माता सुमित्रा ने दो पुत्रों को जन्म दिया। गुरु वसिष्ठजी ने उनका नामकरण राम, भरत तथा लक्ष्मण–शत्रुघ्न के रूप में किया। अयोध्या नगरी में आनंद की वर्षा होने लगी। बधाई गीतों के साथ ही श्रीराम जन्ममहोत्सव कार्यक्रम समापन की ओर अग्रसर हुआ। समिति की स्मारिका के 22वें अंक का विमोचन करते हुए आई.ए.एस. (सेवा निवृत्त) श्री गणेश शंकर त्रिपाठीजी ने कहा कि श्रीरामचरितमानस एक सामाजिक ग्रन्थ है। इसमें उल्लिखित आचरणों से ही 'श्रीरामराज्य' जैसे आदर्श राज्य की स्थापना संभव है। इस देश की खुशहाली इसी में है कि श्रीरामजी की नगरी अयोध्या में पूर्ववत खुशहाली लौटे। इस हेतु समाज के सभी वर्गों का सहयोग वांछनीय है।

इस अवसर पर 'मानस क्रांति' पत्रिका के सम्पादक श्री हरिओम शास्त्री ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा कि श्रीरामजन्म महोत्सव का यह पुनीत पर्व एक संकल्प दिवस के रूप में मनाना चाहिए। देश में आध्यात्मिक क्रांति लाने के लिए हमें वीरता के साथ–साथ विनम्रता का भी परिचय देना होगा। समिति के अध्यक्ष पं0 दिनेश चंद्र शर्मा ने श्रीराम जन्म महोत्सव के सफल आयोजन हेतु सभी को साधुवाद ज्ञापित किया। आरती और भोजन प्रसाद तथा प्रसाद वितरण के साथ ही कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

लेखकों के लिए, मुद्रक (प्रिंटर) के सुझाव

1. कृपया अपने लेख, MS Word या Corel Draw 13 साफ्टेवेयर में टाईप करें।
2. टाइप के लिए Dev-10 या Kruti-10 फॉन्ट का प्रयोग करें यह सभी टाइप सेन्टर्स पर उपलब्ध होता है।
3. लेख हमें expressprinthouse@yahoo.com पर भेजें एवं contactus@ shriramcharit.com पर cc करें।
4. ई–मेल में Subject में स्मारिका व लेख का नाम अवश्य डालें। उदाहरणार्थ 'मर्यादा पुरुषोत्तम राम' लेख का Subject इस तरह होगा Navmi Smarika : Maryada Purusaottam Ram

तुलसी जयंती समारोह

परम पूज्य गोस्वामी तुलसीदासकृत श्रीरामचरितमानस एक ऐसा दिव्य ग्रन्थ है, जिसके पठन–पाठन, मनन–चिंतन और इसमें वर्णित आदर्शों के अनुपालन से इहलोक और परलोक दोनों सुधर सकते हैं। समाज के हर आयु के, हर वर्ग के लिए जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना करने की सामर्थ्य दिलाने के लिए सूत्र इसमें विद्यमान हैं। ऐसे महाकाव्य के रचयिता को श्रद्धा सुमन अर्पित करने हेतु हम प्रति वर्ष **'तुलसी जयंती समारोह'** आयोजित करते आ रहे हैं। इसी शृंखला में श्रावण शुक्ल सप्तमी विक्रमी संवत 2072 तदनुसार 22 अगस्त सन् 2015 को श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति एवं गीता रामायण समिति, नोएडा के संयुक्त तत्वावधान में सैक्टर–36, नोएडा के श्रीराम मंदिर में भव्य समारोह का आयोजन हुआ, जिसमें कथा व्यास पंडित बैजूनाथजी महाराज ने गोस्वामी तुलसीदासजी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्रीरामचरितमानस पर, विशेषकर उन परिस्थितियों का उल्लेख करते हुए, जिनसे उस समय सनातन धर्म खतरे में था, निम्नांकित प्रकार से प्रवचन सुनाकर श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया।

गोस्वामी तुलसीदासजी ने जिस समय श्रीरामचरितमानस की रचना की उस समय शैव–वैष्णव, द्वैत–अद्वैत, निर्गुण–सगुण मत–मतान्तर के फेर में सनातन धर्म विभिन्न समुदायों में बँट गया था जो एक–दूसरे के कट्टर विरोधी थे। गोस्वामी तुलसीदास ने ईश्वरीय प्रेरणा से श्रीरामचरितमानस में समाज की वे सभी खाइयाँ पाट दीं,जिनसे समाज बिखरा हुआ दिखाई दे रहा था। शैव–वैष्णव की खाई पाटते हुए उन्होंने लिखा –

संकर प्रिय मम द्रोही सिव द्रोही मम दास।
ते नर करहिं कलप भरि घोर नरक महुँ बास॥

(6 / 2)

निर्गुण–सगुण का मतान्तर दूर करते हुए उन्होंने लिखा है कि दोनों में कोई अंतर नहीं है। बस इतना ही अंतर है जैसे जल या जल से बनी हुई बर्फ। निर्गुण ब्रह्म जिसका वर्णन वेद करते हैं, भक्ति और प्रेम वश वही सगुण हो जाता है –

सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा॥
अगुन अरूप अलख अज जोई। भगत प्रेम बस सगुन सो होई॥
जो गुन रहित सगुन सोइ कैसें। जलु हिम उपल बिलग नहिं जैसें॥

(1 / 116 / 1–3)

श्रीरामचरितमानस श्रीरामजी का ग्रन्थावतार है। बालकाण्ड उनके चरण हैं, कटि अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड उदर है; किष्किंधाकाण्ड कंठ, सुन्दरकाण्ड नेत्र, लंकाकाण्ड मुख और उत्तरकाण्ड श्रीरामजी का मस्तिष्क माना गया है। ये सातों काण्ड श्रीरामजी की कृपा से प्राप्त होने वाली भक्ति को पाने के लिए सात सोपान हैं –

एहि महँ रुचिर सप्त सोपाना। रघुपति भगति केर पंथाना।।

(7 / 129 / 3)

सातों काण्डों में से किसी एक काण्ड के भाव का अनुपालन करने पर इहलोक और परलोक दोनों सुधर सकते हैं। सारांश रूप में प्रत्येक काण्ड का एक–एक भाव इस प्रकार से है –

(1) बालकाण्ड में बाल लीलाओं का विशेष रूप से वर्णन है। इसका भाव यह है कि यदि हम अपने जीवन में एक 'शिशु' की तरह सरलता अपना लें तो आत्मकल्याण के मार्ग पर अग्रसर हो सकते हैं। नवधा भक्ति में भी इसका उल्लेख है –

नवम सरल सब सन छलहीना। मम भरोस हियँ हरष न दीना।।

(3 / 36 / 5)

स्वयं भगवान श्रीराम ने अयोध्यावासियों को उपदेश देते हुए कहा कि भक्ति पथ में 'सरल स्वभाव' की प्रधानता है –

सरल सुभाव न मन कुटिलाई। जथा लाभ संतोष सदाई।।

(7 / 46 / 2)

(2) अयोध्याकाण्ड में कोई युद्ध नहीं है। अयोध्या का अर्थ भी यही है कि जहाँ कभी युद्ध न हुआ हो। इसका भाव यह है कि हमारा जीवन विभिन्न द्वन्दों से मुक्त हो।

(3) अरण्यकाण्ड में वन का वर्णन है। श्रीरामजी चित्रकूट से चलकर विभिन्न अरण्यों में विचरण करते हुए पंचवटी पहुँचते हैं और वहाँ पर सीताहरण के पश्चात पंपापुर तक जाते हैं। वन में विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ और पेड़ पौधे होते हैं जो हमारी विभिन्न वासनाओं की द्योतक हैं। इन पर नियंत्रण करके ही हम कल्याण पथ पर अग्रसर हो सकते हैं।

(4) चौथा काण्ड है 'किष्किंधा'। इसमें सुकंठ अर्थात सुग्रीव से मित्रता की कथा है। सुकंठ का आशय है सुन्दर कंठ और सुन्दर कंठ वही है जो राम नाम का गुणगान करे अन्यथा उसकी जीभ तो मेढक के समान है जो केवल टर्र–टर्र करता रहता है। भगवान शिव कथा सुनाने के पूर्व ही पार्वतीजी से कहते हैं –

जो नहिं करइ राम गुन गाना। जीह सो दादुर जीह समाना।।

(1 / 113 / 6)

(5) सुन्दरकाण्ड में श्री हनुमानजी सीताजी की खोज करते हैं। सीताजी भक्ति स्वरूपा है और उनके पास तक पहुँचने में तीन प्रकार की बाधाएँ आती हैं सतोगुणी, रजोगुणी और तमोगुणी। सुरसा हनुमानजी

की परीक्षा लेते हुए अपना आकार बड़ा करती है, तब हनुमान से उससे दुगना आकार बना लेते हैं, किन्तु जब वह अपना अधिकतम सतयोजन आकार कर लेती है, तब हनुमानजी अति लघु रूप धारण करके उस बाधा को पार कर लेते हैं –

सत जोजन तेहिं आनन कीन्हा। अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा।।
बदन पइठि पुनि बाहेर आवा। मागा बिदा ताहि सिरु नावा।।

(5/2/10–11)

इसका आशय है कि सतोगुणी बाधा को हम छोटा बनकर पार कर सकते हैं। मान–बड़ाई–यश ये सब सतोगुणी बाधाएँ हैं। एक सीमा तक ही इनका सामना कर सकते हैं पर जब अति हो जाये तब लघु अर्थात् दीन बनकर इससे छुटकारा पा सकते हैं, क्योंकि भगवान को दीनबंधु कहा गया है। दीन बनते ही वे हमारी सहायता एक भाई की तरह करने लगते हैं।

दूसरी बाधा सिंहनी के रूप में, रजोगुणी स्वरूप आती है जिसे हनुमानजी मार देते हैं, अतः रजोगुणी प्रवृत्तियों से तो पूर्णतया छुटकारा पाना होगा। तीसरी बाधा लंकिनी, तमोगुणी रूप में आती है जिसे हनुमानजी एक मुष्टिका मारते हैं, जिससे उसकी तमोगुणी प्रवृत्ति समाप्त हो जाती है और वह अपने आपको धन्य मानती है कि उसने रामजी के दूत के दर्शन किए और यह कहती है कि अल्प सत्संग भी स्वर्ग–अपवर्ग सुख से भी कहीं अधिक है –

तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग।।

(5/4)

इस प्रकार से तामसिक वृत्तियों को सात्विक वृत्तियों में परिवर्तित करके उस बाधा को पार किया जा सकता है। इन तीन बाधाओं को पार करने पर भी हनुमानजी सीताजी का पता नहीं लगा सके। गीध संपाती के द्वारा बताए गए संकेत के अनुसार अशोक वाटिका में भी हनुमानजी सीताजी को नहीं पहचान सके। इस कारण से लंका में भ्रमण करके देखते हैं –

मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा। देखे जहँ तहँ अगनित जोधा।।
गयउ दसानन मंदिर माहीं। अति बिचित्र कहि जात सो नाहीं।।
सयन किएँ देखा कपि तेही। मंदिर महुँ न दीखि बैदेही।।

(5/5/5–7)

तत्पश्चात् हनुमानजी को एक ऐसा भवन दिखाई दिया जिस पर 'रामायुध तथा राम–नाम' लिखा था। वे प्रतीक्षा करते रहे उन संत के जागने का जो उस भवन में रहते थे। वे थे संत विभीषण। हनुमानजी का संत विभीषण से संवाद होता है और उनके द्वारा बताई गई युक्ति से पुनः अशोक वाटिका जाकर हनुमानजी को सीताजी के दर्शन हुए।

जुगुति बिभीषन सकल सुनाई। चलेउ पवनसुत बिदा कराई।।
करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ। बन असोक सीता रह जहवाँ।।
देखि मनहि महुँ कीन्ह प्रनामा। बैठेहिं बीति जात निसि जामा।।

(5 / 8 / 5–7)

इस कथा का सार यह है कि सतोगुणी, रजोगुणी और तमोगुणी तीनों बाधाओं को पार करने के पश्चात भी भक्तिरूपी सीता का पता तब तक नहीं लग पाता है, जब तक विभीषण रूपी कोई संत उनके पास तक पहुँचने की कोई युक्ति न बता दें। स्वयं भगवान श्रीराम पंचवटी में लक्ष्मणजी के प्रश्नों के उत्तर देते हुए उन्हें समझाते हैं कि भक्ति तभी मिल सकती है जब किसी संत की अनुकूलता प्राप्त हो –

भगति तात अनुपम सुखमूला। मिलइ जो संत होइँ अनुकूला।।

(3 / 16 / 4)

(6) लंकाकाण्ड में श्रीरामजी निशाचरों का बध करते हैं। काम–क्रोध–लोभ–मोह आदि निशाचर ही हैं जो जीव को सदा ईश्वर से दूर किए रहते हैं। जब तक इनका बध नहीं होगा, तब तक जीव को परमात्मा का सानिध्य प्राप्त नहीं होगा। पर इनको जीतना जीव के वश की बात नहीं है। इसे तो राम कृपा से ही जीता जा सकता है और राम कृपा प्राप्त करने हेतु हमें दीन–भाव स्वीकार करना होगा।

(7) उत्तरकाण्ड में श्रीरामजी का राजतिलक होता है। सिंहासनारूढ़ 'सीताराम' हमारे ह्रदय में बसें इसके लिए हमें बालकाण्ड से लंकाकाण्ड तक की कथा का कोई भी एक भाव अर्थात् शिशु जैसा मन, द्वन्द रहित मन, वासनाओं / कामनाओं रहित मन, निरंतर भगवन्नाम स्मरण / कीर्तन, संत संग और दीन भाव अपनाना पड़ेगा।

इस अवसर पर अन्य वक्ताओं ने भी तुलसीदासजी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए श्रीरामचरितमानस के महत्व पर चर्चा की। पत्रकार श्री विनोद शर्मा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस के आदर्शों का अनुसरण करके हम एक आदर्श समाज की स्थापना कर सकते हैं।

इस अवसर पर श्री गणेश शंकर त्रिपाठी, आई.ए.एस. (सेवा निवृत्त) ने बताया कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में श्रीरामचरितमानस का समाज सुधारक के रूप में बहुत महत्व है। श्रीरामजी को वनवास होता है तो लक्ष्मण जी भी साथ चलने को तैयार हो जाते हैं, पर वे उन्हें समझाते हैं कि जिसके राज्य में प्रजा दुखी हो उस राजा को नरक भोगना पड़ता है। यदि यह शिक्षा आज के राजनेता ग्रहण कर लें तो वह दिन दूर न होगा जब महात्मा गाँधी के सपनों का 'राम राज्य' अपने देश में स्थापित हो जाएगा।

श्रीरामदरबार, श्रीरामचरितमानस और संत भक्त कवि गोस्वामी तुलसीदासजी की आरती, भोजन–प्रसाद के साथ ही कार्यक्रम सानंद सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम के आयोजन में गीतारामायण समिति के पदाधिकारी सर्वश्री दिनेश पांडे एवं सी.एस. भोगलजी तथा श्रीराम मंदिर के प्रधान पुजारी श्री योगेन्द्र पाण्डे का सहयोग प्रशंसनीय रहा।

नामु राम को कलपतरु

श्री देवेन्द्र शर्मा, 963 सैक्टर-12, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली, मो. : 9810199441

स्मारिका के अंक 22 पृष्ठ 45 से आगे –

'श्रीराम–नाम' को कल्पवृक्ष की उपमा देने में श्रीगोस्वामीजी का विश्वास से पूर्ण कथन यह है कि सारे वेद–पुराण, पण्डित यहाँ तक कि भगवान श्रीशंकरजी भी यही कहते हैं कि कल्पवृक्ष के समान श्रीभगवान का 'श्रीराम–नाम' सभी प्रकार के साधकों–भक्तों को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष– चारों पदार्थों को प्रदान करने वाला है और उनके स्वयं (गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी) के जीवन का आधार तो 'श्रीराम–नाम' ही है –

राम-नाम कामतरु देत फल चारि रे। कहत पुरान, बेद, पंडित, पुरारि रे।
राम-नाम प्रेम-परमारथ को पार रे। राम-नाम तुलसी को जीवन अधार रे॥

(विनय–पत्रिका 67 / 4–5)

श्रीगोस्वामीजी श्रीनाम–वन्दना प्रकरण में राम शब्द के तीनों वर्णों (र, अ तथा म) को कृसानु (अग्नि), भानु (सूर्य) और हिमकर (चन्द्रमा) की उपमा देते हैं और इनके गुणों को 'श्रीराम–नाम' की महत्ता और प्रभाव से जोड़ते हुए कहते हैं –

बंदउँ नाम राम रघुबर को। हेतु कृसानु भानु हिमकर को॥

(1 / 19 / 1)

जैसे अग्नि का काम पदार्थों को भस्म करना है, वैसे ही– 'श्रीराम–नाम' रूपी पावक (अग्नि) भी जीव के समस्त पाप रूपी तूल (रूई) को जलाकर भस्म कर देता है –

जासु नाम पावक अघ तूला।

(2 / 248 / 2)

जैसे सूर्य का काम संसार को प्रकाश प्रदान करना और भोजनार्थ अन्न (फसल) को पकाना है, वैसे ही 'श्रीराम–नाम' रूपी पतंगा (सूर्य) भी जीव के हृदय रूपी संसार के समस्त भ्रमरूपी तिमिर (अन्धकार) का नाश करके उसे विशुद्ध ज्ञानरूपी प्रकाश प्रदान करता है और उस प्राप्त प्रकाश रूपी ज्ञान अथवा आध्यात्मिक भोजन (फसल) को परिपक्व बनाता है –

जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा।

(1 / 116 / 4)

जिस प्रकार चन्द्रमा का काम सूर्य से तापित संसार को रात्रि में शीतलता प्रदान करना और पुष्टिकारक वनस्पतियों में रस को उत्पन्न करना है– वैसे ही 'श्रीराम–नाम' भी भक्तों के लिए भक्ति रूपी

पूर्णिमा की रात्रि में पूर्ण चन्द्रमा के अनुरूप काम करता है—

राका रजनी भगति तव राम नाम सोइ सोम।

(3 / 42 क)

जासु नाम...... हरन घोर त्रय सूल।

(7 / 124 क)

नामु सप्रेम जपत अनयासा। भगति होहिं मुद मंगल बासा।।

(1 / 24 / 2)

अर्थात् यह 'श्रीराम—नाम' भक्तों के तीनों प्रकार के तापों का हरण करके आनन्द और कल्याणरूपी शीतलता प्रदान करता है और भक्तों द्वारा अपनाये गये भक्ति के समस्त साधनरूपी भक्ति—पुष्टिकारक वनस्पतियों को 'भावरूपी रस' से परिपूर्ण करके, उनकी भक्ति को पूर्णता प्रदान करता हे। श्रीगोस्वामीजी —

बिधि हरि हरमय बेद प्रान सो। अगुन अनूपम गुन निधान सो।।

(1 / 19 / 2)

कहकर 'श्रीराम—नाम' को 'ॐ' के समान ही भगवान श्रीब्रह्माजी, भगवान श्रीविष्णु और भगवन श्रीशिवजी से युक्त बताते हैं।

महारामायण में रकार, अकार तथा मकार के माहात्म्य को इस प्रकार बताया गया है —

जैसे अग्नि शुभाशुभ सभी वस्तुओं को जलाकर भस्म कर देती है और कुछ स्वर्णादि— जैसी वस्तुओं के मल तथा दोष को जला कर उनको शुद्ध बना देती है, वैसे ही 'श्रीराम—नाम' में 'र' कार के उच्चारण से भी दो कार्य होते हैं। पहला— यह कि 'र' कार के उच्चारण से शुभाशुभ कर्म नष्ट होते हैं, जिनका फल स्वर्ग—नरक का अभाव है, दूसरे 'र' कार के उच्चारण से मन की विषय—वासनाओं का नाश होकर स्व—स्वरूप— आत्मा की झलक देखने में सहायता मिलती है। 'श्रीराम—नाम' में अकार भानु (सूर्य) बीज है, जो वेदशास्त्रों अर्थात् ज्ञान का प्रकाशक है। जैसे सूर्य अन्धकार को दूर करता है, वैसे ही अकार के उच्चारण से हृदय में बसे हुए मोह आदि जो अविद्या—तम (अन्धकार)। हैं, उनका नाश होकर 'ज्ञान' का प्रकाश होता है। 'श्रीराम—नाम' में, 'म'कार चन्द्रबीज है, जो अमृत से परिपूर्ण है। जैसे चन्द्रमा त्रिताप को हरता है, शीतलता प्रदान करता है, वैसे ही 'म'कार के उच्चारण से त्रिताप दूर होकर हृदय में श्रीभगवान की 'भक्ति' का प्रादुर्भाव होता है और भगवदाश्रय शरणागति रूपी शीतलता प्राप्त होती है। श्रीराम—नाम चिदानन्दमय है —

चिद्वाचको रकारः स्यात्सद्वाच्योऽकार उच्यते।
मकारानन्दवाची स्यात्सच्चिदानन्दमव्ययम्।।

(महारामायण 52 / 53)

अर्थात 'र'कार चित् का , 'अ'कार सत् का और 'म'कार आनन्द का वाचक है, इस प्रकार यह 'श्रीराम—नाम' सच्चिदानन्दमय है। 'श्रीराम—नाम' ज्ञान—वैराग्य—भक्ति तीनों का प्रदाता है —

विज्ञानस्थो रकारः स्यादकारो ज्ञानरूपकः।
मकारः परमा भक्ती रमु क्रीडोच्यते ततः।
रकारो हेतुवैंराग्यं परमं यच्च कथ्यते।
अकारो ज्ञानहेतुश्च मकारो भक्तिहेतुकम्॥

(महारामायण)

अर्थात 'श्रीराम—नाम' में 'र'कार के उच्चारण से विज्ञान/वैराग्य, 'अ'कार के उच्चारण से ज्ञान और 'म'कार के उच्चारण से प्रेमाभक्ति प्राप्त होती है और इस प्रकार 'श्रीराम—नाम' सम्पूर्ण ज्ञान, वैराग्य और भक्ति—तीनों को प्रदान करने में पूर्णतया समर्थ है।

अनल भानु ससि ब्रह्म हरि हर ओंकार समेत।
ब्रह्म जीव माया मनहिं भिन्न भिन्न सिख देत॥

(मानस—अभिप्राय—दीपककार)

अर्थात 'श्रीराम—नाम' अग्नि, सूर्य चन्द्रमा, त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु, महेश), प्रणव, ब्रह्म, जीव और माया— इन दसों का कारण और तद्रूप है और हमारे मन को इस प्रकार शिक्षा देता है कि 'श्रीराम—नाम' अग्नि—सूर्य—चन्द्रमा की तरह जीवों का पालन—पोषण करने में और त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) की तरह उत्पत्ति—पालन—संहार द्वारा जीवों का कल्याण करने में समर्थ है। यह 'प्रणव' (ॐ) की तरह वेदों को सत्तावान बनाये रखने में और सृष्टि की रक्षा करने में समर्थ है। यह 'निर्गुण—ब्रह्म' की तरह सृष्टि के समस्त जीवों के साथ रहकर उनके इन्द्रिय आदि को सदैव चेतन रखने में समर्थ है और विद्या—माया तो जीव को भक्ति/मुक्ति के मार्ग पर लगाती ही है। इस प्रकार 'श्रीराम—नाममय' इन दसों का हमारे मन पर पूरा—पूरा उपकार है।

श्रीरामानुजमन्त्रार्थ में 'श्रीराम—नाम' का भावपूर्ण अर्थ इस प्रकार है— हे दिव्य गुणों और परम ऐश्वर्य से युक्त श्रीराम! दासता के गुणों से युक्त मैं आपका अनन्य सेवक, आपकी कृपादृष्टि का याचक हूँ। दूसरे शब्दों में— हे सर्वसमर्थ करुणानिधान भगवान् श्रीराम! कृपा करके आप मुझे अपनी परमानन्दमयी और परमकल्याणमयी दासता प्रदान करें।

'श्रीराम—नाम' में उपस्थित अग्नि, सूर्य और चन्द्रमा तथा इनके गुण—धर्मों के सन्दर्भ में एक बहुत ही महत्वपूर्ण भाव मिलता है कि 'अग्नि' के प्रकाश का लाभ सन्ध्या और रात्रिकाल में, 'सूर्य' के प्रकाश का लाभ केवल दिन में और 'चन्द्रमा' के प्रकाश का लाभ केवल रात्रिकाल में ही प्राप्त होता है। लेकिन 'श्रीराम—नाम'

रूपी 'सर्वोत्तम–दिव्य–मणि' के प्रकाश का लाभ तो जीव के भीतरी और बाहरी संसार में हर समय ही सुलभ है –

राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरीं द्वार।
तुलसी भीतर बाहेरहुँ जौं चाहसि उजिआर।।

(रा0च0मा0 1/21)

इसके अतिरिक्त यदि 'श्रीराम–नाम' के स्वर और व्यंजन दोनों का अलग करके देखा जाये तो 'श्रीराम–नाम' पाँच भागों में परिणत हो जाता है– 'र्+अ+अ+म्+अ' जो पंचब्रह्म और पंचतत्त्वों का द्योतक भी बताया जाता है। आदित्य (श्रीसूर्य), गणनाथ (श्रीगणेश), देवी (श्रीदुर्गा), रुद्र (श्रीशिव) और केशव (श्रीविष्णु)– ये तो पंचदेव अथवा पंचब्रह्म हुए और 'क्षिति–जल–पावक–गगन–समीरा' (पृथ्वीी–जल–अग्नि–आकाश–वायु)– ये पंचतत्त्व अथवा महाभूत हुए। 'श्रीराम–नाम' में प्रयुक्त स्वर और व्यंजनों के जो उपर्युक्त प्रामाणिक अर्थ अथवा भाव दिये गये हैं, उनके साथ 'पंच ब्रह्म' और 'पंच तत्त्वों' का सम्बन्ध इस प्रकार बताया गया है –

आकाशस्याधिपो विष्णुरग्नेश्चैव महेश्वरी।
वायोः सूर्यः क्षितेरीशो जीवनस्य गणाधिपः।।

अर्थात् (1) 'र्' से रुद्र (श्रीशिव), जो पृथ्वीी के अधिपति हैं, (2) 'अ' से अग्रपूज्य/आदिपूज्य (श्रीगणेश), जो जल के पति अधिपति हैं, (3) 'अ' से अरुण (श्रीसूर्य), जो वायु के अधिपति हैं, (4) 'म्' से श्रीविष्णु, जो आकाश के अधिपति हैं और (5) 'अ' से अजा (श्रीदुर्गा), जो अग्नि की अधिपति हैं और इस न्याय से पंच ब्रह्म और पंच तत्त्वों के बीच सनातन सम्बन्ध है। भगवान् श्रीशिव के पृथ्वी तत्त्व के अधिपति होने के कारण उनकी पार्थिव पूजा विधान है। भगवान् श्रीविष्णु के आकाश तत्त्व के अधिपति होने के कारण उनकी शब्दों द्वारा स्तुति करने का विधान है। भगवती श्रीदुर्गा के अग्नि तत्त्व की अधिपति होने के कारण उनका अग्निकुण्ड में हवन आदि के द्वारा पूजा का विधान है। भगवान् श्रीगणेशजी के जल (जीवन) तत्त्व का अधिपति होने के कारण (क्योंकि सृष्टि के आदि में जल ही जल था तो उसके अधिपति होने से आदि देवता, अग्रपूज्य/आदिपूज्य श्रीगणेश ही हुए, अतः) उनकी सर्वप्रथम पूजा का विधान है और इस प्रकार अकेले 'श्रीराम–नाम' के स्मरण तथा जप से पंचब्रह्म और पंचतत्त्वों की साधना भी स्वतः ही हो जाती है।

श्री गोस्वामी जी 'श्रीराम–नाम' वन्दना के प्रसंग में 'श्रीराम–नाम' का निरूपण करके अर्थात् इसकी महिमा को अच्छी तरह से जानकर और उस पर पूर्ण विश्वास करके, इसके जप–स्मरणद्वारा चारों फल–धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का लाभ पाने वालों का विवरण प्रस्तुत करते हुए कहते हैं –

नाम प्रभाउ जान सिव नीको। कालकूट फलु दीन्ह अमी को।।
महामंत्र जोइ जपत महेसू। कासीं मुकुति हेतु उपदेसू।।
सहस नाम सम सुनि सिव बानी। जपि जेईं पिय संग भवनी।।

हरषे हेतु हेरि हर ही को। किय भूषन तिय भूषन ती को।।
नाम प्रसाद संभु अबिनासी। साजु अमंगल मंगल रासी।।

(रा0च0मा0 1/19/8, 3, 6–7, एवं 1/26/1)

अर्थात् निरन्तर 'श्रीराम–नाम' का जप करने के फल स्वरूप ही भगवान् श्रीशंकर के लिए कालकूट–विष अमृत के समान हो गया और इसी 'श्रीराम–नाम' के प्रभाव से वे अपने काशी–धाम में शरीर त्यागनेवालोंको 'मुक्ति' प्रदान करते हैं। इतना ही नहीं, इपने पति जगद्गुरु भगवान् श्रीशंकर से– 'श्रीराम–नाम' का यह महत्त्व जानकर कि अकेला 'श्रीराम–नाम' ही भगवान् श्रीविष्णु के सहस्त्रनामों के बराबर है, माता श्रीपार्वतीजी भी इस परम–पावन 'श्रीराम–नाम' को अपने पति के साथ सादर श्रद्धापूर्वक निरन्तर जपने लगीं।

महिमा जासु जान गनराऊ। प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ।।
जान आदिकबि नाम प्रतापू। भयउ सुद्ध करि उलटा जापू।।

(रा0च0मा0 1/19/4–5)

अर्थात् श्रीगणेशजी से अच्छा 'श्रीराम–नाम' के प्रभाव को कौन जान सकता है? इसी 'श्रीराम–नाम' के प्रभाव के कारण ही उन्हें 'आदिपूज्य' का पद प्राप्त हुआ और श्री वाल्मीकि जी तो 'श्रीराम–नाम' को उल्टा यानी कि 'मरा–मरा' जपने पर ही 'आदिकवि' और 'ब्रह्मर्षि' की पदवी पा गये।

सुक सनकादि सिद्ध मुनि जोगी। नाम प्रसाद ब्रह्मसुख भोगी।।
नारद जानेउ नाम प्रतापू। जग प्रिय हरि हरि हर प्रिय आपू।।
नामु जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू। भगत सिरोमनि भे प्रहलादू।।
ध्रुवँ सगलानि जपेउ हरि नाऊँ। पायउ अचल अनूपम ठाऊँ।।
सुमिरि पवनसुत पावन नामू। अपने बस करि राखे रामू।।
अपतु अजामिलु गजु गनिकाऊ। भए मुकुत हरि नाम प्रभाऊ।।

(रा0च0मा0 1/26/2–7)

अर्थात् 'श्रीराम–नाम' के प्रसाद से ही श्रीशुकदेवजी और श्रीसनकादिमुनि परमसिद्ध महर्षि होकर ब्रह्मसुख के भोगी हुए तथा श्रीनारदजी भगवान् श्रीविष्णु और भगवान् श्रीशंकर– दोनों के प्रिय बनें। दैत्य कुल में उत्पन्न प्रह्लादजी भक्तशिरोमणि कहलाये। ग्लानिसहित 'श्रीहरिनाम' जपने पर भी ध्रुव ने अचल पद प्राप्त किया। परमभक्त पवन पुत्र श्रीहनुमान जी महाराज ने तो इस परम–पावन 'श्रीराम–नाम' के निरन्तर जप के प्रसाद से भगवान् श्री राम को ही अपने बस में कर रखा है। नीच–कर्म में लिप्त होते हुए भी अजामिल, गज (हाथी) और गणिका–जैसी पापी भी श्री भगवन्नाम के प्रसाद से भव–बन्धन से मुक्त हो गये।

(क्रमशः अगले अंक में)

राम की महाशक्ति हैं सिया

सरल शास्त्री

हुआ धरणी से प्रादुर्भाव
   मिटाने को धरणी का भार।
            सुता को पाकर धन्य विदेह
                    हुआ मिथिला को हर्ष अपार।।

जगत में सती-शिरोमणि ख्याति
   दिव्य गुण का अक्षय आगार।
            जगत नारी-दल को आदर्श
                    क्षमा ममतामयि करुणा-धार।।

किये सबके मन-मधुकर मुग्ध
   विनय नय सेवा मधु व्यवहार।
            समर्पित थे तन मन धन प्राण
                    प्रेम से प्रियतम प्राणाधार।।

गयीं वन को प्रियतम के साथ
   बिछाने कंटकमय-पथ फूल।
            रहीं छाया सी सहचर साथ
                    धर्म-पथ पर पति के अनुकूल।।

किसी से माँगा कुछ भी नहीं
   जनकजा ने अपने सुख हेतु।
            राम से माँगी बस मृगछाल
                    'सरल' वह भी प्रिय-आसन हेतु।।

जनक–सुकुमारी सीता कौन
गान वेदों ने जिनका किया।
सच्चिदानन्दकन्द परब्रह्म
राम की महाशक्ति हैं सिया।।

वही सौभाग्य चेतना चित्त
संगिनी प्राणप्रिया रस–धार।
सहचरी सखी हितैषी बुद्धि
राम की भगवत्ता का सार।।

सिया सौन्दर्य–सार सर्वस्व
कौन जग सुन्दर सीय समान।
सभी सुन्दरताओं को वही
किया करतीं सौंदर्य प्रदान।।

उन्हें 'माया' कहता वेदान्त
अनिर्वचनीया नित्य अनादि।
नटी अघटितघटना में निपुण
विलक्षण प्रबल, न अंत न आदि।।

गहन दुस्तर त्रिगुणा अव्यक्त
सिया ही सांख्य शास्त्र की 'प्रकृति'।
वही हैं जग का कारण–कार्य
उन्हीं ने रची जगत सी विकृति।।

सिया ही शान्ति–मूर्ति साकार
भक्त की भाषा में वे भक्ति।
वही रखतीं श्रद्धा विश्वास
राम के चरणों में अनुरक्ति।।

शान्ति शोभा आभा माधुर्य
दिव्य गुण–गणाधीश्वरी वही।
जगज्जननी जगदम्बा शिवा
सरस्वति कमला दुर्गा वही।।

सिया ही करतीं जग की सृष्टि
वही करतीं पालन–संहार।
जगन्नाटक–संचालन वही
उन्हीं की लीला यह संसार।।

हमारे बाहर–भीतर वही
जानतीं सबके मन की बात।
घुमातीं वही चक्र की भाँति
हमारी भाग्य–पंक्ति दिन–रात।।

बनातीं वे सबके प्रारब्ध
जगज्जीवों के कर्म बटोर।
नचातीं कठपुतली की भाँति
हिला कर वे कर्मों की डोर।।

सच्चिदानन्द–स्वरूपे सिये
करो इतनी विनती स्वीकार।
'सरल' को करुणा–दृष्टि निहार
करो माँ! भव–सागर से पार।।

अजय पर विजय एवं अमर की मृत्यु

पं0 रामगोपाल तिवारी 'मानस रत्न'
बाँदा (उ0प्र0) मो0 : 09451142792

श्रीरामचरितमानस में राम–रावण युद्ध के वर्णन में विभीषणजी श्रीरामजी को साधन विहीन तथा रावण को समस्त भौतिक साधन एवं बलशाली सैन्य, शस्त्र शक्ति सम्पन्न 'अजेय' देखकर रामजी की विजय पर सन्देह व्यक्त कर रहे हैं –

रावनु रथी बिरथ रघुबीरा। देखि बिभीषन भयउ अधीरा।।
अधिक प्रीति मन भा संदेहा। बंदि चरन कह सहित सनेहा।।
नाथ न रथ नहिं तन पदत्राना।। केहि बिधि जितब बीर बलवाना।।

(6 / 90 / 1–3)

विभीषणजी के सन्देह निवारण हेतु श्रीरामजी बाह्य भौतिक साधन–शक्ति के स्थान पर जीवन के आन्तरिक गुण–स्वभाव एवं आचरण को ही 'धर्म–रथ' कहकर अजय पर विजय का मुख्य आधार बताते हैं –

महा अजय संसार रिपु जीत सकइ सो बीर।
जाकें अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर।।

(6 / 80 क)

अर्थात भौतिक (सांसारिक) दृष्टि से अजेय शक्तिशाली शत्रु पर आध्यात्मिक आचरण शक्ति से विजय पाना सम्भव है।

यहाँ विशेष विचारणीय बात यह है कि विभीषणजी ने रावण को लक्ष्य करके वीर, बलवान एवं 'केहि बिधि जितब' से अजेय कहकर श्रीरामजी की विजय पर सन्देह व्यक्त किया। जबकि रामजी ने इसके उत्तर में संसार–रिपु की अजेयता स्वीकार करके धर्माचरण एवं आध्यात्मिक शक्ति से विजय की सम्भावना निश्चित कर दी। यहाँ ऐसा लगता है कि सम्पूर्ण संसार की संगठित सर्वोच्च भौतिक शक्तियाँ ही रावण के रूप में अजेय शत्रु हैं अर्थात् सम्पूर्ण अजेय संसार पर विजय पाने वाला ही रावण पर भी विजय प्राप्त कर सकता है। यह अर्थ लेना उचित भी है, क्योंकि रावण, विधि निर्मित सृष्टि पर अपना एकछत्र शासन कर भी रहा था।

भुज बल बिस्व बस्य करि राखेसि कोउ न सुतंत्र।
मंडलीक मनि रावन राज करइ निज मंत्र।।

(1 / 182)

चूँकि रावण सकल चराचर को जीत चुका था अर्थात् रावण पर विजय प्राप्त कर सकने वाला कोई भी नहीं था, इसलिए भी रावण अजेय (सर्वविजयी) था।

कुंभकरन अस बंधु मम सुत प्रसिद्ध सक्रारि।
मोर पराक्रम नहिं सुनेहि जितेउँ चराचर झारि।।

(6 / 27)

चूँकि रावण सुत सक्रारि (मेघनाद) भी अजेय है –

देखि अजय रिपु डरपे कीसा।

(6 / 76 / 13)

तो अजेय मेघनाद का (आदर्श) प्रशासक श्रद्धेय पिता दशानन तो महा अजय स्वतः सिद्ध है, अतः रामजी के सामने अजय पर विजय प्राप्त करना एक बहुत कठिन एवं असम्भव सी चुनौती लग रही थी। इससे भी ज्यादा बड़ी एवं असम्भव जैसी एक और चुनौती की स्थिति तब आ गई, जब श्रीरामजी रावण से युद्ध करते–करते विशेष श्रम कर चुके, परन्तु रावण की मृत्यु नहीं हो रही थी तो श्रीरामजी ने कुछ युक्ति जानने की दृष्टि से विभीषण की ओर देखा। जिसके उत्तर में विभीषणजी ने रामजी के सामने रावण की मृत्यु का ऐसा रहस्य खोला, जिससे रावण की मृत्यु असम्भव से संभव सिद्ध हो गई।

मरइ न रिपु श्रम भयउ बिसेषा। राम विभीषन तन तब देखा।।
नाभि कुंड पियूष बस याकें। नाथ जिअत रावनु बल ताकें।।

(6 / 102 / 2–5)

विभीषणजी के कथनानुसार रावण की नाभि में अमृत है चूँकि अमृत का गुण–धर्म अमरता प्रदान करना है –

भलो भलाइहि पै लहइ लहइ निचाइहि नीचु।
सुधा सराहिअ अमरताँ गरल सराहिअ मीचु।।

(1 / 5)

अतः रावण की नाभिकुंड में अमृत होने के आधार पर रावण को अमर कहा जा सकता है तथा रावण ने अपने बाहुबल, पराक्रम से मृत्यु के अधिकारी काल एवं यमराज पर विजय प्राप्त की थी। काल एवं यमराज ये सब भय के कारण रावण के चरणों में सिर रख कर रावण की आज्ञा का पालन करते थे –

रबि ससि पवन बरुन धनधारी। अगिनि काल जम सब अधिकारी।।
किंनर सिद्ध मनुज सुरनागा। हठि सबहीं के पंथहिं लागा।।
ब्रह्मसृष्टि जहँ लगि तनुधारी। दसमुख बसबर्ती नर नारी।
आयसु करहिं सकल भयभीता। नवहिं आइ नित चरन बिनीता।।

(1 / 182 / 10–13)

भुजबल जितेहु काल जम साईं।

(6 / 104 / 8)

अतः काल और यमराज सब बस में और आज्ञाकारी होने से रावण को मृत्यु की कोई आशंका नहीं रह गई। इस दृष्टि से भी रावण को भी अमर कहा जा सकता है अर्थात् अमर रावण को मारना श्रीरामजी के लिए असंम्भव को सम्भव करने की चुनौती थी। गीधराज जटायु के देह त्याग करते समय रामजी ने स्पष्ट

कहा था कि सीता हरण के अपराध का दुष्परिणाम दशानन स्वयं वहीं जाकर मेरे पिताजी से कहेगा।

सीता हरन तात जनि कहहु पिता सन जाइ।
जौं मैं राम त कुल सहित कहिहि दसानन आइ॥

(3 / 31)

अतः निश्चित ही है कि श्रीरामजी के कथनानुसार दशानन ये शरीर छोड़कर ऊर्ध्व लोक में दशरथजी से मिला ही हो। दशरथजी ने दशानन की मृत्यु पर आश्चर्य जनक जिज्ञासा की होगी कि दशानन तुम्हारी असम्भावित पराजय एवं मृत्यु कैसे हो गई। इसके उत्तर में रावण ने दशरथजी को बताया ही होगा कि अरे दशरथ तुम्हारे पुत्र राम ने मेरा कुल एवं सेना सहित सर्वनाश ही कर दिया। सम्भवतः राम के ऐसे आश्चर्यमय पुरुषार्थ की पुष्टि हेतु दशरथजी तत्काल लंका के रणांगण में आकर अश्रुपात के माध्यम से राम से अजय रावण पर विजय पाने का आधार पूछा हो।

पुनश्च लंका पर विजय के पश्चात लक्ष्मण एवं सीता सहित श्रीरामजी के अयोध्या वापस आगमन का संदेश पाकर माँ कौशल्या भी मानसिक कल्पना कर रही हैं कि लंका में बहुत से जग विजेता वीर हैं –

कुमुख अकंपन कुलिसरद धूमकेतु अतिकाय।
एक एक जग जीति सक ऐसे सुभट निकाय॥

(1 / 180 / 1)

तो अब शायद राम और लक्ष्मण शारीरिक शक्ति की दृष्टि से बहुत पुष्ट एवं विशालकाय हो गए होंगे तभी तो लंका के तमाम जग विजयी और अजय मेघनाद व अमर रावण को मार दिया होगा।

पर जब रामजी अयोध्या आ गए तब माँ कौशल्या सुकुमार राम और लक्ष्मण को देखकर बार बार विचार करके अपने मन में प्रश्न करती है कि राम ने लंकेश को कैसे मार दिया? –

कौसल्या पुनि पुनि रघुबीरहिं। चितवति कृपासिंधु रनधीरहिं॥
हृदय बिचारति बारहिं बारा। कवन भाँति लंकापति मारा॥
अति सुकुमार जुगल मेरे बारे। निसिचर सुभट महाबल भारे॥

(7 / 8 / 6–8)

इन सबके प्रश्नों का उत्तर मानो रामजी ने लंका के रणांगण में दिव्य लोक से आये हुए पिताश्री के समक्ष स्पष्ट किया –

तेहि अवसर दसरथ तहँ आए। तनय बिलोकि नयन जल छाए॥
अनुज सहित प्रभु बंदन कीन्हा। आसिरबाद पिता तब दीन्हा॥
तात सकल तव पुन्य प्रभाऊ। जीत्यों अजय निसाचर राऊ॥

(6 / 112 / 1–3)

अर्थात् प्रभु श्रीरामजी अजय निसाचरराज दशानन पर विजय प्राप्त करने का मुख्य आधार यही बता रहे कि पिताश्री आप एवं अन्य गुरुजनों, सज्जनों, सदाचारी, तपस्वी, तेजस्वी महापुरुषों के चरणों में नमन, वन्दन, शिष्टचार, विनम्रता, समर्पण, सेवाभाव से ही ऐसी शक्ति प्राप्त होती है, जिसके बल से अजय निशाचर राज पर विजय मिली है। चूँकि किसी तपस्वी तेजस्वी गुरुजनों के चरणों में नमन करने पर उनमें संचित पुण्यों की तेजस्विता की शक्ति नमन करने वाले को मिलती है और श्रीरामजी नित्य प्रति माता–पिता एवं श्रीगुरुजी के चरणों में नत मस्तक होते ही थे –

प्रातकाल उठि कै रघुनाथा। मात पिता गुरु नावहिं माथा।।

(1 / 205 / 7)

इसीलिए रामजी पिताश्री को उत्तर दे रहे हैं –

तात सकल तव पुन्य प्रभाऊ। जीत्यों अजय निसाचर राऊ।।

(6 / 112 / 3)

श्रीरामजी लंका विजय के पश्चात अयोध्या पहुँच कर अपने साथ आए सभी (मनुज रूपधारी) वानर–भालु, मित्रों को गुरुजी के चरणों में नमन करने की शिक्षा देकर लंका के निशाचरों का संहार उन्हीं गुरुजी की कृपा का परिणाम बताते हैं –

पुनि रघुपति सब सखा बोलाए। मुनि पद लागहु सकल सिखाए।।
गुरु बसिष्ट कुल पूज्य हमारे। इन्ह की कृपाँ दनुज रन मारे।।

(7 / 8 / 5–6)

श्रीरामजी के वनवास काल में अयोध्या से बाहर जाकर अन्य भी बहुत से ऋषि, मुनि, तपस्वी सदाचारियों के चरणों में नमन करने का विशेष अवसर मिला तो सबके जीवन का पुण्य रामजी को प्राप्त हो गया। इसीलिए वनवास की घटना को रामजी ने हितकारी एवं पुण्य लाभ के रूप में स्वीकार किया था –

मुनिगन मिलनु बिसेषि बन सबहिं भाँति हित मोर।
× × × × × × × × ×

(2 / 41)

तात बचन पुनि मातु हित भाइ भरत अस राउ।
मो कहुँ दरस तुम्हार प्रभु सबु मम पुन्य प्रभाउ।।

(2 / 125)

अर्थात् रामजी अपने शिष्टाचार के आदर्श आचरण से ये शिक्षा दे रहे हैं कि गुरुजनों की आज्ञाकारिता, सेवा–पूजा से आन्तरिक आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करके असम्भव को सम्भव किया जा सकता है, परन्तु रामजी की लंका विजय का एक दूसरा पक्ष भी है कि अपने से छोटे निम्न एवं उपेक्षित वर्ग (वानर–भालू) को भी रामजी ने उनकी प्रशंसा करके सम्मान दिया, जिससे वे सब अपने प्राणों की बलि देकर रामजी की सेवा में समर्पित हो गये –

तुम्हरे बल मैं रावनु मारयो। तिलक बिभीषन कहँ पुनि सारयो।।

(6 / 118 / 4)

मम हित लागि तजे इन्ह प्राना।

(6 / 114 / 2)

ए सब सखा सुनहु मुनि मेरे। भए समर सागर कह बेरे।।
मम हित लागि जन्मइन्ह हारे। भरतहु ते मोहि अधिक पिआरे।।

(7 / 8 / 7–8)

अर्थात् अपने से बड़ों के चरणों में नत होकर और अपने से छोटों को स्नेहमय सम्मान देकर संसार के सम्पूर्ण शरीरधारियों की शक्ति को रामजी ने अपने शरीर में संचित करके रावण को मार दिया।

अब रावण की मृत्यु की इस असम्भावित घटना को रावण की दृष्टि से भी विचार करना चाहिए कि त्रैलोक्य विजेता एवं काल, यमराज, मृत्यु को भी अपने चरणों के नीचे झुकाकर बस में कर लेने वाले पुरुषार्थी रावण को काल कवलित होने के लिए विवश क्यों होना पड़ा? रावण का प्रताप –

कर जोरें सुर दिसिप बिनीता। भृकुटि बिलोकत सकल सभीता।।

(5 / 20 / 7)

चाहिअ करन सो सब करि बीते। तुम्ह सुर असुर चराचर जीते।।

(6 / 7 / 2)

तव बल नाथ डोल नित धरनी। तेज हीन पावक ससि तरनी।।
सेष कमठ सहि सकहिं न भारा। तो तनु भूमि परेउ भरि छारा।।
बरुन कुबेर सुरेस समीरा। रन सन्मुख धरि काहुँ न धीरा।।
भुजबल जितेहु काल जम साईं। आजु परेहु अनाथ की नाईं।।
जगत बिदित तुम्हारि प्रभताई। सुत परिजन बल बरनि न जाई।।
तब बस बिधि प्रपंच सब नाथा। सभय दिसिप नित नावहिं माथा।।

(6 / 104 / 5–9 एवं 10)

कालजयी रावण की मृत्यु की समीक्षा करके मन्दोदरी ने यथार्थ निर्णय निश्चित किया –

राम बिमुख अस हाल तुम्हारा। रहा न कोउ कुल रोवनिहारा।।
अब तव सिर भुज जम्बुक खाहीं। राम बिमुख यह अनुचित नाहीं।।

(6 / 104 / 9 एवं 11)

तात्पर्य यह है कि तपस्वी–सदाचारी–गुरुजनों की सेवा और उपेक्षित वर्ग की प्रशंसा एवं उनको सम्मान देकर अजेय पर भी विजय प्राप्त करके अमर को भी मारा जा सकता है। काल, यमराज और मृत्यु पर भी विजय प्राप्त कर लेने के बाद भी राम से विमुख होने पर सुरक्षित नहीं बचा जा सकता है। भौतिक शक्ति पर आध्यात्मवाद की विजय निश्चित है। इस जीवन का लक्ष्य भौतिक साधन, शारीरिक विषय सुख नहीं, बल्कि आध्यात्मिक स्थिति की चरम सीमा प्राप्त करना है। अतः मनुष्य को सरलता एवं विनम्रता का आचरण करते हुए श्रीराम जी की शरण ग्रहण करनी चाहिए। यही इस जीवन का परम लक्ष्य है।

Add
Kailash Hospital

नाथ धरेउ नरतनु केहि हेतू

मानस मर्मज्ञ पं0 बैजूनाथ जी महाराज
113 बी, डीडीए फ्लैट, शाहपुर जाट, नई दिल्ली। मो0 : 9212033198

पार्वतीजी को अपने पूर्व जन्म (सती) में मोह हो गया था कि अखिल ब्रह्माण्ड नायक ब्रह्म नर शरीर कैसे धारण कर सकता है। पर जब परीक्षा ली तब पता चला कि जो नर लीला कर रहे हैं वे ब्रह्म ही हैं, अतः अब वे शिवजी से पूछती हैं कि किस कारण से अखिल ब्रह्माण्डनायक ब्रह्म ने नर शरीर धारण किया?

राम ब्रह्म चिनमय अबिनासी। सर्ब रहित सब उर पुर बासी।।

(1/120/6)

पराम्बा जगदम्बा पार्वतीजी का अत्यन्त नम्र वचन सुनकर शिवजी दो घड़ी तक ध्यान जन्य आनन्द में डूब गए। फिर उन्होंने मन को बाहर खींचा और रामचरित का वर्णन करने लगे।

पुरुष प्रसिद्ध प्रकास निधि प्रगट परावर नाथ।
रघुकुलमनि मम स्वामि सोइ कहि सिवँ नायउ माथ।।

(1/116)

हे पार्वती! मेरे स्वामी श्रीरामचन्द्रजी पुराणों में वर्णित पुराण पुरुष है, सबके प्रकाशक परम प्रकाश निधि हैं, "अतः परतरं नास्ति", "बीजं प्राहुरमण्ययम् माम् सर्व भूतानां" आदि उपनिषद् वाक्यों के लक्ष्य और तात्पर्य परमात्मा श्रीराम ही हैं। विषय, इन्द्रियां, इन्द्रियों के देवता, जीवात्मा इन सबको चेतना प्रदान करने वाले परम चेतन तत्व परमात्मा श्रीराम ही हैं "ब्रह्मणोऽहि प्रतिष्ठाहम्" आदि श्रुति वाक्य के तात्पर्य श्रीराम ही हैं।

सब कर परम प्रकासक जोई। राम अनादि अवधपति सोई।।
जगत प्रकास्य प्रकासक रामू। मायाधीस ग्यान गुन धामू।।

(1/117/6–7)

भगवान सूर्य का प्रकाश तीनों लोकों में सर्वत्र व्यापक है, वह प्रकाश सूर्यमण्डल से आता है। सूर्य मण्डल में प्रकाश सूर्य से आता है और बिना "सूर्य" के "सूर्यमण्डल" में "प्रकाश" की कल्पना भी अशक्य है, इनके सर्वत्र प्रकाश को "ब्रह्म", प्रकाश का कारण "सूर्यमण्डल" को "परमात्मा", सूर्यमण्डल का आत्मभूत कारण सूर्य "भगवान" कहलाते हैं। हे पार्वती! कार्य कारण रूप से "ब्रह्म, परमात्मा और भगवान" श्रीरामजी ही हैं, पुराणों में वर्णन आया है –

वदन्ति तत् तत्वविदस्तत्वं यज्ज्ञानमद्वयम्।
ब्रह्मेति परमात्मेति भगवाननिति शब्द्यते।।

गोस्वामी श्री तुलसीदासजी महाराज ने भी वर्णन किया है –

मुनि धीर जोगी सिद्ध संतत बिमल मन जेहि ध्यावहीं।
कहि नेति निगम पुरान आगम जासु कीरति गावहीं।।
सोइ रामु ब्यापक ब्रह्म भुवन निकाय पति माया धनी।
अवतरेउ अपने भगत हित निजतंत्र नित रघुकुलमनी।।

(1 / 51 / छंद)

भगवत्स्वरूप के ज्ञाता इस बात को भली–भाँति जानते हैं जो सर्वत्र सर्वदा व्यापी तत्व है, वह कभी भी कोई भी स्थान छोड़कर कहीं भी नहीं जाता, जिनके पास आँख हैं। वे सर्वत्र सब रूपों में उसी का दर्शन करते हैं–

'सीय राम मय सब जग जानी।'
चक्षुष्मन्तो हि पश्यन्ति नैतरे तद्विदो जनाः।।

भगवान का मंगलमय विग्रह प्राकृत नहीं है। पंचभूत परमात्मा को प्रकट नहीं कर सकते, क्योंकि ये स्वयं परमात्मा से प्रकट हैं, अतः यह प्राकृत नहीं, चिन्मय और दिव्य है, न वह कर्म जनित है, न पाञ्च भौतिक है, अपितु हानोपादान रहित और शाश्वत है नित्य सच्चिदानन्द मय **'भगवद्देह'** है यह –

2. राजा स्वायंभू मनु और शतरूपा के उग्र तप और प्रेम से द्रवित होकर जब अखिल ब्रह्माण्ड नायक ने आकाशवाणी की कि वर मांगो, वर मांगो तब मनुजी उनसे निवेदन करते हैं कि आप अपने सेवक के लिए कल्पवृक्ष एवं कामधेनु के समान मनोवांछित फल देने वाले हैं –

चिदानंदमय देह तुम्हारी। बिगत बिकार जान अधिकारी।।

(2 / 127 / 5)

परमात्मा नित्य सच्चिदानन्दमय है। विश्व को प्रकट करने के लिए निर्गुण निराकार ने दिव्य सगुण साकार रूप धारण किया है। भगवान के सभी अवतार नित्य सच्चिदानन्द घन के ही होते हैं, परन्तु लीला विकास की दृष्टि से अवतारों में भेद होता है। लीला तारतम्य से अवतारों में चार प्रकार के भेदों का वर्णन पुराणों में आया है – पुरुषावतार, गुणावतार, लीलावतार और मन्वन्तरावतार। सृष्टि के प्रारंभ में परमात्मा ने 16 कलाओं से परिपूर्ण पुरुष रूप धारण किया, वेदों ने इन्हें **'सहस्रशीर्षा पुरुषः'** कहा, पुराणों ने इन्हें आदि 'नारायण' कारणार्णव में शयन करने वाले 'महाविष्णु' श्री बैकुण्ठ में विराजित 'श्री विष्णु' कहा। श्रुतियों ने इन्हें शेष नारायण कहा, इन्होंने ही सच्चिदानन्द नाम धारण किया, इन्होंने ही तीन गुणों (सत, रज, तम) को प्रकट करके जगत की उत्पत्ति, पालन और संहार के लिए ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र रूपों को स्वीकार किया। गुणों को तीन रूपों में प्रकट करके परमात्मा ने गुणावतार धारण किया। ब्रह्मा, विष्णु, और रुद्र भगवान के गुणावतार है, चारों कुमार, नारद, मीन, कूर्म, वराह, परशुराम, धन्वन्तरि के रूप में प्रभु ने अपनी लीला का विकास किया, ये 'लीलावतार' कहलाए, प्रत्येक कल्प के अन्त में परमात्मा अनेकों अवतार धारण करते हैं।

शास्त्र उन्हें परमात्मा के 'मन्वन्तरावतार की संज्ञा देते हैं, लेकिन –

नृसिंह राम कृष्णेषु षाड्गुण्यं परिपूरितम्।
परावस्थासु ते नित्यं ....॥

वैष्णव ग्रन्थों में वामन, नृसिंह, राम और कृष्ण को परावस्थावतार कहा है। इन चारों में भी श्रीवामन, नृसिहं का अवतार अल्पकालिक था, अतः श्रीराम और श्रीकृष्ण परावस्था के अवतार माने गए। यही भगवान **'बिधि हरि हर पद बंदित रेणु है ,** इन्हीं परतत्व का दर्शन महाराज मनु चाहते हैं, महाराज दम्पति –

द्वादश अच्छर मंत्र पुनि जपहिं सहित अनुराग।
बासुदेव पद पंकरुह दंपति मन अति लाग॥

(1 / 143)

इन्हीं वासुदेव आदिनारायण परमपुरुष का दर्शन पाने के लिए महाराज **'देखऊँ नयन परम प्रभु सोई'** की रट लगाए अडिग अचल बैठे हैं और भगवान के गुणावतार बिधि हरि हर के सामने –

बिधि हरि हर तप देखि अपारा। मनु समीप आए बहु बारा॥
मागहु बर बहु भाँति लोभाए। परम धीर नहिं चलहिं चलाए॥

(1 / 145 / 2–3)

महाराज अविचलता की स्थिति में हैं, महाराज को चाहिए दर्शन परतत्व का, परमपुरुष आदिनारायण वासुदेव का, उस रूप का दर्शन चाहते हैं महाराज –

जो सरूप बस सिव मन माहीं। जेहिं कारन मुनि जतन कराहीं॥
देखहिं हम सो रूप भरि लोचन। कृपा करहु प्रनतारति मोचन॥
जो भुसुंडि मन मानस हंसा। सगुन अगुन जेहि निगम प्रसंसा॥
भगत बछल प्रभु कृपानिधाना। बिस्वबास प्रगटे भगवाना॥

(1 / 146 / 4–6, 8)

सम्पूर्ण विश्व के वास स्थान, चराचर में बसने वाले, भक्त वत्सल, कृपानिधान कोमल, प्रकाशमय, सरस शरीर धारण करके प्रकट हो गए, जिन परमात्मा **'बासुदेव पद पंकरूह दम्पति मन अति लाग'** की स्थिति में महाराज बैठे थे। वह कृपा सिन्धु प्रनतारित मोचन 'नील सरोरुह, नील मणि, नील नीर धर श्याम' प्रभु प्रगट हुए। भगवान का युगल स्वरूप सौन्दर्य, लावण्य और माधुर्य से परिपूर्ण था, महाराज दम्पति इस मधुरातिमधुर रूप को निहार रहे थे –

बोले कृपानिधान पुनि अति प्रसन्न मोहि जानि।
मागहु बर जोइ भाव मन महादानि अनुमानि॥

(1 / 148)

संकोच और दीनता ने महाराज का कंठ अवरुद्ध कर रखा था, प्रेम विह्वल नेत्रों से अश्रुओं की झड़ी लगी थी, संकोच छोड़ दो महाराज ऐसा मेरे पास कुछ भी नहीं, जो मैं आपको दे न सकूं। महाराज श्री के मुख से सहसा स्फुटित हो उठा 'चाहऊँ तुम्हहिं समान सुत' –

देखि प्रीति सुनि बचन अमोले। एवमस्तु करुनानिधि बोले।।

(1 / 150 / 1)

इच्छामय नरबेष सँवारें। होइहउँ प्रगट निकेत तुम्हारें।।
अंसन्ह सहित देह धरि ताता। करिहउँ चरित भगत सुखदाता।।

(1 / 152 / 1–2)

परमपुरुष परमात्मा ने महाराज मनु को वरदान दिया, अंसन्ह सहित आपका पुत्र बनूँगा। ब्रह्म के दो तत्व भेद हैं, कारण ब्रह्म और कार्य ब्रह्म। तुलसी बाबा के शब्दों में 'सब कर परम प्रकाशक 'जोई' जो है वही सबका कारण है, जो सबका कारण परम कारण है उसका स्वरूप चतुर्व्यूहात्मक है, जो क्रमशः वासुदेव आदि नारायण (परम व्योम में), क्षीर सागर में नारायण, श्री बैकुण्ठ में विष्णु, ब्रह्माण्ड को धारण करने के लिए शेष नारायण बनकर ब्रह्माण्ड के मूल में निवास करते हैं। कृपानिधान भगवान ने इन चारों अंशों को पुत्र होने का वरदान दे डाला, इसलिए ब्रह्मर्षि वशिष्ठ ने नाम करण के समय परम पुरुष के चतुर्व्यूहात्मक गुणों के आधार पर चार नाम रखे –

जो आनंद सिंधु सुखरासी। सीकर तें त्रैलोक सुपासी।।
सो सुखधाम राम अस नामा।

(परम पुरुष 'श्रीवासुदेव)

बिस्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई।।

(श्री विष्णु 'पालनकर्ता)

जाके सुमिरन तें रिपु नासा। नाम सत्रुहन बेद प्रकासा।।

(श्री नारायण 'दुष्टों का संहारकर्ता)

लच्छन धाम राम प्रिय सकल जगत आधार।
गुरु बसिष्ट तेहि राखा लछिमन नाम उदार।

(1 / 197)

(श्री शेष नारायण, ब्रह्माण्ड धारक)

इसी तत्व का दिग्दर्शन, श्रीमद्भागवत के वासुदेव गायत्री में **'ॐ नमो भगवते तुभ्यं वासुदेवाय धीमहि, प्रद्युम्नायानिरुद्धाय नमः संकर्षणाय च'** अर्थात् महाराज मनु को अंशों सहित चतुर्व्यूहात्मक रूप चार पुत्र के रूप में प्राप्त हुए। श्रीराम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न जिनमें आदि पुरुष षडैश्वर्य पूर्ण परिपूर्ण तम लीला माधुर्यसिन्धु स्वयं 'भगवान' श्रीराम हैं।

राम एव परंब्रह्म, रामैव सर्व कारणं 'ब्रह्म कारणं' रामैव परमा मुक्ति, सर्वे रामं प्रतिष्ठितम्

महर्षि वाल्मीकि ने भी पग पग पर उद्‌घोषित किया 'वेद वेद्ये परे पुंसि जाते दशरथ आत्मजे' श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण में भगवान के आवेशावतार भगवान श्री परशुराम ने श्रीराम का पराक्रम देखकर स्तुति करते हुए हाथ जोड़कर कहा 'अक्षय्यं मधु हन्तारं जानामि त्वां सुरेश्वर' मैं जान गया मधु दैत्य को मारने वाले, देवताओं के स्वामी साक्षात अविनाशी परमपुरुष हैं आप। हे श्रीराम! रावण के मारे जाने पर जगत्पिता ब्रह्माजी ने सबके सामने यह रहस्य खोल दिया –

भवान्नारायणो देवतः श्रीमाश्चक्रायुधः प्रभु।
एकश्रृंगो वराहस्त्वं भूत भव्य सपत्रजित॥
अक्षरं ब्रह्म सत्यं च मध्ये चान्ते च राघवः।
लोकानां त्वं परो धर्मो विष्वक्सेन चतुर्भुजः॥

बाबा श्री तुलसीदासजी महाराज आशुतोष भगवान श्री शिव के मुख से घोषणा करते है –

मुनि धीर जोगी सिद्ध संतत बिमल मन जेहि ध्यावहीं।
कहि नेति निगम पुरान आगम जासु कीरति गावहीं॥
सोइ रामु ब्यापक ब्रह्म भुवन निकाय पति माया धनी।
अवतरेउ अपने भगत हित निजतंत्र नित रघुकुलमनी॥

(1 / 51 छंद)

पुनश्च

ब्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुन बिगत बिनोद।
सो अज प्रेम भगति बस कौसल्या कें गोद॥

(1 / 198)

इस प्रकार से अखण्ड ब्रह्माण्ड नायक निर्गुण ब्रह्म अपने भक्तों के प्रेम वश ही अवतरित होते हैं। राक्षसों का संहार तो उनकी इच्छा मात्र से संभव है। श्रीरामचरितमानस के प्रारंभ में ही लिखा है –

ब्यापक बिस्वरूप भगवाना। तेहिं धरि देह चरित कृत नाना॥
सो केवल भगतन हित लागी। परम कृपाल प्रनत अनुरागी॥

(1 / 13 / 4–5)

भगवान श्रीराम के अनन्त गुण, बल, पराक्रम, यश, कीर्ति ऐश्वर्य, लावण्य, माधुर्य का वर्णन लेखनी द्वारा असंभव है। जिनका वर्णन सनकादि, वाणी, ब्रह्मा, आगम, निगम, वेद, श्रुति नहीं कर सके, उनका वर्णन करना मेरा दुस्साहस मात्र है।

अवसर पाइ बचन एक कहेऊँ

श्री रामवीर सिंह, पूर्व उपाध्यक्ष, श्रीरामचरितमानस सत्संग समिति

परम पूज्य गोस्वामी तुलसीदासजी श्रीरामचरितमानस में पृथ्वी पर रावण के आतंक का वर्णन करते हुए कहते हैं कि असुर रावण के भय से जनता पथभ्रष्ट होकर अपने मूल सनातन धर्म से, वेद शास्त्रों द्वारा प्रणीत आचरण से दूर हो गई एवं लोग मात्र उदर पूर्ति और धन सम्पदा संग्रह को ही जीवन का लक्ष्य मानने लगे। धर्म के विपरीत आचरण करने लगे।

जेहि बिधि होइ धर्म निर्मूला। सो सब करहिं बेद प्रतिकूला।।

(1/183/5)

सुभ आचरन कतहुँ नहिं होई

(1/182/7)

बरनि न जाइ अनीति घोर निसाचर जो करहिं

(1/183)

समाज में अनीति बहुत ज्यादा बढ़ गई। अनीति बड़ा व्यापक आयाम रखती है। यह वह बोरा है जिसके अंदर भ्रष्टाचार, अनाचार, व्यभिचार सब कुछ भरा रहता है। आज भी समाज में जितनी अनीति व्याप्त है उसका पूरा पूरा वर्णन कोई नहीं कर सकता। लोग स्वार्थवश व्यवहार में, नौकरी में, व्यापार में लाभ की कामना से अनैतिक आचरण ही कर रहे हैं। मूल सनातन धर्म को मूल से ही उखाड़ने की निरन्तर कोशिश हो रही है। नए–नए भगवान पैदा हो रहे हैं। नए–नए गुरु पैदा हो रहे हैं। कुछ ही दशक पहले शनि को लोग क्रूर ग्रह मानते थे और शनि की मूर्ति का दर्शन भी नहीं करते थे। आज जगह–जगह शनि के मंदिर बनने लगे, पूजा हो रही है। महिलाएं परमात्मा की नहीं, शनि की पूजा करने का हक माँग रहीं हैं। गीताजी में कृष्ण कहते हैं कि हे अर्जुन! ईश्वर समस्त प्राणियों के हृदय में ही स्थित है।

ईश्वरः सर्वभूतानाम् हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति

उसी हृदय देश में स्थित ईश्वर की शरण में सम्पूर्ण भाव से जाओ।

'सर्वभावेन तमेव शरणं गच्छ'

मानस में गोस्वामीजी कहते हैं –

सखा परम परमारथु एहू। मन क्रम बचन राम पद नेहू।।

कौन राम? तो बताया –

रामु ब्रह्म ब्यापक अबिनासी

अयोध्यावासी जब चित्रकूट में श्रीरामजी को मनाने गए तो पूजा कर रहे थे –

गनप गौरि त्रिपुरारि तमारी

परन्तु रामराज्य की स्थापना के बाद वही लोग अपने बच्चों को सिखा रहे हैं –

भजहु प्रनत प्रतिपालक रामहि।

(7 / 30 / 2)

तो आज समाज से धर्म को समूल नष्ट करने की चेष्टा है या नहीं, धार्मिक सोच को पतित करने की भरपूर कोशिश की जा रही है –

मानस कथानुसार अनीतियों से, पापों से पृथ्वी जब अत्यन्त व्याकुल हुई तो गाय के रूप में समस्त देवताओं के पास सहायता माँगने पहुँची। देवता तो सदा के स्वार्थी हैं ही। अपनी नेतागीरी दिखाने उसे लेकर ब्रह्माजी के पास गए। शिवजी के पास नहीं गए, क्योंकि उनके पास प्रदर्शन के लिए कुछ है ही नहीं। वस्त्र की जगह उनके पास तो भभूत है। कोई दिखावे की सम्पदा नहीं है। फिर वे तो विध्वंस के महादेव हैं। जरा सोचिए अगर किसी किसान की बोई गेहूँ की फसल में खरपतवार बहुत ज्यादा बढ़ जाये तो उसे बीज की दुकान पर जाना चाहिए या निराई करने वाले के पास। ब्रह्माजी तो बीज की दुकान वाले हैं। खरपतवार अर्थात् दुष्ट प्राणियों के विनाश की भूमिका तो भगवान शिव की है। फिर भी बाबा भोलेनाथ अपनी पीड़ा का वर्णन बड़े मर्यादित शब्दों में गिरिजा से करते हैं और कहते हैं –

तेहिं समाज गिरिजा मैं रहेऊँ

मतलब कि बुलाए तो नहीं गए थे, किन्तु पृथ्वी की पीड़ा से द्रवित होकर मान अपमान का विचार छोड़ कर स्वयं ही उन छुट भय्ये देवता लोगों की भीड़ में मिल गए एकदम साधारण महत्वहीन बनकर। ब्रह्माजी ने जब समस्या को गौर से सुना और भगवान शिव के तिरस्कार को देखा तो हाथ खड़े कर दिए और कहा –

धरनि धरहि मन धीर कह बिरंचि हरिपद सुमिरु।
जानत जन की पीर प्रभु भंजिह दारुन बिपति।।

(1 / 184)

ब्रह्माजी ने पृथ्वी को परमपिता परमात्मा का स्मरण करने का संकेत किया जो जन–जन के हृदय में ही निवास करते हैं और सब की पीड़ा जानते हैं। उपचार भी वही करते हैं। उनके पास जाने के लिए नहीं कहा, लेकिन नेता लोगों का उत्साह देखिए। बोले कि पृथ्वी चलो प्रभु के पास चलते हैं तुम्हारी समस्या का

हल कराएँगे। फिर अपनी–अपनी बघारने लगे। कोई बोला प्रभु बैकुण्ठ में वास करते हैं। कोई बोला वे क्षीरसागर में रहते हैं। कोई कुछ तो कोई कुछ। बोलते जा रहे हैं, अपनी–अपनी नेतागीरी चमकाने के लिए शोर तो कर रहे हैं, लेकिन निर्णय नहीं कर पा रहे कि ठीक–ठीक कहाँ जाना चाहिए। सही बात तो यह है कि उनको निश्चित पता ही नहीं है। फिर महादेव इन छुटभय्ये नेताओं की पीड़ा से अपने आप द्रवित होते हैं और समस्या का समाधान सुझाने की कोशिश करते हैं, लेकिन बोलें तो बोलें कैसे। लोग मौका ही नहीं दे रहे हैं। शिवजी कहते हैं कि मुझे थोड़ा सा मौका (अवसर) मिला तो मैंने जल्दी से एक बात कह दी। कहना तो बहुत कुछ चाहता था, मगर नहीं कह पाया।

तेहिं समाज गिरिजा मैं रहेऊँ। अवसर पाइ बचन एक कहेऊँ॥

(1 / 185 / 4)

और वह भगवान शिव का एक वचन समस्त शास्त्रों का सार है –

हरि ब्यापक सर्बत्र समाना। प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना।

(1 / 185 / 5)

इतनी पीड़ा, इतने धैर्य का दर्शन तो भगवान शिव ही करा सकते हैं जो जगत की रक्षा के लिए हलाहल जैसे गरल को अपने कंठ में धारण करने की क्षमता रखते हैं। उन्हें कोटि–कोटि प्रणाम।

राहु काल

- शुभ कार्यों में विशेष रूप से त्याज्य है।
- इस विशेष काल में 1 घंटा 30 मिनट के लिये राहुकाल का अनिष्कारी समय होता है। किसी भी शुभ कार्य के प्रारम्भ में यथा संभव इस समय को टाल देना चाहिए।
- सोमवार – प्रातः 7.30 से 9.00 बजे तक
- मंगलवार – दोपहर बाद 3.00 से 4.30 बजे तक
- बुद्धवार – दोपहर 12.00 से 1.30 बजे तक
- गुरुवार – दोपहर 1.30 से 3.00 बजे तक
- शुक्रवार – प्रातः 10.30 से 12.00 बजे तक
- शनिवार – प्रातः 9.00 से 10.30 बजे तक
- रविवार – सायं 4.30 से 6.00 बजे तक

पैहहु सीतहि जनि पछिताहू

डॉ॰ सहृदय नारायण उपाध्याय, A-66 आवास विकास (नंदनपुरा) झाँसी, उ0प्र0

श्रीरामचरितमानस के हर प्रसंग में आध्यात्मिक एवं सामाजिक परिवेश के ऐसे गूढ़ रहस्य छिपे हुए हैं, जिन पर चिंतन–मनन करके अनुपालन करने पर भूलोक और परलोक दोनों सुधर सकते हैं। ऐसा ही एक प्रसंग सीताजी की खोज में निकले उन वानर समूह का है जो एक विबर में प्रवेश कर गए थे और वहाँ विराजमान तपस्विनी ने यह कहा था –

मूदहु नयन बिबर तजि जाहू। पैहहु सीतहि जनि पछिताहू।।

(4/25/5)

यह उपदेश व्यावहारिक तथा आध्यात्मिक रूप से उन परेशान साधकों के लिए है, जो अपने लक्ष्य के अन्वेषण में लगे रहते हैं और उनकी यात्रा धीरे धीरे आगे बढ़ती हुई अपने लक्ष्य पर पहुँच जाती है। संसार में ऐसे अनेक साधक हैं जो सीताजी की अर्थात् भक्ति की खोज में लगे हैं उनके लिए यह प्रसंग विशेष अनुकरणीय है। मानस में सीताजी को कहा गया है यथा –

सानुज सीय समेत प्रभु राजत परन कुटीर।
भगति ग्यानु बैराग्य जनु सोहत धरें शरीर।।

(2/321)

दूसरे रूप में शंकराचार्य जी सीताजी को शांति का स्वरूप मानते हैं –

'शांति सीता समां नीता आत्मा रामो विराजते'

तीसरे स्वरूप में सीताजी आदि शक्ति के रूप में प्रतिपादित हैं –

आदि शक्ति जेहि जग उपजाया। सो अवतरहि मोर यह माया।।

चौथे रूप में सीताजी को लक्ष्मी रूपा कहा गया है, क्योंकि उन्हीं के अंश से अगणित उमा, रमा और ब्रह्माणी जन्म लेती हैं।

जासु अंस उपजहिं गुनखानी। अगनित लच्छि उमा ब्रह्मानी।।

(1/148/3)

पांचवें रूप में सीताजी को गोस्वामीजी जग–जननी के रूप में मानते हैं –

जनकसुता जग जननि जानकी। अतिसय प्रिय करुना निधान की।।

(1 / 18 / 7)

अब विचार कीजिए ऐसा कौन होगा, जिसे उक्त पांचों रूपों में से सीताजी के किसी न किसी एक रूप की कामना न हो, अतः परोक्ष रूप से संसार के सारे लोग सीताजी के अन्वेषण में लगे हुए हैं।

एक महत्वपूर्ण तथ्य विचारणीय है कि किसी के जीवन से सीता अर्थात् उपर्युक्त प्रकार से वर्णित भक्ति, शांति, शक्ति और लक्ष्मी निकल कैसे जाती है। भगवान राम सीता बड़े आनंद से दंडक वन में रह रहे हैं। यद्यपि अभी अभी प्रभु चित्रकूट के वन से आकर यहाँ निवास बनाए हैं। वास्तव में चित्रकूट तो प्रेम का वन है, परन्तु दंडकवन तो संशय का वन है और जब कोई संशय के वन में निवास करेगा तो एक न एक दिन उसकी शांति, शक्ति, भक्ति या लक्ष्मी खो ही जाएगी। तुलसीदासजी ने दंडक वन को "संसय बिपिन अनल सुर रंजन" कहा है। प्रभु तो वास्तव में नर लीला करते हुए हम मनुष्यों का मार्ग दर्शन ही कर रहे हैं। यही आध्यात्मिक चेतना का संवेदीकरण है। जीवन से शांति, भक्ति और लक्ष्मी का दूर हो जाने में मोह ही प्रमुख कारण है। जब रावण सोने का हिरन बना कर मारीच को लाता है तब उसे देख कर सीताजी तुरंत भगवान राम से कहती हैं –

सत्यसंध प्रभु बधि करि एही। आनहु चर्म कहति बैदेही।।

(3 / 27 / 5)

किसोरीजी को सोने का प्रलोभन आ गया और अपने पास में बैठे ईश्वर को उस हिरन के पीछे लगा दिया। यही तो हम सब के जीवन में हो रहा है। विभिन्न प्रलोभनों के पीछे हम अपनी साधना (भगवान) को लगाए हुए है अर्थात् मोह रूपी रावण ने प्रलोभन देकर हम सबकी शांति, भक्ति, शक्ति और लक्ष्मी को चुरा लिया है, क्योंकि हमने ही ईश्वर को प्रलोभन के पीछे लगाया है। राजा प्रतापभानु जब वन में शूकर के पीछे शिकार के लिए भागता है तब गोस्वामीजी लिखते है :–

अति अकेल बन बिपुल कलेषू। तदपि न मृग मग तजइ नरेसू।।

(1 / 157 / 6)

अति अकेल का अर्थ है कि जहाँ भगवान भी साथ छोड़ दें क्योंकि प्रलोभन में ईश्वर साथ छोड़ देते हैं।

जिस मोह ने प्रलोभन दिया उसी ने शांति का अपहरण कर लिया, अतः हमें उन कामनाओं को जो संसार में काम, क्रोध, लोभ आदि से उत्पन्न हुई हैं, ईश्वर को ही सौंप देना चाहिये और नारदजी की तरह ऐसी प्रार्थना करनी चाहिये।

जेहि बिधि नाथ होइ हित मोरा। करहु सो बेगि दास मैं तोरा।।

(1 / 132 / 7)

यदि कामना पूरी हो जाये तो प्रभु कृपा और यदि न हो तो हरि इच्छा यह भावना ही सर्वोत्तम है, किंतु जब हम प्रत्येक कामना में ईश्वर को आग्रह पूर्वक डालेंगे तो वे हमसे दूर चले जाएंगे।

मानस में भगवान राम सीताजी के हरण के उपरांत नर लीला करते हुए लोक कल्याण के लिए खोई हुई सीता का पता लगाते हैं। यद्यपि यह दार्शनिक तथ्य है कि माया, ब्रह्म (ईश्वर) तथा भक्ति कभी अलग नहीं हो सकते है फिर भी गीधराज द्वारा सीताजी का पता प्रभु को इंगित किया गया है, क्योंकि श्रीरामजी नीति का पालन करते हैं। मानस में लिखा है –

नीति प्रीति परमारथ स्वारथु। कोउ न राम सम जान जथारथु॥

(2 / 254 / 5)

भगवान श्रीराम सीताहरण की घटना को सबका दुःख तथा उसके लिए जन युद्ध का वातावरण बनाना चाहते हैं, ताकि लोग अन्याय के विरोध में समाज में लड़ना तो सीखें अन्यथा सबल हमेशा निर्बल को प्रताड़ित ही करता रहेगा। उक्त घटना पर यदि केवल भगवान ही लड़ते तो वह व्यक्तिगत रह जाती। फिर अन्याय के प्रति जन साधारण संघर्ष न करता। प्रभु सीता हरण के बारे में सबरी से भी पूछते हैं –

जनकसुता कइ सुधि भामिनी। जानहि कहु करिबर गामिनी॥

(3 / 36 / 10)

सबरी कहती है –

पंपा सरहि जाहु रघुराई। तहँ होइहि सुग्रीव मिताई॥

(3 / 36 / 11)

पम्पापुर जाने पर भगवान की मित्रता सुग्रीव से हुई तथा सीता की खोज के लिए वानरों का एक दल दक्षिण दिशा में भेजा गया, जिसके नायक अंगदजी थे।

चले सकल बन खोजत सरिता सर गिरि खोह।
राम काज लयलीन मन बिसरा तन कर छोह॥

(4 / 23)

वैसे तो संसार में लोग विभिन्न दिशाओं में शांति या भक्ति की खोज में यात्रा कर ही रहे हैं, पर दक्षिण दिशा में वही लोग यात्रा करते हैं जो मौत से नहीं डरते हैं या जो मृत्यु भय को जीत चुके है, क्योंकि गीधराज द्वारा रावण का गमन इसी दिशा में बताया गया है –

लै दच्छिन दिसि गयउ गोसाई। बिलपति अति कुररी की नाई॥

(3 / 31 / 3)

दक्षिण दिशा यमराज की दिशा है, जिससे अर्थात् मृत्यु से लोग जीवन भर भयभीत बने रहते हैं। जितने लोगों ने इस दिशा में गमन किया वे सभी तो सफल नहीं होते पर गोस्वामीजी कहते हैं कि लक्ष्य के सापेक्ष यदि आपकी यात्रा भगवान के साथ है तो यात्रा व्यर्थ नहीं जाएगी। कभी न कभी तो लक्ष्य मिल ही

जाएगा। वानरों की यात्रा पर विचार कीजिए। अन्य दिशाओं वाले वानर तो लौट आते हैं, क्योंकि उनमें लक्ष्य का निर्धारण नहीं था तथा मृत्यु भय भी था। दक्षिण दिशा वाले यद्यपि यात्रा कि मध्य में व्याकुल होकर कई जगह अटक तथा भटक जाते हैं, पर हनुमानजी जैसे संत से उन्हें सही मार्गदर्शन मिलता है तथा लक्ष्य प्राप्ति हो जाती है। आध्यात्मिक रूप से भक्ति प्राप्ति की साधना यदि एक बार में नहीं हो अर्थात् यदि एक जन्म में पूरी नहीं होती तो निराशा न आने दें। संत व भगवंत की कृपा से लक्ष्य किसी न किसी जन्म में अवश्य मिल ही जाएगा। आवश्यकता इस बात की है कि साधन में निष्क्रियता न आने दें तथा संत एवं भगवंत का साथ भी न छोड़ें। मानस का संबल आपको भटकने नहीं देगा। हम अपने आप को जरा मानस दर्पण में देखें कि वानरों की तरह हम भी अटक या भटक तो नहीं गए हैं। साधन करते करते वानरों की तरह साधन पर से जब विश्वास जाने लगे, तब किसी संत के वचन लक्ष्य की ओर बढ़ाते हैं। सभी वानर जब चलते चलते थक गए तथा प्यास भूख से व्याकुल हो गए तब हनुमानजी ने ही उन्हें उस विबर का मार्ग बताया जहाँ से वे आगे लक्ष्य की ओर अग्रसित हुए –

मन हनुमान कीन्ह अनुमाना। मरन चहत सब बिनु जल पाना।।
आगें कै हनुमंतहि लीन्हा। पैठे बिबर बिलंबु न कीन्हा।।

(3/24/4, 8)

वास्तव में जब तक व्यक्ति साधना का प्रतिफल अच्छा पाता है, उसे भगवान पर अटूट विश्वास होता है, पर जैसे ही कोई विपत्ति आ जाती है तो सारी साधना पर से विश्वास उठने लगता है। यह एक अच्छे भक्त का लक्षण नहीं है। साधना में संकट भी भगवान की कृपा से मिट जाएँगे। धैर्य धारण करते हुए भगवान पर विश्वास करें। दूसरों से कभी कोई आशा न कर केवल भगवान से ही आशा पूरी करने का ध्येय रखें –

एक भरोसो एक बल एक आस बिस्वास।
एक राम घनस्याम हित चातक तुलसीदास।।

हनुमानजी का वानरों की सहायता करना ही भगवान के प्रति अटूट विश्वास है। उनको कठिनाई भरी, अँधेरी–प्रकाशहीन गुफा में ले जाते हैं। उसमें हनुमानजी भगवत कृपा का स्रोत खोज लेते हैं, क्योंकि उन्हें तो पक्का विश्वास है जो कष्ट प्रभु देंगे उसके साथ में उनका कृपा रूपी समाधान भी अवश्य मिलेगा। यह केवल धैर्य तथा विश्वास की परीक्षा है। स्वयंप्रभा ने वानरों को यही सन्देश दिया। वानर साधक हैं और जब साधना से व्याकुल हो गए तो जैसा कि नाम है, स्वयंप्रभा (माने प्रबल आत्मविश्वास) ने उन्हें सँभाला और कहा –

तेहिं तब कहा करहु जल पाना। खाहु सुरस सुन्दर फल नाना।।

(4/25/2)

तत्पश्चात् स्वयंप्रभा ने कहा कि सीताजी की खोज कैसे करोगे। वानरों ने कहा हम प्रयास करते रहेंगे तब स्वयंप्रभा बोलीं कि अब आँखें खोल कर नहीं, बंद करके खोजो –

मूदहु नयन बिबर तजि जाहू। पैहहु सीतहि जनि पछिताहू।।

(4/25/5)

वानरों ने बात मान कर आँखें बंद कर लीं तो अपने को समुद्र के किनारे पाते हैं और तब तो और अधिक मुसीबत में फँस जाते हैं वहाँ पर सम्पाती नाम का गीध मिल जाता है जो कहता है –

आजु सबहि कहँ भच्छन करऊँ। दिन बहु गए अहार बिनु मरऊँ॥

(4/17/3)

वास्तव में वानर स्वयंप्रभा की बात का पूरा यथार्थ समझे ही नहीं थे, उन्होंने तो अंतर मुख होकर इन्द्रिय निग्रह करने की बात कही थी, पर वानरों ने केवल आँख बंद करके ही अपने काम की इतिश्री समझ ली थी। इस विषम परिस्थिति में अंगदजी ने सबकी जान बचाई। उन्होंने गीध जाति के ही जटायु की प्रशंसा की –

कह अंगद बिचारि मन माहीं। धन्य जटायू सम कोउ नाहिं॥

(4/27/7)

जटायु की बात आते ही सम्पाती मित्रवत व्यवहार करने लगा तथा सीताजी का पता भी बताने लगा। विचारणीय है कि वानरों पर दो बार प्राणों का संकट गहराता है। पर दोनों बार भगवद् कृपा दो तरह से आई। प्रथम हनुमानजी द्वारा विश्वास के रूप में और दूसरी बार अंगदजी द्वारा विचार के रूप में, अतः विश्वास और विचार साधना पथ के पाथेय हैं। साधक को मत्यु के भय का संस्कार कहीं न कहीं बना ही रहता है जो वानरों में सम्पाती के स्वर के रूप में प्रकट हो गया, पर अंगद की सांकेतिक वाणी सुनकर वानरों में जीवन ही नहीं, मृत्यु में भी जटायु की तरह सार्थकता लगने लगी।

वानरों को इस यात्रा में दो गुफाएँ मिलती हैं – एक स्वयंप्रभा की तथा दूसरी सम्पाती की। वैसे तो किष्किन्धा काण्ड गुफाओं का ही काण्ड लगता है। पहली गुफा तो भगवान को देवता ही निर्मित करके देते हैं –

प्रथमहि देवन्ह गिरि गुहा राखेउ रुचिर बनाइ।
राम कृपानिधि कछु दिन बास करहिंगे आय॥

(4/12)

यह गुफा तो भगवान के बिराजने के लिए चित्त की गुफा है। दूसरी गुफा जिसमें बालि प्रवेश कर जाता है मायावी को मारने के लिए। फिर सुग्रीव पर क्रोधित हो जाता है। यह गुफा अहंकार की गुफा है। तीसरी गुफा मन की गुफा है, जिसमें स्वयंप्रभा बैठी है। इस गुफा में ईश्वर के प्रति विश्वास फलीभूत होता है। चौथी गुफा वह है, जिसमें सम्पाती बैठा है। यह बुद्धि की गुफा है। इसमें विचार ही फलीभूत हो सकता है जैसा कि अंगदजी ने किया था। इस प्रकार से वानरों को दो गुफाएँ मिलती हैं पर उनमें बहिरंग भिन्नता का आभास होते हुए भी एकता का रहस्य छिपा है। भले ही पहले उन्हें स्वयंप्रभा द्वारा आँखें बंद करने को कहा गया और बाद में सम्पाती आँखें खोलने को कहता है, पर दोनों का उद्देश्य एक ही है लक्ष्य की प्राप्ति। संपाती वानरों से कहता है –

मैं देखउँ तुम्ह नाहीं गीधहि दृष्टि अपार।
बूढ़ भयउँ न त करतेउँ कछुक सहाय तुम्हार।।

(4 / 28)

दोनों गुफाओं से वानरों को सन्देश यही मिलता है कि सीताजी को कैसे खोजोगे। आँख बंद करने का सन्देश हनुमानजी ने सटीक ग्रहण किया, क्योंकि जब सब वानर अंगद के साथ इस उधेड़ बुन में थे कि कौन समुद्र पार जाएगा, तब हनुमानजी अंतरमुखी होकर राम भजन कर रहे थे। उस समय यह स्थिति थी –

निज निज बल सब काहूँ भाषा। पार जाइ कर संसय राखा।।

(4 / 29 / 6)

अन्य वानरों ने तो अच्छी तरह से सम्पाती का सन्देश भी नहीं सुना होगा, क्योंकि सब अपना–अपना बल कहने लगे। पूरे संवाद पर विचार करेंगे तो लगेगा कि सम्पाती वास्तव में सन्देश तो राम कृपा और राम काज का दे रहा था। सम्पाती ने कहा था –

मोहि बिलोकि धरहु मन धीरा। राम कृपाँ कस भयउ सरीरा।।

(4 / 29 / 2)

हनुमानजी को जब अंतर मुखता से लोगों ने जगाया तथा राम काज याद दिलाया तो, यद्यपि सम्पाती की बात नहीं सुनी होगी, फिर भी उसके उपदेशों को लगता है हनुमानजी पहले से ही आत्मसात किए थे, अतः उन्हीं को भगवान की कृपा भरपूर मिली। पूरी यात्रा में हनुमानजी भगवान पर विश्वास तथा विवेक को बनाए रखे। इस प्रकार से भगवत् विश्वासी एवं विवेकी जन ही सफलता प्राप्त कर पाते हैं।

यहाँ पर विचारणीय है कि क्या अन्य को साधना छोड़ देनी चाहिए। नहीं कभी नहीं, साधना में ईश्वर पर विश्वास तथा विवेक सदैव बनाए रखना चाहिए, तभी सफलता मिलेगी तथा हनुमानजी जैसे सन्त मिल जायें तो फिर उन्हें कभी नहीं छोड़ना चाहिए, क्योंकि भले ही हनुमानजी के अलावा अन्य कोई वानर सफल नहीं हुए, पर सबके सब केवल समुद्र के किनारे हनुमानजी की प्रतीक्षा करते रहे और उनके आने पर उन्होंने भी लक्ष्य प्राप्ति का आनंद उठाया –

हरषे सब बिलोकि हनुमाना। नूतन जन्म कपिन्ह तब जाना।।

(5 / 28 / 3)

हनुमानजी ने सबको सीताजी के दर्शन का आश्वासन दिया तथा सीताजी का पता बता कर सबके प्राण भी बचाए। इसी प्रकार किसी संत के सहारे हम भी लक्ष्य तक पहुँच जाएंगे। इस प्रसंग में मानस का मन्त्र है **'मूदहू नयन'** अर्थात् अंतर मुखी होइए तथा अगर अभी तक सीताजी अर्थात् भक्ति की खोज नहीं की तो **'जनि पछिताहू'**। अब प्रारंभ कर दीजिए विश्वास और विवेक की सहायता से हनुमानजी जैसे संत लक्ष्य तक पहुँचा देंगे।

रिपु सूदन पद कमल नमामी

पं0 दिनेश चन्द्र शर्मा
अध्यक्ष

बालकाण्ड में गोस्वामी तुलसीदासजी ने श्रीरामचरितमानस के सभी पात्रों की संक्षिप्त रूप में वंदना एवं महिमा गाई है। इस प्रसंग के माध्यम से ही 'मानस' के प्रत्येक पात्र की विशद व्याख्या की जा सकती है, क्योंकि यह समस्त पात्रों की पात्रता की सूची है। जैसे शरीर का आधार प्राण है, भवन का आधार नींव है, श्रीकृष्ण चरित्र एवं श्रीमद्भागवत की परमाधार श्री राधाजी हैं, वैसे ही श्रीरामचरित का परमाधार श्रीशत्रुघ्नजी का भी चरित्र है। श्रीरामचरितमानस के वंदना प्रकरण में गोस्वामी तुलसीदास श्रीशत्रुघ्न की वंदना करते हुए कहते हैं कि –

रिपुसूदन पद कमल नमामी। सूर सुसील भरत अनुगामी।।

(1/17/9)

अर्थात – मैं उन श्री शत्रुघ्नजी के चरण–कमलों में नमन करता हूँ जो सूर, सुशील एवं भरत अनुगामी हैं। शत्रुघ्न जी की यह संक्षिप्त वन्दना, अल्प शब्दों में होते हुए भी अत्यधिक गंभीर अर्थों से पूर्ण है। शत्रुघ्न के रूप में इनका नामकरण अनोखा सा प्रतीत होता है। शत्रुघ्न शब्द का अर्थ शत्रु को विनष्ट करने वाला है।

शत्रुघ्न नाम की सार्थकता यदि किन्हीं पात्रों से हो सकती थी तो वे पात्र थे श्रीराम, श्रीलक्ष्मण अथवा श्रीभरत, किन्तु यह अद्भुत व्यंग्य जान पड़ता है कि जिन श्रीशत्रुघ्न ने जीवन में कभी युद्ध नहीं किया उन्हें ही शत्रुघ्न नाम दिया गया। सबसे छोटे राजकुमार का शत्रुघ्न नाम रखते हुए गुरु वसिष्ठ ने इस नाम की व्याख्या इस प्रकार की है –

जाके सुमिरन तें रिपु नासा। नाम सत्रुहन बेद प्रकासा।।

(1/197/8)

जिसके स्मरण मात्र से ही शत्रुओं का नाश हो जाता है, वे वेद प्रकाशित श्रीशत्रुघ्न हैं। श्रीरामचरितमानस की दृष्टि में शत्रु केवल बाहर ही नहीं हैं, अपितु व्यक्ति के अन्तःकरण में भी हैं, अतः सच्चा वीर वह है जो अन्तःकरण के शत्रुओं पर भी विजय प्राप्त कर लेता है। यद्यपि सभी आन्तरिक शत्रु बड़े प्रबल हैं, पर इनमें भी सर्वाधिक भयावह शत्रु अहंकार है। शत्रुघ्न ने इस महान शत्रु को सच्चे अर्थों में परास्त किया। व्यक्ति का अहंकार स्वयं को लोगों के समक्ष लाने के लिये सर्वदा उत्सुक रहता है। अहंकारी व्यक्ति निरन्तर प्रशंसा का भूखा और आत्म प्रदर्शन की प्रवृत्ति से प्रेरित होता है, परन्तु शत्रुघ्न ने कभी भी स्वयं को आगे लाने की चेष्टा ही नहीं की और इसका सांकेतिक रूप गोस्वामी तुलसीदास का परम काव्य कौशल एवं शत्रुघ्न चरित्र की महत्ता है, क्योंकि –

सेवा रूपी शत्रुहन, भरत भगति के रूप।
ज्ञान रूप रघुवंशमणि लखन विराग स्वरूप।।

संक्षेपतः सूर, सुशील, भरत अनुगामी तीन विशेषणों द्वारा शत्रुघ्न चरित्र का वर्णन किया गया। श्री शत्रुघ्न जी के इन तीन विशेषणों के पूर्व उनके नाम द्वारा भी चरित्र का वर्णन किया गया, जो कि रिपुसूदन शब्द से अभिप्रेत है।

रिपुसूदन :- "शत्रुघ्नोः नित्य शत्रुघ्नोः" वाल्मीकि रामायण में वर्णन है शत्रुघ्न जी वास्तव में षड् विकारों के विनाशक हैं। ये षड् विकार तो –

मुनि बिग्यान धाम मन करहिं निमिष महुँ क्षोभ।

(3/38 क)

संसार में प्राणी बाहरी शत्रुओं से तो बच सकता है किन्तु भीतरी शत्रु काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद, मत्सरादि से नहीं बच सकता। सन्त लोग तो – **षड् विकार जित अनघ अकामा,** होने के लिए पूर्ण प्रयास करते हैं, फिर भी कभी–कभी इनका प्रभाव उन पर पड़ ही जाता है। इसी कारण से भरतजी ने शत्रुघ्न को सर्वदा साथ रखा कि इनके साथ रहने पर षड् विकार नष्ट होते रहेंगे, फिर किसी प्रकार के भय की बात नहीं रहेगी, क्योंकि साधु को तो सर्वप्रथम– **षड् विकार जित अनघ अकामा**, होना ही परमावश्यक है। शत्रुघ्नजी को साथ रखने के कारण भरत समस्त विकारों पर विजय प्राप्त करके परम साधु कहलाए। वास्तव में मंथरा साधारण शत्रु नहीं है, अपितु चक्रवर्ती महाराज दशरथ की सारी राजनीति इसकी छोटी सी नीति के सामने परास्त हो जाती है। कार्य भी इसने छोटा नहीं किया। अपितु **'घालेसि सब जग बारह बाटा'** यथा –

नामु मंथरा मंदमति चेरी कैकइ केरि।
अजस पेटारी ताहि करि गई गिरा मति फेरि॥

(2/12)

अन्तर्दृष्टि से अयोध्या की यह परम शत्रु है। इसका चरित्र खल नायिकाओं में बड़ा ही महत्वपूर्ण है।

सूर : अकेली मन्थरा ने महाराज दशरथ के राज्य में इतना बड़ा अनर्थ करा डाला। आज तो घर–घर में इस प्रकार की मन्थरायें मिलेंगी तब राष्ट्र का क्या होगा? इन मन्थराओं ने देश को बर्बाद कर डाला है। श्रीराम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, कौसल्या, सुमित्रा, कैकेयी, दशरथ जी, श्री वसिष्ठ जी आदि सर्वगुण सम्पन्न लोगों के संग का भी प्रभाव इस मंथरा पर नहीं पड़ा, अपितु इसकी कुटिल नीति का प्रभाव सब पर पड़ा, तो क्या यह साधारण शत्रु थी?

श्रीशत्रुघ्न ने सोचा अभी इसकी नीति का श्रीगणेश मात्र ही है और इतना प्रभाव। कहीं आगे और भी भयंकर दुष्परिणाम न भोगना पड़े, अतः इसे दंड देकर ठीक कर देना चाहिए। यद्यपि श्री लक्ष्मणजी भी इससे सावधान रहते थे, किन्तु राज्याभिषेक की तैयारी में इसकी ओर से ध्यान हटा और इतनी ही देर में इसने अपना चमत्कार दिखा दिया! **दीन्ह लखन सिख अस मन मोरे,** लक्ष्मणजी इसकी कुटिलता को समझ तो गये थे, किन्तु वन जाते समय दंड देने की इच्छा होने पर भी दंड नहीं दे पाये थे। उनके (शेष) के शेष कार्य को विशेष रूप से शत्रुघ्न जी ने पूरा किया, क्योंकि लघु भाई तो उनके ही ठहरे –

तेहि अवसर कुबरी तहँ आई। बसन बिभूषन बिबिध बनाई।
लखि रिस भरेउ लखन लघु भाई। बरत अनल घृत आहुति पाई॥

हुमगि लात तकि कूबर मारा। परि मुह भर महि करत पुकारा।।
कूबर टूटेउ फूट कपारू। दलित दसन मुख रुधिर प्रचारू।।

(2/163/2–5)

अन्तर्दृष्टि से अयोध्या की मूल शत्रु मंथरा को शत्रुघ्न ने दंड दिया, क्योंकि वह रामराज्य की बाधिका थी। इसी प्रकार बाह्य दृष्टि से शूर्पणखा भी रामराज्य की बाधिका थी, जिसको बाह्य शत्रु नाशक लक्ष्मण जी ने दंड दिया। शत्रुघ्न जी मंथरा को यही सोचकर चित्रकूट भी नहीं ले गये कि वहाँ पर भी किसी प्रकार का अनर्थ न कर दे। साथ ही साथ एक बात चित्रकूट न ले जाने में यह भी थी कि **'कूबर टूटेउ फूट कपारू'** हो जाने पर जाती भी कैसे?

भयउ पाखु दिन सजत समाजू। तुम्ह पाई सुधि मोहि सन आजू।।

(2/19/3)

मंथरा स्पष्ट झूठ बोल रही है और अपने दंड विधानार्थ भी कह रही है कि –

जौं असत्य कछु कहब बनाई। तौ बिधि देइहि हमहि सजाई।।

(2/19/5)

फोरै जोगु कपारु अभागा,

(2/16/2)

जैसी बोली उसके अनुसार फल भी वैसा ही मिला। विधि ब्रह्मावतार श्री शत्रुसूदन जी ने दंड दिया। जिस मुख कूबर, सिर के द्वारा उसने अनर्थ किया ब्रह्मा (रिपुसूदन) जी ने उन्हीं अंगों को समुचित दंड दिया। न्याय भी यही था, क्योंकि रिपुसूदन होने के साथ ही साथ सूर (वीर) भी तो हैं।

सुशील :- दूसरा विशेषण है 'सुशील' वास्तव में शत्रुघ्न ऐसे सुशील हैं कि परिवार पुरजन, प्रजाजन एवं गुरुजनों के सामने कभी बोले ही नहीं, क्योंकि इनके बोलने के दायित्व को इनके तीनों भाई विशेष कर समीपस्थ बन्धु श्री भरत ही निभा लेते थे। अपने गुरुजनों की जो आज्ञा हुई उसको तुरन्त ही पालन किया। तर्क तो किया ही नहीं, क्योंकि –

गुर पितु मातु स्वामि हित बानी। सुनि मन मुदित करिअ भलि जानी।।
उचित कि अनुचित किएँ बिचारू। धरमु जाइ सिर पातक भारू।।

(2/177/3–4)

वास्तव में इन सिद्धान्तों को जीवन में शत्रुघ्नजी ने क्रियात्मक रूप में संसार के सामने करके दिखाया। यद्यपि लक्ष्मणजी भी काल कर्म वश विवश होकर आज्ञा पालन नहीं कर पाये, किन्तु शत्रुघ्न ने अपने दायित्व का पूर्ण सफलता के साथ निर्वाह किया। श्री लक्ष्मण जी को प्रभु ने आज्ञा दी कि –

सीता केरि करेहु रखवारी। बुधि बिबेक बल समय बिचारी।।

(3/27/9)

फिर भी लक्ष्मणजी सीता की रक्षा न कर सके। सीताहरण हो ही गया। परिणाम स्वरूप श्रीराम ने लक्ष्मण को आज्ञोल्लंघन दोष लगा ही दिया –

जनकसुता परिहरिहु अकेली। आयहु तात बचन मम पेली।।

(3 / 30 / 2)

किन्तु शत्रुघ्नजी को श्रीराम द्वारा आज्ञा दी गई कि –

सीलसिंधु सुनि गुर आगवनू। सिय समीप राखे रिपुदवनू।।

(2 / 243 / 1)

पूर्ण रक्षा के साथ ही साथ उन्हें सावधान भी नहीं करना पड़ा, ये सेवा में स्वयं ही परम सावधान हैं।

मौन का कारण :– वास्तव में मौन से ही अजात शत्रुता होती है। जो बोलेगा ही नहीं उसका कोई शत्रु होगा ही नहीं। **'बोल्यो और मरयो'** कहावत प्रसिद्ध ही है। संसार में सारे झगड़े की मूल जीभ ही है। इस पर नियन्त्रण जिसने कर लिया उसे कहीं पर भी किसी प्रकार के राग द्वेषादि बन्धन नहीं बांध सकते। इसी कारण इस मर्म के मर्मज्ञ सन्त मौन व्रत धारण करते हैं, क्योंकि **'मौनं सर्वार्थ साधनम्'** यही शत्रुघ्नजी के जीवन का परम लक्ष्य था। मौन रहने का दूसरा कारण यह भी है कि शत्रुघ्न अर्थ हैं, श्रीराम मोक्ष, श्री भरत धर्म और श्री लक्ष्मण काम के प्रतीक हैं, तो अर्थ का बोलना अनर्थ कारक होता है, अर्थ के बोलने पर भाई, पिता, मित्र, पड़ौसी, राजा, चोर, डाकू सभी लोग द्वेष करने लगते हैं। जहाँ भी अर्थ बोला वहीं अनर्थ हुआ प्रायः ऐसा देखा गया। सभी भाइयों के परम दुलारे लाडले वीर हैं न शत्रुघ्नजी, इसीलिए सभी ने समस्त दायित्व तो संभाल ही लिया था। इस कारण बड़े भाइयों के बीच में इनके बोलने की कोई आवश्यकता ही नहीं थी। केवल – **आज्ञा सम न सुसाहिब सेवा,** व्रत का ही सावधानी से पालन किया। यह तो वास्तव में इनकी सुशीलता का ही उज्ज्वल उदाहरण है, क्योंकि श्रीराम, लक्ष्मण, भरत क्रमशः मोक्ष, काम, धर्म रूप हैं। धर्मार्थ काम मोक्ष के मूल में अर्थ ही गुप्त रूप से कार्य करता है।

भरत अनुगामी :– शत्रुघ्न भरतजी की सेवा काया की छाया की भाँति ही करते रहे। समस्त भरत चरित्र शत्रुघ्न चरित्र है, क्योंकि भरत अनुगामी जो ठहरे। जो अग्रगामी का चरित्र होगा वही तो अनुगामी का होगा। भरत जी का सारा कार्य शत्रुघ्न करते रहे तो ये वस्तुतः प्रतिबिम्ब हैं, श्रीभरतजी बिम्ब हैं। जो बिम्ब का चरित्र है वही प्रतिबिम्ब का होगा। श्रीभरतजी तो राज्य से सर्वथा अनासक्त होकर नन्दिग्राम में साधनारत हैं –

मागि मागि आयसु करत राज काज बहु भाँति।

(2 / 325)

इस भाव की पूर्ण चरितार्थता तो इन्होंने ही की है, क्योंकि यही कार्यवाहक राष्ट्राध्यक्ष (राजा) 14 वर्षों के लिए थे। प्रधान के सारे दायित्व को उपप्रधान ही निभाता है। सत्य तो यह है जैसे श्रीराम–यश पताका का लक्ष्मणजी का यश दंड बना, उसी प्रकार श्रीभरत यश–पताका का शत्रुघ्न यश दंड न बनता तो फिर भरत यश पताका का पता कैसे चलता? श्रीशत्रुघ्न चरित्र को समुचित रूप में समझने के लिए गोस्वामीजी के द्वारा इनकी महिमा वर्णन में– **सूर, सुशील भरत अनुगामी** तीनों विशेषणों को गम्भीरता से अध्ययन कवि के मन्तव्य के साथ करना चाहिए। गोस्वामी जी की दृष्टि से तीनों ही विशेषण परम साभिप्राय है।

एहि महँ रुचिर सप्त सोपाना

श्रीमती राजवती देवी शर्मा
116, जी.जी. हॉस्टल वाली गली-1, होशियारपुर, सैक्टर-51, नोएडा। मो0 : 9311384212

वर्तमान समय में स्वार्थ की कर्मनाशा उमड़ रही है। उसकी बाढ़ ने समूचे देश को अपनी चपेट में ले लिया है। परिणाम स्वरूप स्वार्थी सत्तालोलुपों ने मानव–मूल्यों की धज्जियाँ उड़ा दीं, धर्म–संस्कृति को पैरों तले रौंद दिया और मानवता का जनाजा निकाल दिया। रामराज्य के बजाय जंगल राज्य हो गया। व्यवस्था चरमरा गयी, अनुशासन भंग हो गया, संयम के तार टूट गये। सुरसा के मुख जैसी निरन्तर बढ़ती दानवता देश को निगलती जा रही है।

आज देश में सर्वत्र रिश्वत–तस्करी–दलाली का बाजार गरम है। बेईमानी और धोखाधड़ी फलफूल रही है। लूट, डकैती, चोरी, अपहरण, अत्याचार, व्यभिचार जैसी आपराधिक घटनायें बढ़ रही हैं। अन्याय, शोषण चरम पर है, घोटालों ने देश का दिवाला निकाल दिया है, हिंसा का नग्न तांडव हो रहा है। सत्य, न्याय, सच्चरित्रता जैसे गुण पैसों से बिक रहे हैं। नारी–कल्याण और नारी–उत्थान की आड़ में नारी का शोषण आज भी जारी है। वह भले ही ज्ञान, विज्ञान, कला, राजनीति, व्यवसाय में छा गयी हो; मगर घर से लेकर हर कहीं चाहे घर हो या बाहर, विद्या मंदिर हो या छात्रावास, राजनीति–मंच हो या रंगमंच, दफ्तर हो या व्यवसाय, संतों के अखाड़े हों या नेताओं की पार्टियां, क्लब हों या पंचतारा होटल– हर स्तर पर नारियों का मानसिक और शारीरिक शोषण हो रहा है। आये दिन अपहरण और बलात्कार के कांड हो रहे हैं। यहाँ तक कि देश की राजधानी दिल्ली तक में माँ–बहिनों का घर से बाहर निकलना असुरक्षित हो गया है।

ऐसी विषम परिस्थितियों में रामभक्त संत तुलसीदास द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस हमारा मार्गदर्शन कर सकता है। इसमें वर्णित व्यावहारिक शिक्षा–ग्रहण करने से भटके समाज का हृदय–परिवर्तन हो सकता है। भगवान श्रीराम की भक्ति समाज को सन्मार्ग दिखा सकती है और श्रीराम की पावन भक्ति प्राप्त करने के लिये श्रीरामचरितमानस के सात कांड सात सुन्दर सोपान (सीढ़ियाँ) हैं। उन्हीं सोपानों पर प्रकाश डालना इस लेख का उद्देश्य है –

एहि महँ रुचिर सप्त सोपाना। रघुपति भगति केर पंथाना॥

(7 / 129 / 3)

1. बालकांड : श्रीरामचरितमानस के प्रथम कांड का नाम बालकांड है। इस कांड में भगवान श्रीराम की बड़ी ही मधुर, मनोहर बाल लीलाओं का सजीव वर्णन है, इसलिये इस कांड का नाम बालकांड रखा है। इस कांड से हमें यह शिक्षा मिलती है कि जैसे बालक राम बड़े ही निर्मल मन वाले थे। उनमें लेशमात्र भी

छल, कपट, अभिमान, अहंकार नहीं था। उनका बहुत ही कोमल, सरल स्वभाव था। शिष्टाचार तो उनमें कूट–कूट कर भरा था। वे अपने माता–पिता तथा गुरुजनों की श्रद्धा और भक्ति भाव से सेवा करते तथा छोटों से स्नेह करते, वैसे ही हम भी उनकी तरह निर्मल मन वाले, निर्विकार और निर्दोष बनें। उन्हीं की तरह आदर्श पुत्र और गुरुभक्त बनें।

2. अयोध्याकांड : *'अ युध्यः इति अयोध्या'* अर्थात जहाँ कोई युद्ध न हुआ हो, उसे अयोध्या कहते हैं। यदि हमारे अन्तर्हृदय की प्रवृत्तियों में कलह और विषमता न हो तो हमारा हृदय भी अयोध्या है। युद्ध स्वार्थ और असंतोष के कारण होते हैं। प्रायः स्वार्थी और असंतोषी राजा लोग अपने राज्य और कोष को बढ़ाने के लिये दूसरे राजाओं पर चढ़ाई कर देते और उन्हें युद्ध में जीत कर उनके राज्य और खजाने को हड़प लेते, लेकिन अयोध्या में इसके विपरीत दो भाई एक दूसरे के लिये विपुल राज्य–लक्ष्मी को ठुकरा देते हैं। बड़ा भाई छोटे भाई के लिए अयोध्या का राज्य त्याग कर प्रसन्न मन वन चला जाता है तो छोटा भाई अपने आदर्श बड़े भाई को मना कर लौटा लाने के लिये राज्याभिषेक की सामग्री लेकर वन जाता है।

पितृभक्त राम अपने पिता के वचन की रक्षा स्वयं करते हैं और अपने छोटे भाई से भी पिता के वचन का पालन कराने के लिए उसे अपनी चरण–पादुका देकर वापस अयोध्या लौटा देते हैं, पर दोनों ही त्याग मूर्ति भाई राज्य के लोभ को त्याग कर संन्यासी का जीवन जीते हैं। जहाँ त्याग भावना है, वहाँ युद्ध कैसा? इसीलिये ऐसी सुहावनी भूमि ही तो अयोध्या है, तभी तो स्वयं भगवान श्रीराम वानरों से कहते हैं –

जन्म भूमि मम पुरी सुहावनि।

(7 / 3 / 5)

(यह सुहावनी अयोध्या पुरी मेरी जन्म भूमि है।)

वृंदावन की तरह रामजन्म भूमि अयोध्या भी दिव्य भूमि है। अयोध्या की दिव्यता का वर्णन स्कंदपुराण के द्वितीय वैष्णवखंड के अयोध्या माहात्म्य में मिलता है –

अयोध्यानगरी नित्या सच्चिदानन्दरूपिणी।

(अयोध्या नगरी नित्य है और सच्चिदानन्द रूपा है।)

जैसे वृंदावन श्रीराधा–कृष्ण की नित्य विहार भूमि है, वैसे ही अयोध्या भी भगवती सीता और भगवान श्रीराम की नित्य विहार भूमि है। इस अयोध्या नगरी को सृष्टि के प्रथम पुरुष महाराज मनु ने वसाया था। भगवान श्रीराम के समय तो अयोध्या का प्राकृतिक सौंदर्य अवर्णनीय था। मनुष्यों की तो बात ही क्या, पशु–पक्षी भी निर्वैर भाव से रहते थे। इस अयोध्या कांड से हमें यही शिक्षा मिलती है कि हम निर्लोभी और निर्वैर बनें।

3. अरण्यकांड : अरण्य वन को कहते हैं। भगवान श्रीराम के अवतार का उद्देश्य था अत्याचारी दुर्दांत रावण को समूल नष्ट करना। शास्त्र कहते हैं कि भगवान की भृकुटि–भंग होने से ही प्रलय हो जाती है। भगवान राम तो अयोध्या में बैठे–बैठे भी रावण का संहार कर सकते थे, किन्तु उन्होंने ऐसा न कर भक्तों का कल्याण करने के लिये पावन मधुर लीलायें कीं। लीला के तहत ही वे वन गये। त्रिलोकविजयी महाशक्तिशाली रावण का वध करने के लिये शक्ति–अर्जन करने के लिये वन जाना आवश्यक था। आत्मकल्याण और लोकमंगल के लिये कष्ट सहने का नाम ही तप है। राम ने लोकमंगल के लिये वन में तपस्वी जीवन जीकर शक्ति अर्जित कर खर–दूषणादि निशाचरों का संहार किया। अरण्यकांड से हमें यही शिक्षा मिलती है कि हम भोगवादी न बनकर तपस्वी बनें और लोकमंगल के कार्य करें।

4. किष्किंधाकांड : इस कांड में किष्किंधापुरी से संबंधित की गयी लीलाओं का वर्णन है, अतः इसका नाम किष्किंधाकांड पड़ा। किष्किंधाकांड से हमें यह शिक्षा मिलती है कि संसार भवाटवी है और हम सभी इस भवाटवी में भटक रहे हैं। मानव–जीवन समस्याओं का घर है अर्थात् जीवन में समस्याओं का आवागमन होता ही रहता है। हम भले ही कितने ही शक्तिशाली और स्वावलम्बी हों, किन्तु कभी–कभी भवाटवी में भटकते जीवन में ऐसी विकट समस्या आ जाती है, जिससे पार पाना अकेले के लिये बड़ा ही मुश्किल हो जाता है, तब दूसरों का सहयोग लेना नितान्त आवश्यक हो जाता है। आप स्वयं कल्पना कीजिये कि वर्तमान समय में एक नौकरी करने वाला व्यक्ति बिना किसी का सहयोग लिये क्या सहज सुखमय जीवन जी सकता है। नौकरी करने वाला व्यक्ति केवल रुपये ही तो कमाता है, जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं (अन्न, वस्त्रादि) की पूर्ति के लिये तो उसे औरों का ही सहयोग लेना पड़ता है। इस कांड से हमें दूसरी बड़ी शिक्षा यह भी मिलती है कि हमें दूसरे का सहयोग लेने से पहले दूसरे को सहयोग करना चाहिये, जैसा कि श्रीराम ने सीता की खोज कराने के लिये सुग्रीव का सहयोग लेने से पूर्व सुग्रीव को सहयोग दिया।

5. सुन्दरकांड : कुछ लोगों का कहना है कि अन्य छह कांडों का नाम तो सार्थक है, परन्तु सुंदरकांड के नामकरण का यथार्थ आधार समझ में नहीं आता। उनकी शंका है कि पाँचवें कांड का नाम सुंदरकांड क्यों रखा? जब कि इस कांड में बाधायें ही बाधायें हैं, जैसे– लंकापुरी पहुँचने में अथाह समुद्र। समुद्र पार करते मार्ग में तीन–तीन बाधायें, जिनमें मैनाक पर्वत (सात्विकी बाधा), सुरसा (राजसी बाधा) और परछाईं पकड़ कर जीवों को खाने वाली राक्षसी (तामसी बाधा)। प्रवेश के समय लंकिनी, विशाल लंकापुरी में अपरिचिता को खोजना, सीता माता को रामदूत होने का विश्वास दिलाना, राक्षसों से युद्ध, हनुमान को दंड देना। इन सब झमेलों के होने पर भी सुंदरकाड कहने में क्या तुक है? इस कांड में तो अपहृता सीता के खोजने की कथा है। कथावस्तु के अनुसार इस कांड का नाम **सीता-अन्वेषण कांड** होना चाहिये था।

उन लोगों की शंका का समाधान इस प्रकार है – सुन्दरकांड में सुन्दरता की सार्थक व्याख्या है। इसमें सौंदर्यसार सीताजी का वर्णन है, सुन्दर कथा है। भक्त और भक्ति के बीच हुई सुन्दर वार्ता है। सुंदरकांड में सब कुछ सुंदर ही सुंदर है। इस विषय में यह श्लोक प्रसिद्ध है –

सुन्दरे सुन्दरी सीता, सुन्दरे सुन्दरी कथा।
सुन्दरे सुन्दरी वार्ता, सुन्दरे किं न सुन्दरम्॥

तुलसीदासजी के अनुसार सीता जी अनुपमेय हैं। क्षीर सागर से उत्पन्न लक्ष्मी भी सीताजी का उपमान नहीं बन सकतीं। महाराज जनक की पुष्प वाटिका में सीताजी के अलौकिक सौन्दर्य को देखकर भगवान श्रीराम भी चकित रह गये और उनका अविचल मन भी विचलित हो गया और चंचल भ्रमर की भाँति लज्जा त्याग कर सीताजी के मुख–कमल के मकरन्द–रस का पान करने लगा। श्रीराम सीताजी के अलौकिक सौन्दर्य की तुलना करने के लिए उपमान तलाशते हैं, किन्तु उन्हें कोई उपमान ही नहीं मिलता, तब सहसा ही उनके हृदय से ये शब्द छलक पड़े –

सुन्दरता कहुँ सुन्दर करई।

सीताजी सुन्दरता को भी सौन्दर्य करने वाली हैं अर्थात् संसार में जितनी भी सुन्दर वस्तुयें हैं, उनको सुन्दरता सीताजी ने ही तो दी है, फिर सीताजी के अनुपमेय सौन्दर्य की समता लौकिक उपमान से कैसे की जा सकती है।

आद्य जगद्गुरु शंकराचार्य के शब्दों में सीताजी मूर्तिमती शान्ति हैं। भक्तों की भाषा में कहें तो सीताजी भक्ति की सजीव मूर्ति हैं। भक्ति का सौन्दर्य ही सच्चा सौन्दर्य है। भक्ति से बढ़ कर और किसी का सौन्दर्य हो ही नहीं सकता, तभी तो सीताजी को सौन्दर्यसार सर्वस्व कहा है। सुन्दरकांड में उन परम शान्ति स्वरूपा, अलौकिक सौन्दर्य की सजीव मूर्ति, भक्ति स्वरूपा भगवती सीता को श्रद्धा–विश्वास भरे, बलबुद्धि सम्पन्न, सुन्दर मन वाले हनुमानजी द्वारा खोजने की मनोहारी सुन्दर कथा है, इसलिए इस कांड का नाम सुन्दरकांड रखा है।

सुन्दरकांड से हमें यही शिक्षा मिलती है कि संसार–सागर की उत्ताल तरंगों के थपेड़ों से संत्रस्त हम त्रितापों से भरे जगत का मोह–त्याग कर उन शान्तिस्वरूपा भक्तिमयी सीता की भक्ति करें और उन करुणामयी की कृपा प्राप्त कर अपने जीवन को सफल बनायें।

6. लंकाकांड : इस कांड में लंका की भूमि पर हुये महा भयंकर युद्ध का वर्णन है, इसलिये इस कांड का नाम लंकाकांड रखा। इस कांड से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमारे जीवन में भले ही कितनी ही विषम परिस्थितियाँ क्यों न आयें, भले ही मुसीबतों पर मुसीबतों के पहाड़ टूटें, किन्तु हमें छल–कपट का सहारा न लेकर सत्य–मार्ग पर ही अडिग रहना चाहिए, क्योंकि अंत में सत्य की ही जीत होती है – **सत्यमेव जयते**। उदाहरणार्थ सर्वसाधन सम्पन्न मायावी रावण ने राम के साथ युद्ध में भले ही कितने ही छल–कपट भरे

हथकंडे अपनाये और कितनी ही बार आसुरी माया–जाल बिछाये, परन्तु धर्मधुरंधर मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने छल–कपट की कूटनीति न अपना कर धर्म–युद्ध करते हुये सत्य–मार्ग पर अडिग रह कर विजय प्राप्त की। इससे यही शिक्षा मिलती है कि हमें श्रीराम का ही अनुकरण करना चाहिये, न कि रावण का। वाल्मीकि रामायण का भी यही सार है – **रामादिवत वर्तितव्यं न रावणादिवत**। हमें मर्यादा पुरुषोत्तम राम की ही तरह व्यवहार करना चाहिये, रावण की तरह नहीं।

7. उत्तरकांड : श्रीरामचरितमानस के इस कांड में रामकथा का उपसंहार है यानी रावण–वध कर लौटे राम का राज्याभिषेक और रामराज्य का वर्णन है। भारतवर्ष में अनेक राज्य स्थापित हुये, जिन पर नहुष, ययाति, मान्धाता, रघु, दशरथ आदि जैसे बड़े–बड़े प्रतापी और धर्मात्मा राजाओं ने राज्य किया। उन सबका हम श्रद्धा से सम्मान करते हैं, किन्तु उनके राज्यों को उनके नाम से याद नहीं किया जाता। केवल राम के राज्य को ही **रामराज्य** के नाम से याद करते हैं। रामराज्य सुराज्य का पर्यायवाची रहा है। वह भारतीय न्याय–नीति पर आधारित शासन–व्यवस्था का स्वर्ण युग था। रामराज्य में कोई भी व्यक्ति त्रितापों (दैहिक, दैविक और भौतिक) से पीड़ित नहीं था। कोई दीन–दुखी नहीं था, न कोई मूर्ख और सुलक्षणों से हीन था। कोई किसी से वैर नहीं करता था। भगवान राम के प्रताप से सबकी विषमता मिट गयी थी –

बयरु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप विषमता खोई।।

(7 / 20 / 8)

इसका मतलब यह नहीं है कि रामराज्य में सभी जीवों के शरीर, रूप, रंग, कद–काठी में समान थे। प्राणियों के अलग–अलग कर्मों के कारण शरीरों की विषमता तो थी, किन्तु सबके अन्दर समदर्शी परमात्मा के रहने के कारण आन्तरिक भेदभाव नहीं था। इसी भाव को भगवान श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवत्गीता में समता के नाम से व्यक्त किया है। रामराज्य में सभी लोगों के सुखी होने का कारण था कि चारों वर्णों के लोग अपने–अपने वर्णाश्रम धर्म का पालन करते थे –

बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुखहि नहिं भय सोक न रोग।।

(7 / 20)

आजकल इसके विपरीत हो रहा है। लोग अपने वर्णाश्रम धर्म को छोड़ कर अर्थात् अपनी जाति (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) और आश्रम (ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम और संन्यासाश्रम) के अनुसार नियत कर्मों को छोड़ कर मनमाने कर्म कर रहे हैं। फलस्वरूप लोग दुखी हैं। दूसरी बात जीवों के कर्मानुसार जो शरीर, जाति और परिस्थितियों में भेद हैं, उन्हें मिटाने में तो हम लगे हुए हैं, परन्तु एक–दूसरे को द्वेष, वैर, घृणा की दृष्टि से देखते हैं। राजनैतिक स्तर पर कानून बना कर जाति–पाति के भेद को मिटाने के हर संभव प्रयास किये जा रहे हैं, पर उन्हीं लोगों ने वोटों की खातिर लोगों के मनों में जातिवाद

का जहर घोल कर समाज को टुकड़ों–टुकड़ों में बाँट दिया है। इसे रोकने के लिये कोई राम दिखायी नहीं दे रहा है।

उत्तरकांड से हमें यही शिक्षा मिलती है कि हम सभी अपने वर्णाश्रम–धर्म का पालन करें। बाह्य विषमता को मिटाने की बजाय आन्तरिक भेदभाव मिटायें और अपनी जैसी स्थिति हो, उससे संतुष्ट रहें। इन बातों को व्यवहार में लाने पर सबके मनों में प्रेम की गंगा उमड़ने लगेगी। शरीर और परिस्थिति की भिन्नता होते हुये भी हम सभी को समान भाव से देखने लगेंगे।

यही कारण है कि संत तुलसीदास ने श्रीराम कथा के इन सात कांडों को सात सुन्दर सीढ़ियाँ कहा है– **एहि महँ रुचिर सप्त सोपाना।** पर हर कोई व्यक्ति इन सीढ़ियों पर नहीं चढ़ सकता। केवल वही व्यक्ति इन सीढ़ियों पर चढ़ पाता है यानी इस मार्ग पर चल पाता है, जिस पर भगवान राम की असीम कृपा होती है–

अति हरि कृपा जाहि पर होई। पाउँ देइ एहि मारग सोई॥

(7 / 129 / 4)

इन सात कांड रूपी सीढ़ियों पर चढ़ने का तात्पर्य यह है कि जो व्यक्ति छल–कपट रहित निर्मल मन से इन सातों कांडों में वर्णित भगवान श्रीराम की पावन कथा को भक्ति भाव से कहते और सुनते हैं, वे परम कृपालु करुणासागर भगवान राम की कृपा से सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर सहज ही भवसागर से पार हो जाते हैं। ऐसे करुणालु भगवान श्रीराम के चरण–कमलों में कोटि–कोटि नमन।

शोक समाचार

श्रीरामचरितमानस सत्संग समिति के वरिष्ठ सदस्य श्री राजेन्द्र प्रसाद बंसल कार्तिक कृष्ण तृतीया विक्रमी संवत् 2072 तदनुसार 30 अक्तूबर सन् 2015 को चिर निद्रा में लीन हो गए। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें एवं शोक संतप्त परिजनों को इस असहनीय दुःख को सहन करने हेतु धैर्य प्रदान करें।

शोक समाचार

श्रीरामचरितमानस सत्संग समिति के पूर्व उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता की धर्म पत्नी श्रीमती शीला देवी गुप्ता माघ शुक्ल प्रतिपदा विक्रमी संवत् 2072 तदनुसार 09फरवरी सन् 2016 को चिर निद्रा में लीन हो गईं। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें एवं शोक संतप्त परिजनों को इस असहनीय दुःख को सहन करने हेतु धैर्य प्रदान करें।

सबरी देखि राम गृह आए

पं0 राजेश कुमार तिवारी
टाइप - II/528, बी0एच0ई0एल0, झाँसी-284120। मो0 : 09451131195

अखिल ब्रह्माण्ड नायक, उदार हृदय प्रभु श्रीरामचन्द्रजी विराध, शरभंग, खर–दूषाणादि चौदह सहस्र राक्षसों, मारीच, गीधराज, कबन्ध आदि को सुगति प्रदान करते हुए भक्ति स्वरूपा शबरी माता की कुटिया पर पधारे, क्योंकि वह प्रभु की प्रतीक्षा करती, मार्ग के कंटकादि साफ करती, पूजार्थ पुष्प, फल, जल आदि का प्रबन्ध प्रतिदिन करके रखती थी। प्रभु को घर आये हुए देख श्रीमतंग मुनि के वचनों का स्मरण करके शबरी के मन में अति प्रसन्नता हुई –

सबरी देखि राम गृहँ आए। मुनि के बचन समुझि जियँ भाए।।
सरसिज लोचन बाहु बिसाला। जटा मुकुट सिर उर बनमाला।।
स्याम गौर सुन्दर दोउ भाई। सबरी परी चरन लपटाई।।
प्रेम मगन मुख बचन न आवा। पुनि पुनि पद सरोज सिर नावा।।

(3 / 34 / 6–9)

शबरी ने प्रभु की सुन्दर छवि का दर्शन किया। कमल नयन, विशाल भुजा (आजानुबाहु), सिर पर जटाओं का मुकुट और हृदय पर वनमाला धारण किये हुए सुन्दर सांवले और गोरे दोनों भाइयों के चरणों में शबरी लिपट गई। ये प्रेम में डूबी हैं, उनके मुख से वचन नहीं निकलता, बार–बार चरणों में सिर नवा रही है।

इससे पूर्व वन में कहीं वनमाला का वर्णन नहीं मिलता है, जबकि माता शबरी को प्रभु ने वनमाला धारण किए दर्शन दिये। शबरी माता वात्सल्य रस की उपासिका है, क्योंकि प्रभु ने स्वयं श्रीमुख से इन्हें भामिनि कहा –

'कह रघुपति सुनु भामिनि बाता'

(3 / 35 / 4)

भामिनि का अर्थ है 'सुन्दरी' पर माता के अर्थ में भी प्रयोग होता है, जैसा कि भागवत एवं वाल्मीकि रामायण में इसका प्रयोग हुआ है। आर्ष ग्रन्थों में भी इसका प्रयोग पाया जाता है – **'अथ तं सर्वभूतानां हत्पद्मेषु कृतालयम्। श्रुतानुभावंशरणं व्रजभावेन भामिनि'** (भागवत 3 / 32 / 11) **'त रामेण वियुक्ताशा स्वप्नमर्हति भामिन'** (वाल्मीकीय में हनुमानजी माता जानकी के प्रति)।

प्रभु ने श्रीमनु महाराज एवं माता शतरूपाजी को वनमाला में दर्शन दिये थे। **'उर श्रीवत्स रुचिर बनमाला'** (1 / 147 / 6) माता कौशिल्या के समक्ष **'भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी'** (1 / 192) प्रकट हुए क्योंकि इनका वात्सल्यभाव है।

माता शबरी ने आदरपूर्वक जल लेकर अर्घ्य, पाद्य, दिया। दोनों चरणकमल पखारे। सुन्दर आसन पर बिठाया। अत्यन्त रसीले स्वादिष्ट कन्दमूल फल प्रभु को समर्पित किये। **'पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति'** (गीता) प्रभु ने बारम्बार प्रशंसा कर प्रेमपूर्वक उन्हें ग्रहण किया। इन फलों की प्रशंसा प्रभु ने कहाँ कहाँ नहीं की **'घर गुरु गृह प्रिय सदन सासुरे भई जब जब पहुनाई। तब तब कहिं सबरी के फलनि की रुचि माधुरी न पाई'** (विनय पत्रिका 104)। प्रेममूर्ति माँ शबरी हाथ जोड़ कर आगे खड़ी हो गई। प्रभु को देख कर शबरीजी का प्रेम अत्यन्त बढ़ गया। वह बोली –

केहि बिधि अस्तुति करौं तुम्हारी। अधम जाति मैं जड़मति भारी।।
अधम ते अधम अधम अतिनारी। तिन्ह महँ मैं मति मंद अघारी।।

(3 / 35 / 23)

मैं किस प्रकार आपकी स्तुति करूँ। मैं अधम जाति की हूँ। बड़ी ही जड़ बुद्धि हूँ। हे पाप नाशक! जो अधम से अधम में भी अत्यन्त अधम स्त्रियाँ हैं उनमें मैं मन्द बुद्धि (मूढ़) हूँ। अधम जाति सबर के विषय में 'नृपान्यां वैश्यतो जातः सबरः परकीर्तितः। मधूनि वृक्षादानीय विक्रीणीते स्वृत्तये' (नारदीय) अर्थात् जो वैश्य और क्षत्रियाणी के संयोग से उत्पन्न हो उसे सबर कहते हैं। ये वृक्षों से मधु लेकर जीविकार्जन करते थे। ऐसा वर्णन मिलता है।

श्रीरघुनाथजी ने कहा– हे भामिनि ! मेरी बात सुनो, मैं तो मात्र एक भक्ति का सम्बन्ध मानता हूँ। जाति–पाति कुल धर्म बड़ाई धन बल कुटुम्ब गुण चतुरता इनके होते हुए भी भक्ति से रहित मनुष्य कैसा होता है, जैसे बिना जल का मेघ शोभाहीन दिखता है। **'श्रवनादिक नव भक्ति दृढ़ाहीं। मम लीला रति अति मन माहीं'** यद्यपि प्रभु ने भाई लक्ष्मण को **'श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पाद सेवनम्। अर्चनं वंदनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्'** का उपदेश दिया था, लेकिन माँ शबरी को नवधाभक्ति का उससे पृथक उपदेश दिया–

प्रथम भगति संतन्ह कर संगा। दूसरि रति मम कथा प्रसंगा।।
गुर पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान।
चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान।।

(3 / 35)

मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा। पंचम भजन सो बेद प्रकासा।।
छठ दम सील बिरति बहु करमा। निरत निरंतर सज्जन धरमा।।
सातवँ सम मोहि मय जग देखा। मोते संत अधिक करि लेखा।।
आठवँ जथालाभ संतोषा। सपनेहुँ नहिं देखइ पर दोषा।।
नवम सरल सब सन छल हीना। मम भरोस हियँ हरष न दीना।।

नव महुँ एकउ जिन्ह कें होई। नारि पुरुष सचराचर कोई।।
सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरे। सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरे।।

संतों की संगति प्रथम भक्ति है, क्योंकि **'बिनु सतसंग न हरि कथा'** सत्संगति से ही कथा श्रवण का लाभ प्राप्त होता है। मेरी कथा में प्रेम दूसरी भक्ति है, रति का भाव है।

जिन्ह के श्रवण समुद्र समाना। कथा तुम्हारि सुभग सरिनाना।।
भरहि निरंतर होहि न पूरे।

(2 / 128 / 3, 4)

श्री गुरुजी के चरण कमलों की सेवा अभिमान रहित करना तीसरी भक्ति है। कपट छोड़ कर मेरे गुण समूह का गान करना चौथी भक्ति है। वेदों में प्रसिद्ध मेरे मंत्र का जप और दृढ़ विश्वास पंचम भक्ति है। इन्द्रिय दमन शीलता, बहुत कर्मों से वैराग्य, हमेशा सज्जन धर्म में तत्परता छठी भक्ति है। सम्पूर्ण विश्व को राममय देखना, संतों को मुझसे अधिक समझना सातवीं भक्ति है। जो कुछ सहज प्राप्त हो उसमें संतोष करना व स्वप्न में भी पराये दोष न देखना आठवीं भक्ति है। कपट छल रहित सरल सीधा सादा स्वभाव, सबसे छल रहित व्यवहार हृदय में मेरा भरोसा, हर्ष और दीनता, शोक एवं दुःख रहित होना नवीं भक्ति है। इन नौ में से एक भी भक्ति जिनके होती है वह स्त्री–पुरुष चर अचर कोई भी हो, वही हे भामिनि! मुझे अतिशय प्रिय है। तुममें तो सभी प्रकार की भक्तियाँ दृढ़ हैं।

प्रभु श्रीरामजी ने कहा कि योगीजनों को जो गति दुर्लभ है, आज तुझे वही सुगमता से प्राप्त हो गयी। मेरे दर्शन का परम अनुपम फल यह है कि जीव अपना सहज स्वरूप पा जाता है। हे भामिनि! यदि तुम गजगामिनी जनक सुता की कुछ खबर जानती हो तो कहो। तब शबरी माता ने कहा– हे रघुराई! आप पम्पासर जाइये, वहाँ आपकी सुग्रीव से मित्रता होगी। हे देव हे! रघुवर! वह सब हाल कहेगा। हे धीर बुद्धि आप सब जानते हैं। फिर भी सुझसे पूछते हैं। बारम्बार प्रभु के चरण कमलों में सिर रखकर उसने प्रेम सहित सब कथा प्रभु को सुनाई, जो उसने अपने श्रीगुरु मुख से सुनी थी। सब कथा कहकर प्रभु के मुखकमल का दर्शन कर हृदय में उनके चरण कमलों को धारण कर योगाग्नि से अपने देह का त्याग कर वह दुर्लभ हरिपद में लीन हो गयी, जहाँ से जीव लौट कर नहीं आता। 'यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परम मम' (गीता 8 / 21)

अतः गोस्वामी तुलसीदासजी महाराज लिखते है –

जाति हीन अघ जन्म महि मुक्त कीन्हि असि नारि।
महामंद मन सुख चहसि ऐसे प्रभुहि बिसारि।।

(3 / 36)

जाति हीन, पाप की जन्मभूमि अर्थात जहाँ से पाप उत्पन्न हुआ करता है, ऐसी स्त्री को भी जिन्होंने मुक्त किया, अरे महामन्द मन तू ऐसे प्रभु को भूलकर सुख की चाह करता है। तुझे धिक्कार है। एक कवि ने शबरी के संबंध में लिखा है –

शबरी तुमने जीवन का आदर्श प्रस्तुत किया है।
लघु कैसे महान बनता बनकर दिखा दिया है।।

MAX MAINTENANCE LIMITED

CIN No.: U74140DL2015PLC284475

MAX MAINTENANCE LIMITED

An ISO 9001 : 2008 Certified Co.

MANAGED BY A TEAM OF EX DEFENCE PERSONNEL

- Facility Management Services
- Industrial Security & Safety
- Disaster Management
- Consultancy & Training
- Detective Services
- Cash Escort Services
- Access Control Systems
- Residential Sercurity
- Bank Security
- Fire Safety
- Antecedent Verification
- Corporate Intelligence
- Executive Protection
- Security & Fire Audits
- Electronic Security Systems
- Machanized House Keeping
- Bodyguard And Bouncers
- Personal Security
- Annual Repair & Mainteance

Corp. Off.: D-7, Sector-7, Noida-201301. G.B. Nagar (U.P.) India
Delhi Off.: C-5/99-100, New Kondli, Mayur Vihar Phase-III
(Opp. Indian Oil Petrol Pump), Delhi-110096
Ph.: 011-65653352, Helpline No. : 8588831761-785
E-mail: maxmlimited@gmail.com. mml@maxmlimited.info,
maxmlimited@hotmail.com, support@maxmlimited.info
Website: www.maxmlimited.info
MOB : 09871543570, 09999814220, 08588831777
For More Enquiry Type "MML" Sent it to 52424

You Are Safe Because We Guard You

सुरक्षित भारत की तैयारी, जिम्मेदारी आपकी और हमारी

राम कीन्ह चाहहिं सोइ होई

डॉ0 भगवानदास पटैरया, महासचिव

श्रीरामचरितमानस के कुछ प्रसंगों में वर्णित, जीवन में अनुपालनार्थ दिव्य संदेशों में कुछ विरोधाभास सा प्रतीत होता है, पर वास्तव में विरोधाभास है नहीं। इसका कारण यह है कि जब देश–काल–परिस्थिति को ध्यान में नहीं रखा जाता है, तब विरोधाभास लगने लगता है। पूरे प्रकरण को समझे बिना कि किस समय किस स्थिति में किसके लिए क्या कहा गया है, कुछ लोग उस संदेश का उल्टा अर्थ समझ बैठते हैं। निम्नांकित चौपाई इसी क्रम में आती है –

राम कीन्ह चाहहिं सोइ होई। करै अन्यथा अस नहिं कोई।।

(1 / 128 / 1)

इसका अर्थ कुछ लोग यह समझ लेते हैं कि जो कुछ करना है श्रीरामजी को करना है। जैसा वे चाहेंगे वैसा हमसे करा लेंगे। कभी कभी अनुचित व्यवहार करके भी हम श्रीराम पर ही यह दोषारोपण कर देते हैं कि श्रीरामजी की यही इच्छा थी। इस समय हम यह भूल जाते है कि कर्म की प्रधानता का प्रतिपादन भी तो इस प्रकार किया गया है –

करम प्रधान बिस्व करि राखा। जो जस करइ सो तस फलु चाखा।।

(2 / 219 / 4)

श्रीमद्भगवद्गीता में भी अर्जुन को उपदेश देते हुए श्रीकृष्णजी यही समझाते हैं कि कर्म करने में तुम स्वतंत्र हो पर उसके फल की इच्छा मत करो वह विधाता के हाथ में है –

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफल हेतु भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।

(गीता 2 / 47)

इस प्रकार से दो अलग–अलग सिद्धान्त प्रतीत होते हैं। एक यह कि हम कुछ भी करना चाहें वह न होकर वही होगा जो श्रीरामजी चाहेंगे और दूसरा यह कि कर्म की प्रधानता है और हम जैसा चाहें वैसा नवीन कर्म कर सकते हैं। अब इन दोनों प्रसंगों पर विचार करते हैं। पहला प्रसंग नारद–मोह का है जब काम–विजय का अभिमान नारदजी को हो जाता है। काम विजय की घटना का उल्लेख सर्वप्रथम नारदजी शिवजी से करते हैं, क्योंकि उन्होंने भी काम पर विजय प्राप्त की थी। नारदजी सोचते होंगे कि मेरी काम–विजय शिवजी की काम–विजय से श्रेष्ठ है, क्योंकि उन्होंने क्रोध करके कामदेव को भस्म कर दिया था, पर मैंने तो क्रोध भी नहीं किया –

भयउ न नारद मन कछु रोषा। कहि प्रिय बचन काम परितोषा।।

(1 / 127 / 1)

शिवजी समझ गए थे कि नारद के मन में अभिमान पैदा हो गया है, अतः अपना अति प्रिय जानकर समझाया कि जिस प्रकार यह घटना उन्हें सुनाई, विष्णु भगवान को कभी नहीं सुनाना और यदि प्रसंग चले तो इसे छिपाने का प्रयास करना। पर नारदजी को शिवजी का उपदेश अच्छा नहीं लगा और एक बार क्षीरसागर पहुँचकर भगवान विष्णु को काम–विजय का प्रसंग सुना दिया। भगवान ने समझ लिया कि नारद के मन में अहंकार रूपी वट वृक्ष का अंकुर पैदा हो गया है। भक्त के हितसाधक भगवान ने शीघ्र ही उनके अहंकार हरण की लीला रच दी –

करुनानिधि मन दीख बिचारी। उर अंकुरेउ गरब तरु भारी।।
बेगि सो मैं डारिहउँ उखारी। पन हमार सेवक हितकारी।।

(1 / 129 / 4–5)

भगवान ने अपनी माया से एक सुन्दर नगरी का निर्माण किया, जिसमें राजा की कन्या 'विश्वमोहिनी' की हस्तरेखा देखकर उसके अलौकिक रूप से नारद जी मोहित हो गए और भगवान से उसे प्राप्त करने हेतु उनका रूप मांग लिया, पर मांगते समय उन्होंने यह कहा –

जेहि बिधि नाथ होइ हित मोरा। करहु सो बेगि दास मैं तोरा।।

(1 / 132 / 7)

श्रीभगवान ने भी उन्हें बताया और सचेत कर दिया कि 'हित' ही नहीं जिस प्रकार तुम्हारा परम हित होगा, वैसा ही किया जाएगा। पर नारदजी माया मोहित होने के कारण हरि की गूढ़वाणी नहीं समझ पाए। श्रीभगवान ने उन्हें वानर का रूप दे दिया तथा स्वयं ही स्वयंवर में पहुँच गए, जिससे विश्वमोहिनी ने उनके गले में जयमाला डाल दी। विप्र रूप में बैठे शिवगणों के कहने पर जब नारदजी ने अपना मुख जल में देखा तो अति क्रोधित होकर श्रीभगवान के पास जाने को तैयार हो गए, पर श्रीभगवान बीच में ही मिल गए –

बीचहिं पंथ मिले दनुजारी। संग रमा सोइ राजकुमारी।।

(1 / 136 / 4)

यहाँ पर यह भी विचारणीय है कि बीच रास्ते में भगवान क्यों मिले। नारदजी को माया ने पूरी तरह घेर लिया था वे काम–क्रोध–लोभ के वशीभूत थे और यह तो नरक का रास्ता है। अपने भाई रावण को समझाते हुए विभीषण ने कहा था कि हे नाथ काम–क्रोध–मद–लोभ ये सभी नरक के रास्ते हैं, इन्हें छोड़कर श्रीराम का भजन करिए –

काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरहिं भजहु भजहिं जेहि संत।।

(5 / 38)

इस मार्ग पर चलकर तो नारदजी कभी भी श्रीभगवान के पास नहीं पहुँच सकते थे, अतः श्रीभगवान बीच में ही मिल गए। अति क्रोधित हो नारदजी ने उन्हें शाप दे दिया कि तुम्हें वही नर वेश रखकर संसार में आना पड़ेगा जिस वेश को धारण करके तुमने मुझे ठगा है। तुमने मेरा बंदर का मुख बनाया तो वानर ही तुम्हारी सहायता करेंगे और मेरा जिस तरह अपमान हुआ तुम भी नारि–विरह दुख भोगोगे। शाप शिरोधार्य कर जब श्रीभगवान ने अपनी माया का वेग दूर कर दिया, तब नारदजी चरणों में गिर पड़े और क्षमा याचना करने लगे। श्रीभगवान ने कहा कि इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं, यह सब मेरी इच्छा से ही हुआ है –

मृषा होउ मम श्राप कृपाला। मम इच्छा कह दीनदयाला।।

(1 / 138 / 3)

सीताहरण के पश्चात जब श्रीराम–लक्ष्मण पंपापुर सरोवर पर प्रसन्न मुद्रा में बैठे थे, तब नारदजी जाकर उनसे प्रश्न करते हैं कि जब मैंने विवाह करना चाहा, तब आपने क्यों नहीं करने दिया। श्रीरामजी ने उन्हें समझाया कि मेरे भक्तजन छोटे शिशु के समान हैं और ज्ञानीजन नवयुवक की तरह, अतः मैं अपने भक्तों का ध्यान ठीक वैसे ही रखता हूँ, जैसे एक माँ अपने अबोध शिशु का ध्यान रखती है –

सुनु मुनि तोहि कहउँ सहरोसा। भजहिं जे मोहि तजि सकल भरोसा।।
करउँ सदा तिन्ह कै रखवारी। जिमि बालक राखइ महतारी।।

(3 / 43 / 3–4)

श्रीरामजी ने नारदजी को बताया कि गृहस्थाश्रम के भोग के पश्चात जो स्थिति आती है, वह तुम पहले ही प्राप्त कर चुके थे, तब भला तुम्हारी अवनति क्यों करता।

श्रीरामजी अपने भक्त की रक्षा एवं संभाल ठीक उसी प्रकार से करते हैं जैसे एक माँ अपने अबोध शिशु का ध्यान रखती है। जब शिशु को कोई फोड़ा हो जाता है तब माता चीरा लगवाकर उसके आगे आने वाले महान दुख को दूर करती है। यद्यपि प्रारंभ में बच्चे को बहुत कष्ट होता है, पर आगे के महान कष्ट को ध्यान में रखकर उस प्रारंभिक कष्ट पर माँ ध्यान नहीं देती है। इसी प्रकार श्रीरामजी अपने भक्त के अभिमान को दूर करने के लिए ऐसी माया रचते हैं, जिससे उसे कष्ट तो होता है जैसे नारदजी को हुआ, पर वे उस भक्त को अभिमान मुक्त कर देते हैं और नारदजी जैसे भक्त से दिया हुआ शाप भी स्वीकार करते हैं। भक्त जन के प्रति ऐसे सहज स्वभाव के हैं श्रीरामजी। स्वयं अपना अनुभव बताते हुए गरुड़जी से काकभुसुंडि कहते हैं–

सुनहु राम कर सहज सुभाऊ। जन अभिमान न राखहिं काऊ।।
संसृत मूल सूलप्रद नाना। सकल सोक दायक अभिमाना।।
ताते करहिं कृपानिधि दूरी। सेवक पर ममता अति भूरी।।
जिमि सिसु तन ब्रन होइ गोसाईं। मातु चिराव कठिन की नाईं।।
जदपि प्रथम दुख पावइ रोवइ बाल अधीर।
ब्याधि नास हित जननी गनति न सो सिसु पीर।

तिमि रघुपति निज दास कर हरहिं मान हित लागि।
तुलसिदास ऐसे प्रभुहि कस न भजहु भ्रम त्यागि।।

(7/74 क, ख)

इस प्रकार के प्रसंगों में **'राम कीन्ह चाहहिं सोइ होई'** लिखा गया है

अब दूसरे प्रसंग पर विचार करें। जब भरतजी श्रीरामजी को मनाने चित्रकूट जाते हैं, तब उनके प्रेम को देखकर इन्द्र डर जाता है और अपने गुरु बृहस्पतिजी से निवेदन करता है कि ऐसा कुछ करिए कि भरतजी की रामजी से भेंट ही न हो पाए अन्यथा बनी बनाई बात बिगड़ जाएगी। तब बृहस्पतिजी उसे समझाते हैं कि उस समय अर्थात् श्रीरामजी को वनवास दिलाते समय उनकी इच्छा से ही वह कार्य किया गया था, किन्तु यदि अब तुम कुछ कुटिलपन दिखाओगे तो दुर्वासाजी की तरह त्रस्त होना पड़ेगा, जैसे वे दुखी हुए थे राजा अंबरीष की परीक्षा लेते समय –

तब किछु कीन्ह राम रुख जानी। अब कुचालि करि होइहि हानी।।

और आगे समझाते हुए वे कहते हैं कि ईश्वर सब पर समान कृपा करते हैं, पर जो जैसा करता है उसी के अनुसार फल देते हैं। इसमें कर्म की प्रधानता बताई गई है –

जद्यपि सम नहिं राग न रोषू। गहहिं न पाप पूनु गुन दोषू।।
करम प्रधान बिस्व करि राखा। जो जस करइ सो तस फल चाखा।।

(2/219/3–4)

इस प्रकार से जब हम उपर्युक्त दोनों प्रसंगों पर विचार करते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि अपने–अपने स्थान पर दोनों संदेश सटीक हैं कोई विरोधाभास नहीं है। सारांश स्वरूप यह कहा जा सकता है कि ईश्वर ने जो हमें बुद्धि विवेक दिया है और हमने सत्संग से जो कुछ अपने विवेक को निखारा है, उसकी सहायता से अपने सामर्थ्य के अनुसार दृढ़ता पूर्वक अपने कर्तव्य का पालन करें। इसके बाद जो होनी–अनहोनी होती प्रतीत होती है उसे प्रभु–इच्छा समझ कर संतोष करें और फिर भरतजी की तरह ईश्वर के समक्ष पूर्ण समर्पण करते हुए यही विनती करें कि प्रभु जैसा आप चाहें, जिस प्रकार से आपको प्रसन्नता हो, वही कीजिए –

जेहि विधि प्रभु प्रसन्न मन होई। करुना सागर कीजिअ सोई।।

(2/269/2)

मृत्यु और मोक्ष में अन्तर

सांसें खत्म हो जाएँ तमन्ना बाकी रह जाए यह है मृत्यु।
तमन्नाएँ खत्म जो जाएँ और सांस रह जाए यह है मोक्ष।।

नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्

श्री जगदीश प्रसाद शर्मा 'सरल'
116, जी.जी. हॉस्टल वाली गली–1, होशियारपुर, सैक्टर–51, नोएडा। मो0 : 9311384212

श्रीरामचरितमानस के प्रति मेरी बचपन से ही अटूट आस्था रही है। अध्ययन काल में श्रीरामचरितमानस के रचयिता संत तुलसीदास की जीवनी पढ़ी। उन्होंने बचपन से कितने कष्ट सहे। कंटकों के बीच में ही वे खिले और सदा महकते रहे। इस संदर्भ में कविवर मैथिलीशरण गुप्त की ये पंक्तियाँ तुलसीदास के जीवन पर अक्षरशः घटित होती हैं –

जितने कष्ट-कंटकों में है जिनका जीवन - सुमन खिला।
गौरव-गंध उन्हें उतना ही यत्र तत्र सर्वत्र मिला।।

भगवान श्रीराम की भक्ति में अपना सर्वस्व समर्पित कर अपने जीवन को धन्य करने वाले महान भक्त तुलसीदास पर कोई कीचड़ भी उछाल सकता है – ऐसा कभी सोचा भी न था, पर यह मानव समाज है। पता नहीं, कौन कब क्या कह देवे, क्योंकि हर व्यक्ति को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जो मिली हुयी है। एक दिन दिल्ली प्रेस से प्रकाशित पुस्तक 'समाज के पथभ्रष्टक तुलसीदास' पर दृष्टि पड़ते ही मेरे मन को बड़ा दुःख हुआ। सोचा कि किसी सिरफिरे ने लिखी होगी, किन्तु जब लेखक के नाम पर दृष्टि गयी तो पता चला कि वह पुस्तक तो विद्वान लेखक द्वारा लिखी हुयी है। सोचा कि इसे पढ़ कर देखा जाये। पढ़ कर लगा कि लेखक ने जानबूझ कर संत तुलसीदास पर कीचड़ उछाली है, पर सूर्य पर थूकने वाले का थूक सूर्य को मलिन नहीं करता। बाद में उस लेखक के परिचित व्यक्ति से पता चला कि वह पुस्तक उन्होंने चन्द रुपये पाने के लालच से लिखी थी। यह विद्वत्ता का दुरुपयोग ही तो है। उस पुस्तक में एक शीर्षक था – अनुवादों की नुमाइश। उस शीर्षक के अन्तर्गत यह दर्शाया है कि लेखक ने अनेक पुस्तकों से कथायें और श्लोक लेकर उनका दोहे – चौपाई में अनुवाद कर अपने ग्रंथ रामचरितमानस को सजाया है। तुलसीदास जैसे संत को समाज का पथभ्रष्टक कहना मेरे मन को महीनों तक कचौटता रहा।

एक दिन प्रकांड विद्वान दंडी स्वामी श्रीसुखबोधाश्रम महाराजजी के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं भक्ति भाव से उनके चरण स्पर्श कर उनके चरणों के निकट ही बैठ गया। फिर क्या अवसर पाते ही मैंने अपने मन की उलझन को उनके सामने रख दिया। विद्वद्वर स्वामीजी मेरी उलझन सुलझाते हुये कहने लगे कि संत तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस द्वारा श्रीरामकथा को घर घर पहुँचा कर जितना लोकमंगल का कार्य किया है, उतना किसी अन्य कवि ने नहीं किया, इसलिये वे लोकनायक कवि हैं। ऐसे भगवद्भक्त महान संत कवि को समाज के पथभ्रष्टक कह कर उन पर कीचड़ उछालना समझदारी नहीं है और ऐसी पुस्तक में लेखक का यह कहना ही व्यर्थ है कि उन्होंने अनुवाद की नुमाइश लगायी है, क्योंकि

श्रीरामचरितमानस तो अनुवाद ही है और इस बात को स्वयं संत शिरोमणि तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस के बालकांड के मंगलाचरण में डंके की चोट पर कहा है –

नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद् रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि।
स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथा भाषानिबंधमतिमंजुलमातनोति।।

(संत तुलसीदासजी कहते हैं कि मैं अनेक पुराण, वेद, शास्त्र से सम्मत तथा जो रामायण में वर्णित है, उनसे और कुछ अन्य ग्रंथों से भी लेकर श्रीराम कथा को अपने अन्तःकरण के सुख के लिए सुंदर भाषा में रचता हूँ।)

यों तो श्रीराम कथा वेद, शास्त्र, पुराण, उपनिषद्, इतिहास, काव्यों में वर्णित है। रामचरित का वर्णन करने वाली रामायणों की संख्या 100 करोड़ से भी अधिक है – **'रामायन सत कोटि अपारा',** परन्तु उन सब में तीन ग्रंथ प्रधान हैं– वाल्मीकीयरामायण, अध्यात्मरामायण और श्रीरामचरितमानस। वाल्मीकीय रामायण आदि काव्य है– यह आदि कवि महर्षि वाल्मीकि के द्वारा ऋतम्भरा प्रज्ञा के प्रभाव से श्रीराम के राज्यसिंहासनासीन होने के बाद लिखी गयी है। इसमें वर्णित एक अक्षर भी कल्पित नहीं है, सब सत्य है। यह राम के समकाल में लिखी गयी है, इसलिये सीता–राम के संबंध में यही मुख्य प्रमाण है।

अध्यात्मरामायण ब्रह्मांड पुराण का एक अंश है, अतः इसके रचयिता पुराणों के लेखक महामुनि वेदव्यास हैं। अध्यात्मरामायण में वह रामकथा है, जिसे शिवजी ने सर्वप्रथम माता सती के समय में रच कर अपने मानस (मन) में रख लिया था– **रचि महेस निज मानस राखा,** इसलिये शिवजी ने इसका नाम रामचरितमानस रखा। इस परम पवित्र कथा को सती जनता के समक्ष लाना चाहती थीं, इसीलिए जब राम दंडकारण्य में शोक का अभिनय कर रहे थे, तब सती ने अज्ञान का अभिनय किया, किन्तु उस जन्म में वे रामकथा को जनता के सामने न ला सकीं, अतः पार्वती के रूप में पुनः आकर वे इस पावन कथा को शिवजी के मानस से बाहर लाने में सफल हुयीं। भगवान शिव द्वारा रचित रामचरितमानस में अध्यात्म तत्व की प्रधानता है, इसलिए इसका नाम अध्यात्म रामायण है। अध्यात्म रामायण ही तुलसीकृत श्रीरामचरितमानस का आधार है। तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस को भगवान शिव की कृपा से ही लिखा है –

संभु प्रसाद सुमति हियँ हुलसी। रामचरितमानस कवि तुलसी।।

(1/36/1)

और भगवान शिव का ही अनुकरण करते हुये संत तुलसीदास ने अपनी रचित रामकथा का नाम श्रीरामचरितमानस रखा।

संत तुलसीदास प्रकाण्ड विद्वान थे। संन्यास लेने से पूर्व उन्होंने विधिवत् वेद, शास्त्र तथा धर्मग्रंथों का गहन अध्ययन किया था। कवि बनने से पूर्व वे एक अच्छे कथावाचक थे, इसलिये उन्होंने विभिन्न ग्रंथों में वर्णित रामकथा को गहराई से पढ़ा था। यही कारण रहा कि उन्होंने किसी एक ग्रंथ से कथायें न लेकर अनेक ग्रंथों से रामकथाओं को लेकर अपने श्रीरामचरितमानस में सँजोया है। इस लेख का यही उद्देश्य है,

इसलिये उन्हीं के इस कथन (नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्.....) की पुष्टि करने के लिये यहाँ कुछ संदर्भों का दिग्दर्शन कराया जा रहा है –

श्रीरामचरितमानस में जो सती–मोह और शिव–विवाह की कथायें हैं, वे शिवपुराण से ली गई हैं। अध्यात्म रामायण में वर्णित श्रीराम द्वारा शबरी को बतलायी नवधा–भक्ति के प्रसंग का तो संत तुलसीदास ने अपने रामचरितमानस में अक्षरशः अनुवाद कर दिया है। यहाँ उसकी एक झलक देखें –

तस्माद्भामिनि संक्षेपाद्वक्ष्येऽहं भक्तिसाधनम्।
सतां संगतिरेवात्र साधनं प्रथमं स्मृतम्।।
द्वितीयं मत्कथालापस्तृतीयं मद्गुणेरणम्।
व्याख्यातृत्वं मद्वचसां चतुर्थं साधनं भवेत्।।
आचार्योपासनं भद्रे मद्बुद्ध्यामायया सदा।
पंचमं पुण्यशीलत्वं यमादि नियमादि च।।
निष्ठा मत्पूजने नित्यं षष्ठं साधनमीरितम्।
मम मन्त्रोपासकत्वं सांगं सप्तममुच्यते।।
मद्भक्तेष्वधिका पूजा सर्वभूतेषु मन्मतिः।
बाह्यार्थेषु विरागित्वं शमादिसहितं तथा।।
अष्टमं नवमं तत्त्वविचारो मम भामिनि।
एवं नवविधा भक्तिः साधनं यस्य कस्य वा।।
स्त्रियो वा पुरुषस्यापि तिर्यग्योनिगतस्य वा।
भक्तिः संजायते प्रेमलक्षणा शुभलक्षणे।।

(अ.रा.,अरण्य. 10/22–28)

(हे भामिनि! मैं संक्षेप से अपनी भक्ति के साधनों का वर्णन करता हूँ। उनमें पहला साधन तो सत्संग ही है। मेरे जन्म–कर्मों की कथा का कीर्तन करना दूसरा साधन है। मेरे गुणों की चर्चा करना तीसरा उपाय है। मेरे वाक्यों (गीता–उपनिषद् आदि) की व्याख्या करना चौथा साधन है। हे भद्रे! अपने गुरु की निष्कपट होकर भगवद्भक्ति से सेवा करना पाँचवाँ साधन है। पवित्र स्वभाव, यम–नियमादि का पालन और मेरी पूजा में प्रेम होना छठा साधन है। मेरे मंत्र की सांगोपांग उपासना करना सातवाँ साधन है। मेरे भक्त की मुझसे भी ज्यादा पूजा करना, समस्त प्राणियों में मेरी भावना रखना, बाह्य पदार्थों से वैराग्य करना और शम–दमादि से सम्पन्न होना– मेरी भक्ति का आठवाँ साधन है। तत्व विचार करना नौवाँ साधन है। हे! भामिनि! इस प्रकार यह नौ प्रकार की भक्ति है। हे शुभ लक्षणे! जिस किसी में ये साधन होते हैं, वह स्त्री, पुरुष या पशु–पक्षी आदि कोई भी हो, उसमें प्रेम लक्षणा भक्ति का आविर्भाव हो ही जाता है।)

संत तुलसीदास ने इन्हीं भावों को रामचरितमानस में इस प्रकार लिखा है –

नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं। सावधान सुनु धरु मन माहीं॥
प्रथम भगति संतन कर संगा। दूसरि रति मम कथा प्रसंगा॥

गुरु पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान।
चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान॥

मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा। पंचम भजन सो बेद प्रकासा॥
छठ दम सील बिरति बहु करमा। निरत निरंतर सज्जन धरमा॥
सातवँ सम मोहि मय जग देखा। मोतें संत अधिक कर लेखा॥
आठवँ जथालाभ संतोषा। सपनेहुँ नहिं देखइ परदोषा॥
नवम सरल सब सन छलहीना। मम भरोस हियँ हरष न दीना॥
नव महुँ एकउ जिन्ह कें होई। नारि पुरुष सचराचर कोई॥
सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरें। सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरें॥
जोगि बृंद दुर्लभ गति जोई। तो कहुँ आजु सुलभ भइ सोई॥

(मा. 3/35/7–8; 35; 36/1–8)

महर्षि अगस्त्य के शिष्य सुतीक्ष्ण ने गुरु को विनयपूर्वक प्रणाम करके कहा– ब्रह्मन्! दशरथ कुमार श्रीराम सीता और लक्ष्मण के साथ आपके दर्शन के लिये आये हैं और हाथ जोड़े आश्रम के बाहर खड़े हैं। इसी भाव का दोनों (अध्यात्म रामायण और रामचरितमानस) में कितना सामंजस्य है –

रामो दाशरथिर्ब्रह्मन् सीतया लक्ष्मणेन च।
आगतो दर्शनार्थं ते बहिस्तिष्ठति सांजलिः॥

(अ.रा. 3/3/9)

नाथ कोसलाधीस कुमारा। आए मिलन जगत आधारा॥
राम अनुज समेत बैदेही। निसि दिनु देव जपत हहु जेही॥

(मा0 3/12/7–8)

देवता नहीं चाहते थे कि राम का राज्याभिषेक हो, इसलिये उन्होंने माता सरस्वती से आग्रह किया कि हे देवि! तुम अयोध्यापुरी जाओ और वहाँ राम के राज्याभिषेक में विघ्न डालने का यत्न करो। पहले तुम मंथरा में प्रवेश करना, फिर कैकेयी में। विघ्न डाल कर तुम लौट आना। सरस्वती ने बहुत अच्छा कह कर वही किया– इसी भाव का दोनों (अध्यात्मरामायण और रामचरितमानस) में कितना साम्य है, देखिये –

एतस्मिन्नन्तरे देवा देवीं वाणीमचोदयन्।
गच्छ देवि भुवो लोकमयोध्यायां प्रयत्नतः॥
रामाभिषेक विघ्नार्थं यतस्व ब्रह्मवाक्यतः।

मन्थरां प्रविशस्वादौ कैकेयीं च ततः परम्।।
ततो विघ्ने समुत्पन्ने पुनरेहि दिवं शुभे।
तथेत्युक्त्वा तथा चक्रे प्रविवेशाथ मन्थराम्।।

(अ.रा. 2/2/44–46)

सारद बोलि बिनय सुर करहीं। बारहिं बार पाय लै परहीं।।

(2/11/8)

बिपति हमारि बिलोकि बड़ि मातु करिअ सोइ आजु।
रामु जाहिं बन राजु तजि होइ सकल सुरकाजु।।

(2/11)

नामु मंथरा मंदमति चेरी कैकइ केरि।
अजस पेटारी ताहि करि गई गिरा मति फेरि।।

(2/12)

वर्ण–व्यवस्था हिन्दू संस्कृति की रीढ़ रही है। जाति जन्म से निर्धारित होती है, कर्म से नहीं। जिस मनुष्य का जिस जाति में जन्म होता है, उसकी जीवन पर्यन्त वही जाति मानी जाती है। यदि जाति कर्म से मानी जाती तो परशुराम–द्रोणाचार्य जैसे धनुर्धर क्षत्रिय और धर्मपरायण युधिष्ठिर–विदुर ब्राह्मण माने जाते। संत तुलसीदास भी जन्मजात वर्ण–व्यवस्था के समर्थक और पोषक थे। उन्होंने रामराज्य के वर्णन में जनता के सुखी होने का मुख्य कारण वर्णाश्रम–धर्म के पालन को ही बतलाया है। उन्होंने वर्णाश्रम का प्रसंग वाल्मीकि रामायण से लिया है। देखिये एक झलक –

ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्रा लोभविवर्जिताः।
स्वकर्मसु प्रवर्तन्ते तुष्टाः स्वैरेव कर्मभिः।।

(वा.रा. 6/128/104)

श्रीराम राज्य में सभी वर्णों के लोग लोभ रहित थे। एक वर्ण के लोगों को दूसरे वर्ण के लोगों के कर्म से कोई लोभ नहीं था। सब लोग अपने ही वर्णोचित कर्मों से संतुष्ट थे।

बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुखहि नहिं भय सोक न रोग।।

(मानस 7/20)

रामराज्य में चारों वर्णों और चारों आश्रमों के लोग अपने धर्माचरण के परिणाम स्वरूप निर्भय, नीरोग, निःशोक और सदा सुखी थे।

महाभारत पुराण के अन्तर्गत श्रीमद्भगवद्गीता से भगवान के अवतार, जीव और ज्ञान–महिमा के

विषय का अनुवाद कर रामचरितमानस में सजाते हैं। देखिये उनकी एक झलक –

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृतां
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।।

(गीता– 4 / 7–8)

भगवान श्रीकृष्ण अपने अवतार का उद्देश्य बतलाते हुये कहते हैं कि हे अर्जुन! जब जब धर्म का पतन होता है और अधर्म बढ़ जाता है, तब तब साधुओं (सज्जन पुरुषों) की रक्षा करने के लिये, दुष्टों का विनाश और धर्म की स्थापना करने के लिये, मैं हर युग में अवतार लेता हूँ।

जब जब होइ धरम कै हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी।।
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी। सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी।।
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।।

(मानस 1 / 121 / 6–8)

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।

(गीता 15 / 7)

(संसार में सनातन (नित्य) जीवात्मा मेरा ही अंश है।)

ईस्वर अंस जीव अबिनासी।

(मानस 7 / 117 / 2)

ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते।

(गीता 4 / 37)

(ज्ञान रूपी अग्नि सब कर्मों को भस्म कर देती है।)

सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं। जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं।।

(मानस 5 / 44 / 2)

वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः।

(गीता 7 / 19)

(सब कुछ वासुदेव है– इस प्रकार जो मुझको भजता है, वह महात्मा अत्यंत दुर्लभ है।)

सब ते सो दुर्लभ सुरराया। राम भगति रत गत मद माया।।

(मानस 7 / 54 / 7)

(वह प्राणी अत्यंत दुर्लभ है, जो मद और माया से रहित होकर श्रीराम की भक्ति के परायण है।)

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

(गीता 18/66)

हे अर्जुन! तू सब धर्मों (भगवान को प्राप्त करने के लिये ज्ञान, ध्यान, जप, तप, यज्ञ, पूजादि समस्त विधियों) को छोड़ कर केवल मेरी शरण में आ जा। मैं तुझे सब पापों से मुक्त कर दूंगा, तू चिन्ता न कर।

नर बिबिध कर्म अधर्म बहु मत सोकप्रद सब त्यागहू।
बिस्वास करि कह दास तुलसी राम पद अनुरागहू॥

(मानस 3/36/14वाँ छंद)

(तुलसीदास कहते हैं– हे मनुष्यो! अनेक प्रकार के कर्म, अधर्म और मत शोकप्रद हैं। इनका त्याग कर दृढ़ विश्वास रख कर राम के चरणों में प्रेम करो।)

कलियुग में भगवान के नाम के महत्व के मोती को तुलसी विद्वानों की कसौटी श्रीमद्भागवत रूपी महासागर में डूब कर उसके तल से निकाल कर अपने मानस में टाँकते हैं। देखिये एक झलक –

कृते यद् ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां यजतो मखैः।
द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद्धरिकीर्तनात्॥

(श्रीमद्भागवत 12/3/52)

कृतजुग त्रेताँ द्वापर पूजा मख अरु जोग।
जो गति होइ सो कलि हरि नाम ते पावहिं लोग॥

(मानस 7/102 ख)

(सत्ययुग, त्रेता और द्वापर में जो गति पूजा, यज्ञ और योग से होती है, वही गति कलियुग में लोग केवल भगवान के नाम से पा जाते हैं।)

कृष्णार्पितं कुशलदमन्यार्पितमसौख्यदम्।

(पद्मपुराण, सर्ग 6/16)

(भगवान को समर्पित की हुयी वस्तु कल्याणदायिनी होती है तथा अन्य को दी हुयी वस्तु दुखदायिनी होती है।)

प्रेम भगति जल बिनु रघुराई। अभिअंतर मल कबहु न जाई॥

(मानस 7/49/6)

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।

(ईशोपनिषद्)

(अखिल ब्रह्मांड में जो कुछ भी जड़—चेतन रूप जगत है, यह समस्त ईश्वर से व्याप्त है अर्थात् यह जगत ईश्वरमय है।)

ईशोपनिषद् के इस वचन का अभिप्रायः यही है कि यह सारा जगत ईश्वर से आच्छादित है। सर्वत्र उसी का विस्तार है। कण—कण में घट—घट में उसी की सत्ता जगमगा रही है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, वृक्ष, लता, पर्वत, सागर— सब भगवान के ही रूप हैं। सब ईश्वर का शरीर हैं। जो व्यक्ति जड़—चेतन में, घट—घट में, विद्याविनय सम्पन्न ब्राह्मण में, चांडाल—हाथी—गौ—कुत्ता—चींटी में भगवान की झाँकी देखता है — वही भक्त है, वही ज्ञानी है, वही समदर्शी है। जब सर्वत्र सब में राम ही रम रहे हैं तो कौन वंदनीय नहीं है अर्थात् सभी वन्दनीय हैं। तभी तो संतशिरोमणि तुलसीदास कहते हैं —

सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।।

(मा0 1/8/2)

इन कतिपय उदाहरणों के आधार पर कहा जा सकता है कि तुलसीदास का यह उद्घोष कि मैं अनेक वेद, शास्त्र, पुराणादि ग्रंथों से लेकर इस रामकथा को रचता हूँ, सत्य है। पर यह रचना इतनी निपुणता से की गयी है कि यह पूर्णरूपेण मौलिक लगती है। संत तुलसीदास ने इस रामकथामृत का स्वयं तो पान किया ही साथ ही विश्व को भी मधुरामृत पान कराया। इसके लिये विश्व उनका ऋणी है।

विद्वद्वर तुलसीदास ने वेद, शास्त्र पुराणादि अथाह सागरों में गोते लगा कर उन से ज्ञान, कर्म और भक्ति रूपी मोतियों को निकाल कर भव—सागर पार करने वाले पोत रूपी श्रीरामचरितमानस में बड़े ही कवि—कर्म—कौशल से टाँका है। इस कार्य के लिये उनकी जितनी प्रशंसा की जाये, थोड़ी है। ऐसे रत्न—पारखी, सारग्राही संतशिरोमणि भक्त शिरोमणि तुलसीदास के चरणों में शत शत नमन।

मानस - महिमा

'मानस' भी क्या है? इसे पूजते क्यों भक्ति भाव?
किस हेतु पढ़ें-सुनें राम-भक्त भक्ति-भाव?
राम का स्वरूप शुचि राम-रस सुख-सार।
भव-ताप तापितों को पुण्यसलिला की धार।।
कर्म-भक्ति-ज्ञान का यह पावन प्रयागराज।
धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष दाताओं का सरताज।।

- सरल

नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना

विनोद शर्मा, ब्यूरो चीफ 'नवभारत टाइम्स'

आज विश्व में धर्म व जाति के संघर्ष के कारण मानव जाति के अस्तित्व को खतरा पैदा होता जा रहा है। शक्ति व संसाधनों के लगातार प्रयोग से प्रकृति को आहत किया जा रहा है। सह अस्तित्व की भावना समाप्त होती जा रही है। दुनिया में अपनी–अपनी ताकत को दिखाने के लिए कई गुट बनते जा रहे हैं। ऐसे समय में जब हमारे चारों ओर विपरीत आचरण हो रहे हैं। तब रामराज्य के संबंध में चर्चा करना आवश्यक है। भारतीय संस्कृति में श्रीराम आधार पुरुष हैं। उन्होंने आदर्श समाज की परिकल्पना के साथ–साथ समाज को ऐसी दिशा देने की कोशिश की, जिसमें छोटे बड़े के विचार को समाप्त करते हुए सभी को समानता की दृष्टि से देखा जाए। राम राज्य में भय, शोक दुख जैसे शब्द नहीं थे। यथा –

राम राज बैठें त्रैलोका। हरषित भए गए सब सोका।।

(7/20/7)

अर्थात् रामराज्य में कोई दुखी व गरीब नहीं था। विद्वानों की कमी नहीं थी। सभी के मत का आदर किया जाता था। राजधर्म में राजा अपने हित नहीं, बल्कि जनता के हित को सर्वोपरि मानता था। राम के राजतिलक की जब बारी आई तब भी श्रीराम ने विचार किया कि मैं अपने भाइयों में सबसे बड़ा हूँ। क्या इस कारण मुझे राजतिलक दिया जा रहा है, जबकि उस समय यह परंपरा थी कि बड़े पुत्र को राजा बनाया जाता था। उनका आशय यह था कि जिसमें राजा के गुण हों, वही राजा बनाया जाए। इसके लिए पहले सभी को परखा जाए। श्रीरामजी इस प्रकार से सोचते हैं –

जनमे एक संग सब भाई। भोजन सयन केलि लरिकाई।।
करनबेध उपबीत बिआहा। संग संग सब भए उछाहा।।
बिमल बंस यहु अनुचित एकू। बंधु बिहाइ बड़ेहि अभिषेकू।।

(2/10/5–7)

वनवास काल में भी श्रीराम की वनवासियों के संग अटूट मित्रता थी। उन्होंने राजाओं से मिलने की बजाय वन में रहने वाले ऋषि मुनियों के साथ अपना सामंजस्य बनाया। उन्होंने अपने स्वभाव में प्रकृति प्रेम भी उजागर किया। वे बचपन में काग के साथ खेलते थे। जंगल में उन्होंने जटायु के साथ जो व्यवहार किया वह हमें पशु व पक्षियों के साथ सह अस्तित्व की भावना को दर्शाता है। उनके अंदर साम्राज्यवाद की भावना कतई नहीं थी। श्रीराम ने अयोध्या में राजतिलक की बजाय वनवास होने का कोई प्रतिशोध नहीं किया, अपितु अपनी माता कौशिल्या से यह कहा था –

पिताँ दीन्हि मोहि कानन राजू। जहँ सब भाँति मोर बड़ काजू।।
आयसु देहि मुदित मन माता। जेहिं मुद मंगल कानन जाता।।

(2 / 53 / 6–7)

बालि के द्वारा अपने भाई सुग्रीव के साथ अनुचित व्यवहार करने तथा उसकी पत्नी का हरण करने के कारण सुग्रीव का साथ दिया। उसे न्याय दिलाने में मदद की और पंपासुर का राज्य सुग्रीव के हवाले कर दिया। इसी तरह जब सीता का हरण करके रावण लंका ले गया, तब श्रीराम ने अपने जंगल में रहने वाले वनवासियों अर्थात् वानर–भालुओं की मदद से रावण पर विजय प्राप्त की। वे चाहते तो भरत समेत कई अन्य राजाओं की मदद ले सकते थे, लेकिन उन्हें अपने मित्रों पर पूरा भरोसा था। उनकी इस नीति ने यह भी साबित किया कि एक राजा को अपने मित्रों की विश्वसनीयता पर पूरा भरोसा करना चाहिए। सच्चे मित्र की परिभाषा श्रीरामजी इस प्रकार से करते हैं –

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी। तिन्हहिं बिलोकत पातक भारी।।
निज दुख गिरि सम रज करि जाना। मित्रक दुख रज मेरु समाना।।
जिन्हें कें असि मति सहज न आई। ते सठ कत हठि करत मिताई।।

(4 / 7 / 1–3)

श्रीराम ने रावण से युद्ध को टालने की पूरी कोशिश की। एक बार अंगद को भी भेजा, किन्तु जब वह नहीं माना तो तब युद्ध करना पड़ा। रावण से जीत हासिल करने के बाद भी लंका का राज्य विभीषण को सौंप दिया। जब उन्होंने विभीषण का पहले ही तिलक कर दिया, तब श्रीराम से पूछा गया कि यदि रावण भी उनकी शरण में जा जाए जब वे क्या करेंगे। उन्होंने कहा था कि ऐसी स्थिति में वे अयोध्या का राज्य रावण को दे देंगे और भाइयों को साथ लेकर वन में चले जाएंगे। श्रीराम के वन में आने का इंतजार करने वाले कितने ही संत थे, वे उन सभी से मिले। जीत हासिल करने के बाद भी वे सभी को लेकर अयोध्या गए। उनके साथ विभीषण, सुग्रीव, हनुमान, जामवंत व अंगद आदि भी अयोध्या पहुँचे थे। उनकी हर नीति ऐसी थी जिसमें कहीं किसी का शोषण नहीं था तथा सभी के प्रति समानता की भावना थी।

आज हमारा तंत्र बहुमत के आधार पर चल रहा है। पहले लोकमत, फिर जनमत और अब बहुमत के अनुसार शासन चलाया जा रहा है। लोकमत के अनुसार आज भी सभी को शिक्षा व स्वास्थ्य में समानता की जरूरत है, क्या यह अधिकार हर किसी को मिल रहा है। शिक्षा में कई स्लैप हो गए हैं। एक गरीब का बच्चा झोपड़ी में चल रहे स्कूल में पढ़ रहा है, जबकि कई कान्वेंट स्कूल में अमीरों के बच्चे बेहतर शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। जाहिर सी बात है कि इससे समाज के दोनों वर्गों में बड़ी खाई पैदा हो रही है जो किसी भी दिन आक्रोश का कारण बन सकती है। हमें रामराज्य के आदर्शों के अनुसार असमानता को दूर करने का हर संभव प्रयास करना होगा। रामराज्य में समाज में असमानता नहीं थी। कोई भी दरिद्र और दुखी नहीं था –

नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना।।

(7/21/6)

जब हम श्रीराम राज्य के इस आदर्श को प्राप्त कर लेंगे तभी हमारा समाज, हमारा देश और सम्पूर्ण विश्व शांतिपूर्वक रह सकेगा। इसके लिए श्रीरामजी की तरह शासक अर्थात् राजनेताओं को अपने निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर जनता के कल्याण हेतु कार्य करना होगा और जनता को भी आपसी सद्भाव से प्रेमपूर्वक रहते हुए समाज के नियमों का पालन करना होगा, जैसा कि राम राज्य में होता था –

सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।।

(7/21/2)

With best compliments from :

R.P. Buildwell Pvt. Ltd.
R.P. Construction Pvt. Co.
Window Craft Pvt. Ltd.

Manufactuers, Engineers, Contractors & Builders

C-244, Pandav Nagar, New Delhi - 110092
E-mail : rpbuildwell97@yahoo.com
Office : 32562191, 32576317
Mobile : 08287833111

दैनिक जागरण | नई दिल्ली, 29 मार्च 2015

श्रीराम जन्मोत्सव में दिखा उत्साह

- समिति की रजत जयंती पर स्मारिका का हुआ विमोचन
- पिछले 25 वर्षों से समिति लगातार कर रही है आयोजन

जागरण संवाददाता, नोएडा : श्रीराम चरित्र मानस सत्संग समिति द्वारा आयोजित तीन दिवसीय श्रीराम जन्मोत्सव समारोह संपन्न हो गया। समिति लगातार पिछले 25 वर्षों से जन्मोत्सव का आयोजन कर रही है। इस वर्ष समिति ने समारोह को रजत जयंती के रूप में मनाया। इस अवसर पर पूर्व आईएएस अधिकारी गणेश शंकर त्रिपाठी ने समिति की स्मारिका का विमोचन किया।

तीन दिन तक चले जन्मोत्सव कार्यक्रम में चित्रकूट से आए कथाकार आचार्य राम गोपाल तिवारी ने श्रीराम की महिमा का गुणगान किया। उन्होंने कहा कि भगवान श्रीराम ने विश्व कल्याण के लिए जन्म लिया था। क्योंकि उनके जन्म से पहले धरती पर बहुत तेजी से पाप और अधर्म बढ़ने लगा था। भगवान राम ने राक्षसों का बध करके धरती पर पाप और अधर्म का अंत किया। राम ने पूरे जीवन मर्यादा में रहकर ही विश्व कल्याण किया, इसीलिए वह मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से समिति के अध्यक्ष दिनेश चंद शर्मा, सचिव डॉ. भगवान दास [redacted] डॉ. रविंद्र कुमार शर्मा, नीलूराम वर्मा, देवेंद्र अवाना, कु अभिलाषा सहित अन्य लोगों का विशेष सहयोग रहा।

सेक्टर-33 स्थित अग्रसेन भवन में रामचरितमानस सत्संग समिति के रजत जयंती समारोह को संबोधित करते। जागरण

सेक्टर-33 स्थित अग्रसेन भवन में रामचरितमानस सत्संग समिति के रजत जयंती समारोह में उपस्थित लोग। जागरण

श्री राम-नाम चौपाई माला

ज्योति अरविन्द्र सेंतिया, मोनी बाबा मंदिर के पीछे, नौगांव (मध्य प्रदेश)

गोस्वामी तुलसीकृत श्रीरामचरितमानस की 4506 चौपाइयों में से 108 श्री राम–नाम चौपाई माला तैयार की गई है। रामचरितमानस हिन्दुओं का सबसे पूजनीय, अनुकरणीय एवं अमूल्य ग्रन्थ है। इसका पाठ करने से मानव का कल्याण अवश्यम्भावी है। सम्पूर्ण मानस का पाठ करने से जो फल प्राप्त होता है वह 108 **'राम नाम चौपाई की माला'** का पाठ करने से होगा। इसमें जरा भी संदेह नहीं है। मानस के सभी सात काण्ड़ो से यह "राम नाम चौपाई माला" संकलित की गई है।

1. राम नाम कलि अभिमत दाता। हित परलोक लोक पितु माता।। (1/27/6)
2. राम सुस्वामि कुसेवक मोसो। निज दिसि देखि दयानिधि पोसो।। (1/28/4)
3. रामकथा कलि पंनग भरनी। पुनि बिबेक पावक कहुँ अरनी।। (1/31/6)
4. रामकथा कलि कामद गाई। सुजन सजीवनि मूरि सुहाई।। (1/31/7)
5. रामहि प्रिय पावनि तुलसी सी। तुलसिदास हित हियँ हुलसी सी।। (1/31/12)
6. रामचरित चिंतामनि चारू। संत सुमति तिय सुभग सिंगारू।। (1/32/1)
7. रामकथा कै मिति जग नाहीं। असि प्रतीति तिन्ह के मन माहीं।। (1/33/5)
8. राम धामदा पुरी सुहावनि। लोक समस्त बिदित अति पावनि।। (1/35/3)
9. रामचरितमानस एहि नामा। सुनत श्रवन पाइअ बिश्रामा।। (1/36/7)
10. रामचरितमानस मुनि भावन। बिरचेउ संभु सुहावन पावन।। (1/35/9)
11. राम सीय जस सलिल सुधासम। उपमा बीचि बिलास मनोरम।। (1/39/3)
12. रामभगति सुरसरितहि जाई। मिली सुकीरति सरजु सुहाई।। (1/40/1)
13. राम तिलक हित मंगल साजा। परब जोग जनु जुरे समाजा।। (1/41/7)
14. राम राज सुख बिनय बड़ाई। बिसद सुखद सोइ सरद सुहाई।। (1/42/6)
15. राम सुप्रेमहि पोषत पानी। हरत सकल कलि कलुष गलानी।। (1/43/3)
16. राम नाम कर अमित प्रभावा। संत पुरान उपनिषद गावा।। (1/46/2)
17. राम कवन प्रभु पूछउँ तोही। कहिअ बुझाइ कृपानिधि मोही।। (1/46/6)
18. रामकथा ससि किरन समाना। संत चकोर करहिं जेहि पाना।। (1/47/7)

19.	रामकथा मुनिबर्ज बखानी। सुनी महेस परम सुखु मानी।।	(1/48/3)
20.	राम नाम सिव सुमिरन लागे। जानेउ सतीं जगतपति जागे।।	(1/60/3)
21.	रामचरित अति अमित मुनीसा। कहि न सकहिं सत कोटि अहीसा।।	(1/105/3)
22.	रामकथा सुंदर कर तारी। संसय बिहग उड़ावनिहारी।।	(1/114/1)
23.	रामकथा कलि बिटप कुठारी। सादर सुनु गिरिराजकुमारी।।	(1/114/2)
24.	राम नाम गुन चरित सुहाए। जनम करम अगनित श्रुति गाए।	(1/114/3)
25.	राम सच्चिदानंद दिनेसा। नहिं तहँ मोह निसा लवलेसा।।	(1/116/5)
26.	राम ब्रह्म ब्यापक जग जाना। परमानंद परेस पुराना।।	(1/116/8)
27.	राम सो परमातमा भवानी। तहँ भ्रम अति अबिहित तव बानी।।	(1/119/5)
28.	राम अतर्क्य बुद्धि मन बानी। मत हमार अस सुनहि सयानी।।	(1/121/3)
29.	राम जनम के हेतु अनेका। परम बिचित्र एक तें एका।।	(1/122/2)
30.	राम कीन्ह चाहहिं सोइ होई। करै अन्यथा अस नहिं कोई।।	(1/128/7)
31.	रामचन्द्र के चरित सुहाए। कलप कोटि लगि जाहिं न गाए।।	(1/140/6)
32.	राम देखावहिं अनुजहि रचना। कहि मृदु मधुर मनोहर बचना।।	(1/225/3)
33.	राम रूपु अरु सिय छबि देखें। नर नारिन्ह परिहरीं निमेषें।।	(1/249/1)
34.	राम बाहुबल सिंधु अपारू। चहत पारु नहिं कोउ कड़हारू।।	(1/260/8)
35.	नामरूप राकेसु निहारी। बढ़त बीचि पुलकावलि भारी।।	(1/262/3)
36.	रामहि लखनु बिलोकत कैसें। ससिहि चकोर किसोरकु जैसें।।	(1/263/7)
37.	राम कहेउ रिस तजिअ मुनीसा। कर कुठारु आगें यह सीसा।।	(1/281/7)
38.	राम मात्र लघु नाम हमारा। परसु सहित बड़ नाम तोहरा।।	(1/282/6)
39.	राम कहा मुनि कहहु बिचारी। रिस अति बड़ि लघु चूक हमारी।।	(1/283/7)
40.	राम रमापति कर धनु लेहू। खैंचहु मिटै मोर संदेहू।।	(1/284/7)
41.	रामु लखनु उर कर बर चीठी। रहि गए कहत न खाटी मीठी।।	(1/290/5)
42.	राम लखन कै कीरति करनी। बारहिं बार भूपबर बरनी।।	(1/295/6)
43.	राम सरिस बरु दुलहिनि सीता। समधी दसरथु जनकु पुनीता।।	(1/304/2)
44.	रामहि देखि बरात जुड़ानी। प्रीति कि रीति न जाति बखानी।।	(1/309/1)
45.	रामहि चितव सुरेस सुजाना। गौतम श्रापु परम हित माना।।	(1/317/5)

46. राम सीय सुंदर प्रतिछाहीं। जगमगात मनि खंभन माहीं।। (1/326/3)
47. राम सीय सिर सेंदुर देहीं। सोभा कहि न जाति बिधि केहीं।। (1/325/8)
48. राम बिदा मागत कर जोरी। कीन्ह प्रनामु बहोरि बहोरी।। (1/367/3)
49. राम करौं केहि भाँति प्रसंसा। मुनि महेस मन मानस हंसा।। (1/341/3)
50. रामहि निरखि ग्राम नर नारी। पाइ नयन फलु होहिं सुखारी।। (1/343/8)
51. राम रूपु गुन सीलु सुभाऊ। प्रमुदित होइ देखि सुनि राऊ।। (2/1/8)
52. राम सीय तन सगुन जनाए। फरकहिं मंगल अंग सुहाए।। (2/7/4)
53. रामहिं बंधु सोच दिन राती। अंडन्हि कमठ हृदय जेहि भाँती।। (2/7/8)
54. राम करहु सब संजम आजू। जौं बिधि कुसल निबाहै काजू।। (2/10/3)
55. राम सपथ सत कहउँ सुभाऊ। राममातु कछु कहेऊ न काऊ।। (2/32/1)
56. राम साधु तुम्ह साधु सयाने। राममातु भलि सब पहिचाने।। (2/33/7)
57. राम राम रट बिकल भुआलू। जनु बिनु पंख बिहंग बेहालू।। (2/37/1)
58. राम सुमंत्रहि आवत देखा। आदरु कीन्ह पिता सम लेखा।। (2/39/6)
59. रामु कुभाँति सचिव सँग जाहीं। देखि लोग जहँ तहँ बिलखाहीं।। (2/39/8)
60. राम सत्य सबु जो कछु कहहू। तुम्ह पितु मातु बचन रत अहहू।। (2/43/3)
61. रामहि मातु बचन सब भाए। जिमि सुरसरि गत सलिल सुहाए।। (2/43/8)
62. रामहि चितइ रहेउ नरनाहू। चला बिलोचन बारि प्रबाहू।। (2/44/3)
63. राम सरिस सुत कानन जोगू। काह कहिहि सुनि तुम्ह कहुँ लोगू।। (2/50/7)
64. राम उठाइ मातु उर लाई। कहि मृदु बचन बहुरि समुझाई।। (2/57/8)
65. राम ब्रह्म परमारथ रूपा। अबिगत अलख अनादि अनूपा।। (2/93/7)
66. राम लखन सिय रूप निहारी। पाइ नयन फलु होहिं सुखारी।। (2/114/3)
67. राम लखन सिय प्रीति सुहाई। बचन अगोचर किमि कहि जाई। (2/123/7)
68. राम बास बन संपति भ्राजा। सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा।। (2/235/5)
69. राम कृपाल निषाद नेवाजा। परिजन प्रजउ चहिअ जस राजा।। (2/250/8)
70. राम बदनु बिलोक मुनि ठाढ़ा। मानहुँ चित्र माझ लिखि काढ़ा।। (3/10/24)
71. राम अनुज समेत बैदेही। निसि दिनु देव जपत हहु जेही।। (3/12/8)
72. राम रोष पावक अति घोरा। होइहि सकल सलभु कुल तोरा।। (3/29/17)

73. राम कहा तनु राखहु ताता। मुख मुसुकाइ कही तेहिं बाता।। (2/31/5)
74. राम सकल नामन्ह ते अधिका। होउ नाथ अघ खग गन बधिका।। (3/42/8)
75. राम राम हा राम पुकारी। हमहि देखि दीन्हेउ पट डारी।। (4/5/5)
76. राम बालि निज धाम पठावा। नगर लोग सब ब्याकुल धावा।। (4/11/1)
77. राम काजु अरु मोर निहोरा। बानर जूथ जाहु चहुँ ओरा।। (4/22/6)
78. राम काज कारन तनु त्यागी। हरि पुर गयउ परम बड़भागी।। (4/27/8)
79. राम काज लगि तव अवतारा। सुनतहिं भयउ पर्वताकारा।। (4/30/6)
80. राम काजु करि फिरि मैं आवौं। सीता कइ सुधि प्रभुहि सुनावौं।। (5/2/4)
81. रामचंद्र गुन बरनै लागा। सुनतहिं सीता कर दुख भागा।। (5/13/5)
82. राम दूत मैं मातु जानकी। सत्य सपथ करुनानिधान की।। (5/13/9)
83. राम नाम बिनु गिरा न सोहा। देखु बिचारि त्यागि मद मोहा।। (5/23/3)
84. राम बचन सुनि बानर जूथा। सकल कहहिं जय कृपा बरूथा।। (5/49/2)
85. राम तेज बल बुधि बिपुलाई। सेष सहस सत सकहिं न गाई।। (5/56/1)
86. राम बचन सब के जिए भाए। मुनिबर निज निज आश्रम आए।। (6/3/5)
87. राम बिरोध कुसल जसि होई। सो सब तोहि सुनाइहि सोई।। (6/21/9)
88. राम कृपा करि जुगल निहारे। भए बिगत श्रम परम सुखारे।। (6/46/2)
89. राम प्रभाव बिचारि बहोरी। बंदि चरन कह कपि कर जोरी।। (6/60/8)
90. राम सरिस को दीन हितकारी। कीन्हे मुकुत निसाचर झारी।। (6/114/9)
91. राम कहा सेवकन्ह बुलाई। प्रथम सखन्ह अन्हवावहु जाई।। (7/11/1)
92. राम भगति रत नर अरु नारी। सकल परम गति के अधिकारी।। (7/21/4)
93. राम राज कर सुख संपदा। बरनि न सकइ फनीस सारदा।। (7/22/6)
94. राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती। नाना भाँति सिखावहिं नीती।। (7/25/3)
95. राम सुनहु मुनि कह कर जोरी। कृपासिंधु बिनती कछु मोरी।। (7/48/3)
96. राम चरित सत कोटि अपारा। श्रुति सारदा न बरनै पारा।। (7/52/2)
97. राम चरित जे सुनत अघाहीं। रस बिसेष जाना तिन्ह नाहीं।। (7/53/1)
98. राम चरित बिचित्र बिधि नाना। प्रेम सहित कर सादर गाना।। (7/57/8)
99. राम भगति पथ परम प्रबीना। ग्यानी गुन गृह बहु कालीना।। (7/62/3)

100. राम उदर देखेउँ जग नाना। देखत बनइ न जाइ बखाना।। (7/82/5)
101. राम प्रसाद भगति बर पायउँ। प्रभु पद बंदि निजाश्रम आयउँ।। (7/83/2)
102. रामहिं भजहिं तात सिव धाता। नर पावँर कै केतिक बाता।। (7/106/3)
103. रामचरित सर गुप्त सुहावा। संभु प्रसाद तात मैं पावा।। (7/113/11)
104. राम भजत सोइ मुकुति गोसाईं। अनइच्छित आवइ बरिआईं।। (7/119/4)
105. राम भगति मनि उर बस जाकें। दुख लवलेस न सपनेहुँ ताकें।। (7/120/9)
106. राम चरन नूतन रति भई। माया जनित बिपति सब गई।। (7/125/2)
107. राम कथा के तेइ अधिकारी। जिन्ह कें सत संगति अति प्यारी।। (7/128/6)
108. रामहिं सुमिरिअ गाइअ रामहिं। संतत सुनिअ राम गुन ग्रामहि।। (7/130/6)

!! इति श्रीराम नाम चौपाई माला !!

मानस में लोभ के रूप में मन्थरा को प्रस्तुत किया गया है जो अयोध्या का वैभव पाने के लिए षड्यंत्र और झूठ का जाल बुनकर कैकेयी को शिकार बना लेती है। उस जाल को काटने का अस्त्र दशरथ (पुरुषार्थ), वशिष्ठ (विवेक अर्थात् विचार शक्ति), राम (ज्ञान), लक्ष्मण (वैराग्य) और भरत (अनुराग) के पास नहीं है। मन्थरा (लोभ), अयोध्या राजमहल के रनिवास (हृदय के अन्दर) कफ की तरह चिपका है।

काम बात कफ लोभ अपारा। क्रोध पित्त नित छाती जारा।।

लोभ के इस जाल को काटने और चिपचिपे कफ से हमारी छाती को अलग सुरक्षित करने के लिये शत्रुघ्न (त्याग, समर्पण) के लात की चोट (ठुकराने) की आवश्यकता है।

प्रस्तुति : **मानस रत्न पं० रामगोपाल तिवारी**

मन कामना सिद्धि नर पावा

श्रीमती ज्योत्सना प्रसाद
सी. 24/4, कबीर चौरा, वाराणसी - 221001, दूरभाष - 0542-2214741

श्रीरामचरितमानस के प्रति करोड़ों लोगों की आस्था सर्वविदित है। इसकी एक–एक चौपाई मंत्र है। पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से किया गया 'रामचरितमानस' का एक ही पाठ करने वाले व्यक्ति को अभीष्ट सिद्धि प्राप्त करवाता है।

श्रीरामचरितमानस ज्ञान एवं भक्ति का भण्डार है जिसमें 'सुन्दरकाण्ड' का अपना विशेष महत्व है। 'सुन्दरकाण्ड' के पाठ का महत्व सर्वविदित है। 'सुन्दरकाण्ड' के बारे में लोगों का विश्वास है कि जीवन की सफलता, कार्यों की सिद्धि तथा समस्त संकटों से मुक्ति 'सुन्दरकाण्ड' के निरन्तर पाठ करने से अवश्य ही प्राप्त होती है। असंख्य लोगों का विश्वास है कि 'सुन्दरकाण्ड' का पाठ करने वाला व्यक्ति अपने मनोवांछित उद्देश्य को प्राप्त कर लेता है। कठिन एवं भयावह परिस्थितियों एवं संकट में भी धन प्राप्ति, सुख–सौभाग्य व कठिन रोगों से मुक्ति दिलाने का यह एक उत्तम साधन है। 'सुन्दरकाण्ड' का पाठ करने से सभी वांछित फलों की उपलब्धि हो जाती है। काशी में संकट–मोचन मन्दिर में लोगों को मैंने प्रत्येक दिन 'सुन्दरकाण्ड' का पाठ करते हुये देखा है। जो व्यक्ति प्रतिदिन 'सुन्दरकाण्ड' का पाठ नहीं कर पायें, तो वे प्रत्येक मंगलवार या शनिवार को 'सुन्दरकाण्ड' का पाठ करें, तो वे भी मनोवांछित फल प्राप्त कर सभी प्रकार के कष्टों से मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। तमाम ऐसे लोग मेरी जानकारी में हैं, जो नित्य इसका पाठ करते हैं और उनसे ही मुझे यह ज्ञात भी हुआ है कि 'सुन्दरकाण्ड' का पाठ करने से उन्हें अलौकिक व अद्भुत फल प्राप्त हुए हैं।

श्रीरामचरितमानस के अन्तर्गत प्रत्येक काण्ड का अपना–अपना महत्व है, परन्तु 'सुन्दरकाण्ड' की अपनी एक अलग विशेषता है। इसमें श्रीहनुमानजी के द्वारा माता सीता की खोज किये जाने का विवरण है। पवनसुत हनुमानजी द्वारा लंका में प्रवेश करना ही बड़ा कठिन कार्य था, परन्तु भगवान श्रीराम को हृदय में धारण करके पवनसुत हनुमान जी माता सीता जी की खोज के लिए चल दिये –

जब लगि आवौं सीतहि देखी। होइहि काजु मोहि हरष बिसेषी।।
यह कहि नाइ सबन्हि कहुँ माथा। चलेउ हरषि हियँ धरि रघुनाथा।।

(5/1/3–4)

श्रीहनुमानजी को लंका पहुँचने में भी कई विघ्नों एवं बाधाओं का सामना करना पड़ा। सुरसा नाम की सर्पों की माता ने उन्हें लंका जाने से रोकने के लिए कई मायावी उपाय किए, किन्तु वह महाबली हनुमानजी पर किसी प्रकार का कोई मायावी प्रभाव करने में सफल नहीं हो पायीं और पवनसुत हनुमानजी ने अपने बुद्धि, बल एवं विवेक से उन्हें पराजित किया। तब सुरसा ने पवनसुत हनुमानजी को आशीर्वाद दिया कि

आप प्रभु श्रीरामजी के सारे कार्यों को पूर्ण करोगे, क्योंकि तुम्हारे पास बल–बुद्धि का भण्डार है –

राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान।
आसिष देइ गई सो हरषि चलेउ हनुमान।।

(5/2)

तत्पश्चात् दो बाधाएं और मिलीं एक समुद्र के अंदर रहने वाली राक्षसी सिंहनी और दूसरी लंकिनी। हनुमानजी इन दोनों बाधाओं को पार करके लंका के अंदर प्रवेश कर गए। लंका पहुँच कर वहाँ पर रावण के भाई विभीषण से मिले, उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि लंका में भी श्रीराम के भक्त है –

रामायुध अंकित गृह सोभा बरनि न जाइ।
नव तुलसिका बृंद तहँ देखि हरष कपिराइ।।

(5/5)

भगवान श्रीराम के भक्त विभीषण से माता सीताजी के बारे में पूछा तो उन्होंने माता सीताजी का पता पवनसुत हनुमानजी को बताया। अंततः महाबली हनुमानजी माता सीताजी की तलाश करते हुए उनके पास पहुँच गये और उन्होंने श्रीराम द्वारा दी गई 'राम' नाम अंकित अंगूठी माता सीता के सम्मुख गिरा दी।

तब देखी मुद्रिका मनोहर। राम नाम अंकित अति सुन्दर।।

चकित चितव मुदरी पहिचानी। हरष बिषाद हृदयँ अकुलानी।।

माता सीताजी से मिलकर हनुमानजी ने सारी कथा सुना दी कि किस प्रकार प्रभु श्रीराम से उनकी मुलाकात हुई और उन्हें ही प्रभु श्रीराम ने आपकी खोज करने की आज्ञा दी। माता सीता को विरह से परम व्याकुल देखकर श्रीराम भक्त हनुमानजी ने उनको अनेक प्रकार से समझाया कि श्रीराम शीघ्र ही यहाँ (लंका) आयेंगे और आपको यहाँ से ले जायेंगे।

'सुन्दरकाण्ड' के अन्तर्गत माता सीता और राम भक्त हनुमान का संवाद अत्यन्त मार्मिक है, क्योंकि हनुमानजी नहीं, बल्कि उनके माध्यम से मानों स्वयं श्रीरामजी ही सीताजी से बातें कर रहे हों –

कहेउ राम बियोग तव सीता। मो कहुँ सकल भए बिपरीता।।
नव तरु किसलय मनहुँ कृसानू। काल निसा सम निसि ससि भानू।।
तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा। जानत प्रिया एकु मनु मोरा।।
सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं। जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं।।
प्रभु संदेसु सुनत बैदेही। मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेहीं।।

(5/15/1–2, 6–8)

तत्पश्चात् माता सीताजी से अशोक वाटिका में लगे फल खाने की आज्ञा माँगी। आज्ञा लेकर राम भक्त हनुमान अशोक वाटिका में लगे फलदार वृक्षों से फल खाकर उसे उजाड़ने लगे।

मेघनाद जब हनुमानजी को नाग–पाश में बाँध कर ले गया, तब शंकरजी ने पार्वतीजी से कहा कि हे भवानी, जिनका नाम जप कर ज्ञानी मनुष्य संसार के बन्धन को काट डालते हैं, उनका दूत भला किसी बन्धन में कैसे आ सकता है? प्रभु श्रीराम के कार्य के लिए ही हनुमानजी ने स्वयं अपने को नाग–पाश में बंधवा लिया था –

जासु नाम जपि सुनहु भवानी। भव बंधन काटहिं नर ग्यानी।।
तासु दूत कि बंध तरु आवा। प्रभु कारज लगि कपिहिं बँधावा।।

(5 / 20 / 3–4)

रावण और श्रीहनुमानजी के मध्य भी तर्क–वितर्क हुआ तथा लंकेश उन्हें अपने यश–कीर्ति का बखान कर रहा था। हनुमानजी ने उसे समझाने के बहुत ही प्रयत्न किये, किन्तु लंका नरेश ने हनुमानजी के प्रयासों को विफल करते हुए उन्हीं को दण्डित करने के उद्देश्य से उनकी पूँछ में आग लगवा दी। महाबली श्रीराम दूत हनुमानजी ने पूँछ में लगी आग से रावण की सोने की लंका को क्षण भर में ही जला दिया।

लंका से चलते समय हनुमानजी माता सीता से चूड़ामणि लेकर हर्षित हुए। तब माता सीता ने राम भक्त हनुमानजी से यह कहा –

कहेहु तात अस मोर प्रनामा। सब प्रकार प्रभु पूरनकामा।।
दीन दयाल बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी।।

(5 / 27 / 2–3)

माता सीताजी की आज्ञा पाकर श्रीरामदूत हनुमान प्रभु श्रीराम के पास वापस आ गये। उन्होंने माता सीताजी के दुःख का वर्णन प्रभु श्रीराम से किया। जामवन्तजी ने कहा कि हे रघुनाथ जिस पर आपकी कृपा होती है, उस पर देवता, ऋषि–मुनि सब प्रसन्न होते हैं और आपकी कृपा से सब कार्य सफल हो जाते हैं और आज हमारा जन्म भी सफल हो गया है –

प्रभु की कृपा भयउ सबु काजू। जन्म हमार सुफल भा आजू।।

(5 / 30 / 4)

श्रीरामचन्द्रजी ने हनुमानजी की बहुत प्रशंसा की, तब वे श्रीरामजी के चरणों में 'त्राहि–त्राहि कहते हुए गिर पड़े। श्रीरामजी ने उन्हें उठाकर हृदय से लगा लिया और अपने पास बैठाकर लंका का पूरा वृतान्त सुना–

सुनु कपि तोहि समान उपकारी। नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी।।
प्रति उपकार करौं का तोरा। सनमुख होइ न सकत मन मोरा।।

(5 / 32 / 5–6)

सुनि प्रभु बचन बिलोकि मुख गात हरषि हनुमंत।
चरन परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवंत।।

(5 / 32)

बार-बार प्रभु चहइ उठावा। प्रेम मगन तेहि उठब न भावा॥

(5 / 33 / 1)

'सुन्दरकाण्ड' में हनुमानजी जैसे भक्त का गोस्वामी तुलसीदास जी ने बड़ी संजीदगी से स्वामी और सेवक का चरित्र–चित्रण किया है। साथ ही हनुमानजी के चरित्र का बड़ा ही सजीव चित्रण है, जिसे पढ़ कर ऐसा प्रतीत होता है कि मानो सम्पूर्ण रामायण पढ़ने का सारा सुख प्राप्त हो रहा है। भाई विभीषण की बात जब लंकेश ने नहीं मानी, तो विभीषण लंका का परित्याग करके श्रीराम की शरण में आ जाते हैं। लंका पर युद्ध करने के उद्देश्य से समुद्र पर पुल बनाने के लिए उन्होंने भगवान श्रीराम को सलाह दी।

'सुन्दरकाण्ड' में जितने भी दुर्लभ कार्य थे, वे सब बड़ी सरलता से श्रीरामजी की कृपा से पूर्ण हो गये। गोस्वामी तुलसीदासजी ने 'सुन्दरकाण्ड' के समापन में लिखा है कि कलियुग के पापों को हरने वाले श्रीरामजी के गुण समूह सुख के धाम, सन्देह का नाश करने वाले और विषाद का दमन करने वाले हैं। हे मूर्ख मन तू संसार की आस त्याग कर श्रीराम का गुणगान कर अर्थात् 'सुन्दरकाण्ड' को सुनो और इसका पाठ करो। यह सभी अमंगल कार्यों को मंगल कार्य में बदल देने वाला है। इसको आदर सहित सुनने या पाठ करने से व्यक्ति भवसागर से भी तर जायेगा।

'सुन्दरकाण्ड' का नित्य पाठ करने वाले व्यक्ति पर कभी भी विपत्ति आ ही नहीं सकती। उसके कठिन से कठिन रुके हुये कार्य पूर्ण हो जाते हैं। दुःख में, पीड़ा अथवा कष्ट में और सुख में भी हर क्षण 'सुन्दरकाण्ड' के भाव का मनन चिंतन करना चाहिए। 'हनुमान सिद्धि' के लेखक ने अपने पुत्र के स्वास्थ्य से परेशान होकर अपने पुत्र के स्वस्थ जीवन की कामनाओं को लेकर अन्त में चित्रकूट में हनुमान गढ़ी के पास बैठकर 'सुन्दरकाण्ड' का पाठ रोते हुए किया और एक दिन ऐसा आया कि नित्य पाठ के बल पर उसका लड़का स्वस्थ हो गया। हमने भी दुर्गाकुण्ड, वाराणसी में 'संकट मोचन मन्दिर' में श्रद्धालुओं द्वारा 'रामचरितमानस' का पाठ तथा 'सुन्दरकाण्ड' का नित्य पाठ करते हुए देखा है। हमने 'संकट मोचन मन्दिर' में यह भी देखा है कि एक–साथ दो चार मण्डली अलग–अलग स्थानों पर बैठ कर 'सुन्दरकाण्ड' का पाठ करती हैं। कलियुग में इससे बड़ा कोई और पुण्य नहीं है। यह सारे कष्टों और पापों को हरने वाला है तथा सुख–समृद्धि को देने वाला है। इसका निरन्तर पाठ करने से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है।

जीव की जीवन यात्रा के दो पक्ष हैं– एक शरीर के साथ का सांसारिक दृश्य भाग, दूसरा शरीर से अलग (मृत्यु) हो जाने के पश्चात अदृश्य भाग। जीवन का जो सांसारिक भाग दिखाई पड़ने वाला है, उसे स्वार्थ या लोक कहते हैं और अशरीरी अदृश्य भाग को परमार्थ या परलोक कहते हैं।

प्रस्तुति : **मानस रत्न पं0 रामगोपाल तिवारी**

बिनु सत्संग बिबेक न होई

वैद्य अच्युत कुमार त्रिपाठी, सदस्य

श्रीरामचरितमानस के प्रणेता गोस्वामी तुलसीदास एक विचारवान ईश्वर भक्त थे, जिन्होंने समाज की विभिन्न स्थितियों, परिस्थितियों और समस्याओं के साथ समाज में फैली विभिन्न कुरीतियों और परिस्थितियों को अच्छी तरह से परखा तथा समझा था, इसलिये उनका एक मात्र लक्ष्य था एक आदर्श समाज की स्थापना और उस आदर्श समाज के निर्माण में ज्ञान तथा सत्संग के साथ–साथ पथ प्रदर्शक संतसमाज की भूमिका अहम रही, जिसे बालकाण्ड के आरम्भ में ही उन्होंने सत्संग की महिमा के साथ संत समाज का सुन्दर निरूपण करते हुए लिखा है –

सुजन समाज सकल गुन खानी। करउँ प्रनाम सप्रेम सुबानी।।

(1/2/4)

अर्थात् सब गुणों की खान संत समाज को प्रेम सहित सुन्दर वाणी से प्रणाम करता हूँ।

बंदउँ संत समान चित हित अनहित नहिं कोइ।
अंजलि गत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध का दोइ।।

(1/3)

तुलसीदासजी संत ने संत समाज की वन्दना करते हुए यहाँ तक कहा कि मैं संतों को प्रणाम करता हूँ जिनके चित्त में समता है जिनका न कोई मित्र है और न कोई शत्रु है जैसे अंजलि में रखे सुन्दर फूल दोनों ही हाथों को समान रूप से सुगन्धित कर देते हैं। ऐसे संतों का सत्संग उनके सद् विचार उनकी योग्यता, ज्ञान, विवेक, विचारणा, विचार विमर्श तथा गवेषणात्मक शक्ति दृश्य जगत तथा अदृश्य जगत को पहिचानने में अद्भुत होती है।

सत्संग क्या है? साधुमहात्मा या धर्मनिष्ठ व्यक्ति के साथ उठना बैठना धार्मिक बातों की चर्चा करना नैतिकता के मार्ग पर आरूढ़ होने की प्रखर प्रेरणा प्राप्त करना ही सत्संग होता है।

तुलसीदासजी ने सत्संग का अर्थ संत मिलन, उनके दर्शन, कथन, वार्ता, श्रवण आदि में भी लिया है। उत्तरकाण्ड में जब सनकादि भगवान श्रीराम के दर्शनार्थ आते हैं तब भगवान श्रीराम कहते हैं –

आजु धन्य मैं सुनहु मुनीसा। तुम्हरें दरस जाहिं अघ खीसा।।
बड़े भाग पाइब सतसंगा। बिनहिं प्रयास होहिं भव भंगा।।

(7/33/7–8)

अर्थात् हे मुनीश्वरो! सुनिये आज मैं धन्य हूँ आपके दर्शनों से सारे पाप नष्ट हो गये। बड़े ही भाग्य से सत्संग की प्राप्ति होती है, जिससे बिना प्रयास के ही जन्म मृत्यु का चक्र नष्ट हो जाता है।

इस तरह रामायण, श्रीमद्भागवत महापुराण तथा गीता पर आधारित उपदेश और प्रवचनों को सुनकर यदि जीवन में उतारा जाये तभी उसकी सार्थकता सिद्ध होगी। तभी विवेक का जन्म होगा। विवेक का आधार है ज्ञान जिसे हम जानने समझने आदि की योग्यता का माध्यम कह सकते हैं। आध्यात्मिक और धार्मिक क्षेत्रों में आत्मा और परमात्मा के पारस्परिक सम्बन्ध, वास्तविक स्वरूप, भौतिक संसार की अनित्यता, नश्वरता तथा जीवन में सत्संगों से सुखानुभूति, संसार के आवागमन चक्र से मुक्ति या मोक्ष प्राप्त करने को यदि ज्ञान कहा जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी, इसलिए तुलसीदासजी का यह कहना **'बिनु सत्संग बिबेक न होई'** में विवेक, विकास तथा अध्यात्म की दृष्टि से सर्वोपरि है। पर आगे कहते हैं **'रामकृपा बिनु सुलभ न सोई'** अर्थात् हम यह भी कह सकते हैं कि **'बिनु हरि कृपा मिलहि नहीं संता'** इस प्रकार राम कृपा से संत समागम से ज्ञान प्राप्त कर विवेक के कपाट खुलते हैं।

उत्तरकाण्ड में शिव—पार्वती एवं काकभुसुंडि—गरुड़ संवाद में भी सत्संग की महिमा पर विशद वर्णन मिलता है।

श्रीरामजी को नागपास में बँधे देखकर गरुड़जी को मोह हो जाता है। उन्होंने नारदजी से पूछा तो उनको ब्रह्माजी के पास भेज दिया गया। ब्रह्माजी ने उन्हें शिवजी के पास भेजा। उस समय शिवजी कुबेर के यहाँ जा रहे थे। उन्होंने गरुड़जी को इस प्रकार समझाया —

मिलेहु गरुड़ मारग महँ मोही। कवन भाँति समुझावौं तोही।।
तबहिं होइ सब संसय भंगा। जब बहु काल करिअ सतसंगा।।
सुनिअ तहाँ हरि कथा सुहाई। नाना भाँति मुनिन्ह जो गाई।।

(7 / 61 / 3—5)

अर्थात् हे गरुड़! तुम मुझे रास्ते में मिले हो राह चलते मैं तुम्हें किस प्रकार समझाऊँ। सब सन्देहों का तभी नाश होगा जब दीर्घ काल तक सत्संग किया जाये और वहाँ हरिकथा सुनी जाये। जिसे मुनियों ने अनेकों प्रकार से गाया है। बहुत काल के समागम के अन्त में काकभुसुण्डि भी कहते हैं —

कहेउँ नाथ हरि चरित अनूपा। ब्यास समास स्वमति अनुरूपा।।
सत संगति दुर्लभ संसारा। निमिष दंड भरि एकउ बारा।।

(7 / 123 / 1 एवं 6)

अर्थात् सत्संगति संसार में दुर्लभ है। चाहे पलभर, घड़ी पर या एक बार ही मिले क्योंकि बिना सत्संग के हरिकथा प्राप्त नहीं होती और बिना हरिकथा के मोह दूर नहीं होता, जैसे गरुड़जी का मोह तथा बिना मोह भंग के श्रीरामजी के चरणों में दृढ़ अनुराग नहीं होता। चाहे जितना प्रयास कर लें, योग—जप—तप,

ईश्वर बिना अनुराग के नहीं मिल सकते। इस प्रकार से इन सबके मूल में सत्संग ही है –

बिनु सतसंग न हरि कथा तेहि बिनु मोह न भाग।
मोह गएँ बिनु राम पद होइ न दृढ अनुराग।।

(7 / 61)

मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा। किएँ जोग तप ग्यान बिरागा।।

(7 / 62 / 1)

सत्संग ही एक ऐसा माध्यम है जिससे हमारी आस्था उत्तरोत्तर ईश्वर के प्रति बढ़ती जाती है। जिसका निरंतर चिंतन होगा। उसमें उत्तरोत्तर आसक्ति बढ़ेगी। इसलिये भक्ति के प्रथम सोपान में **'प्रथम भगति संतन्ह कर संगा'** कहा है जो वायुमंडल में विद्युत प्रवाह की भाँति फैलकर अन्तःकरण को निर्मल कर देता है। ईश्वर प्राप्ति का सबसे सुगम साधन सत्संगति है, क्योंकि जो संत का विचार अन्तःकरण में धारण कर लेगा वह ईश्वर को अवश्य प्राप्त कर लेगा।

काकभुसुंडिजी ने गरुड़जी को श्रीरामकथा सुनाई जिससे उन्हें विवेक प्राप्त हुआ और उनका मोह भंग हो गया, पर गरुड़जी ने उन्हें अवसर दिया श्रीरामकथा सुनाने का इस कारण वे श्रीरामजी की कृपा का अनुभव करते हैं कि उन्हें संत समागम प्राप्त हुआ। वे गरुड़जी से कहते हैं –

आजु धन्य मैं धन्य अति जद्यपि सब बिधि हीन।
निज जन जानि राम मोहि संत समागम दीन।।

(7 / 123 क)

संत समागम से प्राप्त आनन्द अलौकिक तथा शाश्वत होता है, जिसका अनुभव श्रोता–वक्ता अर्थात् गरुड़जी और काकभुसुंडिजी दोनों करते हैं। इस तरह से स्पष्ट है कि ईश्वर प्राप्ति का सर्वोत्तम उपाय सत्संग है। सत्संग से मन की चंचलता नष्ट होकर चित्त स्थिर होता है, जिससे विवेक की उत्पत्ति होती है और विवेक होने पर मन में संतोष और ईश्वर के प्रति आस्था का भाव उत्पन्न होता है। आस्था से समर्पण तथा समर्पण से भक्ति और यही जीवन के जीने की सच्ची कला का अन्तर्मुखी ज्ञान–विवेक है।

जब हनुमानजी लंका में प्रवेश करते हैं और लंकिनी को मुष्टि प्रहार करते हैं तब वह कहती है –

तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग।।

(5 / 4)

अर्थात् हे तात! स्वर्ग और मोक्ष के सब सुखों को एक पलड़े में रखा जाये तो भी सब मिलकर उस सुख के बराबर नहीं हो सकते जो क्षण मात्र के सत्संग से प्राप्त होता है। सत्संगति के सम्बन्ध में ऋग्वेद का कथन भी यह प्रमाणित करता है कि ईश्वर विद्वानों की संगति से प्राप्त है। **'देवी देवेभिरागमत्'** (1 / 15)

सूर संचयक में महाकवि सूरदासजी भी उक्त कथन की पुष्टि करते हुए कहते है –

सीप गयो मोती भयो, कदली भयो कपूर।
अहिमुख गयो तो विष भयो, संगत के फलसूर॥

नीतिशतक में भर्तृहरि ने कहा है –

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं।
मानोन्नति दिशति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं।
सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंषाम्॥

अर्थात् सत्संगति बुद्धि की जड़ता को दूर कर वाणी में सच्चाई लाती है। सम्मान तथा उन्नति दिलाती है और कीर्ति यश को चारों दिशाओं में फैलाती है इस प्रकार सत्संगति पुरुषों के लिये क्या–क्या (कल्याण) नहीं करती, इसलिये सत्संग समस्त उत्कृष्ट अमूल्य तत्वों आश्रय, कल्याण और सम्पत्ति का हेतु तथा समस्त उन्नति का मूल है।

तुलसीदासजी ने इसकी व्याख्या बालकाण्ड के प्रारम्भ में ही इस प्रकार से की है –

सतसंगत मुद मंगल मूला। सोइ फल सिधि सब साधन फूला॥

(1/3/8)

संसार में जन्मे सभी प्राणियों की यही आकांक्षा रहती है कि वह इहलोक में सुखशांति, समृद्धि एवं ऐश्वर्य भोग कर मोक्ष या अविरल भगवत् भक्ति प्राप्ति करें और यह तभी सम्भव है जब व्यक्ति अपने जीवन को सत्संगति से सुभाषित करे।

जाय सो सुभटु समर्थ पाइ रन रारि न मंडै।
जाय सो जती कहाय विषय-बासना न छंडै॥
जाय सो धनिकु बिनु दान, जाय निर्धन बिनु धर्महि।
जाय सो पंडित पढ़ि पुरान जो रत न सुकर्महि॥
सुत जाय मातु-पितु-भक्ति बिनु, तिय जाय जेहि पति न हित।
सब जाय दास तुलसी कहै, जौं न रामपद नेहु नित॥

वह समर्थ वीर व्यर्थ है जो संग्राम (का अवसर) पाकर भी युद्ध नहीं करता। जो यति (संयासी अथवा विरक्त) कहलाकर विषय की वासना को न छोड़े, वह विरक्त भी व्यर्थ है। दानशून्य धनी और धर्माचरणशून्य निर्धन भी व्यर्थ है। जो पंडित पुराण पढ़कर सुकर्म में रत नहीं है, वह भी नष्ट है। जो पुत्र माता–पिता की भक्ति रहित है, वह भी नष्ट है और जिसे पति प्यारा नहीं है, वह स्त्री भी व्यर्थ है। तुलसीदासजी कहते हैं – यदि श्रीरामचन्द्रजी के चरणों में नित्य नवीन प्रेम न हो तो सभी कुछ व्यर्थ है।

(कवितावली 7/116)

भरतहि होइ न राजमदु

पं0 रामनरेश तिवारी,
797/1 सी, बाघम्बरी रोड, इलाहाबाद–211006 मो0 : 09415443173

कभी–कभी बहुत विद्वान और सुधी जनों के मन में भी असमंजस एवं आशंका हो जाती है। ऐसे समय यदि विपरीत लक्षण दिखाई पड़ें तो यह आशंका और भी बलवती हो जाती है। भरतजी राम को मनाने के लिए चित्रकूट जा रहे हैं। उनके साथ सभी प्रजाजन, माताएँ और सेना भी है। भरत के आगमन का समाचार कोल किरात आकर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को बताते हैं और कहते हैं कि भरत के साथ बहुत बड़ी चतुरंगिणी सेना भी है। यह समाचार सुनकर श्रीराम जो पहले सुमंगल समाचार समझ कर प्रसन्न हुए सोच में पड़ जाते हैं –

बहुरि सोचबस भे सिय रवनू। कारन कवन भरत आगवनू।।

(2/227/1)

भगवान श्रीराम पिता की आज्ञा मानकर वनवास काल में चित्रकूट आकर पर्णकुटी बनाकर निवास कर रहे हैं। उन्हें राजपाट की कोई चिन्ता नहीं है। ऐसे में भरत का सेना के साथ आगमन का क्या कारण हो सकता है। श्रीराम के मन में उठे इस असमंजस को समझ कर लक्ष्मणजी भी चिन्तित हो जाते हैं और कहते हैं कि अवश्य ही भरत के मन में कोई कपट है तभी तो वे चतुरंगिणी सेना के साथ आ रहे हैं। गोस्वामी तुलसीदासजी इस प्रसंग को बड़े रोचक ढंग से प्रस्तुत करते हैं –

कुटिल कुबंधु कुअवसरु ताकी। जानि राम बनबास एकाकी।।
करि कुमंत्रु मन साजि समाजू। आए करै अकंटक राजू।।
कोटि प्रकार कलपि कुटिलाई। आए दल बटोरि दोउ भाई।।
जौ जियँ होति न कपट कुचाली। केहि सोहाति रथ बाजि गजाली।।
भरतहि दोसु देइ को जाएँ। जग बौराइ राज पदु पाएँ।।

(2/228/4–8)

अपने इस तर्क के लिए लक्ष्मणजी प्रमाण भी देते हैं। राजा नहुष, राजा वेनु, सहस्त्रबाहु, त्रिशंकु, इन्द्र आदि देवताओं को भी राजमद ने भ्रष्ट कर दिया है, तो भरत के लिए भी राजपद पाकर मदोन्मत होना कोई आश्चर्य नहीं है, इसलिए लक्ष्मणजी श्रीरामजी की सेवा में तत्पर रहकर कहते हैं कि मैं अकेले ही भरत की सम्पूर्ण सेना सहित भरत और शत्रुघ्न दोनों भाइयों को रणक्षेत्र में पराजित करके उनका मद चूर्ण–चूर्ण कर दूँगा। लक्ष्मणजी शेषावतार हैं। सम्पूर्ण भूमंडल उनके फण पर आश्रित है और क्रोध–काम से परे निर्विकार

है, अतः उनके मन में सुख–दुख और राज की चिन्ता नहीं है।

लक्ष्मणजी इसी से युद्ध के लिए तत्पर हो जाते हैं कि आकाशवाणी होती है अनुचित उचित का विचार कर कार्य करना चाहिए। सहसा आक्रोश में आकर किसी कार्य के करने के बाद में फिर पश्चात्ताप ही करना पड़ता है। पहले आकाशवाणी देववाणी के समान हुआ करती थी। वह समय–समय पर उचित और अनुचित कार्य के लिए सचेत करती थी। आज की आकाशवाणी सरकार और बलवान के हाथ में है। उस आकाशवाणी को सुनकर लक्ष्मणजी सचेत और सावधान हो जाते हैं। इस समय भगवान श्रीराम भी लक्ष्मण को समझाते हुए उनकी बात का अनुमोदन करते हुए उन्हें समझाते हैं –

कही तात तुम्ह नीति सुहाई। सब तें कठिन राजमदु भाई।।
जो अचवँत नृप मातहिं तेई। नाहिन साधुसभा जेहिं सेई।।
सुनहु लखन भल भरत सरीसा। बिधि प्रपंच महँ सुना न दीसा।।
भरतहि होइ न राजमदु बिधि हरि हर पद पाइ।
कबहुँ कि काँजी सीकरनि छीरसिंधु बिनसाइ।।

(2 ⁄ 231)

ब्रह्मा, विष्णु और महेश का पद बहुत बड़ा है। ये त्रिदेव सृजन पालन और संहार के देवता हैं, किन्तु इतने विबुध और समर्थ होने पर भी इनमें अभिमान आ सकता है। पुराणों के अनुसार ब्रह्माजी ने भी भगवान कृष्ण की परीक्षा के लिए उनकी गायों एवं बछड़ों को चुरा लिया था। भगवान विष्णु–महेश्वर के भी युद्ध अनेक कथानक पुराणों में वर्णित हैं। भरतजी तो भगवान के आनन्द उपासक हैं। उनके मन में तो राम की भक्ति के अतिरिक्त और कोई भावना है ही नहीं। वह माँ भगवती गंगाजी से प्रार्थना करते हुए कहते हैं –

अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहउँ निरबान।
जनम जनम रति राम पद यह बरदानु न आन।।

(2 ⁄ 204)

भरतजी को रामजी के अतिरिक्त और किसी की भी चाह नहीं है। भगवान राम सच्चिदानंद हैं। उन्हें पा जाने पर जीव आनन्द विभोर हो जाता है। फिर भला उसे क्या चाहिए। उसकी सारी सांसारिक इच्छाएं समाप्त हो जाती हैं –

जरउ सो संपति सदन सुखु सुहृद मातु पितु भाइ।
सनमुख होत जो राम पद करै न सहस सहाइ।।

(2 ⁄ 185)

भरतजी के अनुसार माता–पिता, भाई, सुहृद और घर परिवार वही सार्थक है जो श्रीराम के चरणों में जाने में सहायक हो। माता कैकेयी तो राजपद माँग कर भरत को भगवान से अलग कर रही थीं, किन्तु

भगवान के कहने पर भी भरतजी ने अयोध्या का राज्य नहीं लिया। उन्होंने भगवान श्रीराम से उनकी चरण पादुकाओं के अनुशासन में रहकर, जटाजूट धारण कर चौदह वर्षों तक तपोमय जीवन व्यतीत किया। गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है –

राम मातु गुर पद सिरु नाई। प्रभु पद पीठ रजायसु पाई।।
नंदिगावँ करि परन कुटीरा। कीन्ह निवासु धरम धुर धीरा।।
जटाजूट सिर मुनिपट धारी। महि खनि कुस साँथरी सँवारी।।
असन बसन बासन ब्रत नेमा। करत कठिन रिषि धरम सप्रेमा।।
भूषन बसन भोग सुख भूरी। मन तन बचन तजे तिन तूरी।।

(2/324/1–5)

नित पूजत प्रभु पाँवरी प्रीति न हृदय समाति।
मागि मागि आयसु करत राज काज बहु भाँति।।

(2/325)

ऐसे भरतजी का चरित्र सुनकर हम सभी को भगवान के श्रीचरणों में अपना सर्वस्व अर्पित करके उन्हीं की आज्ञानुसार कार्य करना चाहिए। भरतजी का चरित्र विषय विरक्ति सहित ईश्वर प्रेम प्रदान करता है। यही जीवन का लक्ष्य है।

भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं।
सीय राम पद पेमु अवसि होइ भव रस बिरति।।

(2/326)

राम नाम महिमा

गोस्वामी तुलसीदासजी ने श्रीरामचरितमानस में लिखा है कि प्रभु के जितने भी नाम प्रचलित हैं सभी निश्चित रूप से मानव जीवन के परम लक्ष्य की प्राप्ति करवाने वाले हैं। ईश्वर के किसी नाम का जप किसी क्षण, किसी भी स्थान पर कर सकते हैं, पर राम नाम का विशेष महत्व है क्योंकि नारदजी ने श्रीरामजी से वरदान मांगा था कि आपके सभी नामों में 'राम' नाम ऐसे सुशोभित हो जैसे तारागणों के बीच चन्द्रमा।

राका रजनी भगति तव राम नाम सोइ सोम।
अपर नाम उडगन बिमल बसहुँ भगत उर ब्योम।।

(3/42 क)

हरि अनंत हरि कथा अनंता

श्रीमती रीता कश्यप,
बी–302, 113 आई.पी.एक्सटेंशन (पटपड़ गंज) दिल्ली–110092। मो0 : 9958622992

वाल्मीकि रामायण एक आदि महाकाव्य ही नहीं, हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। राम कथा का पुनः पुनः लिखा जाना, कई देशी–विदेशी भाषाओं में इसका अनुवाद होना, नाटक के रूप में प्रति वर्ष इसका मंचन होना राम के जीवन, उनकी कथा के प्रति हमारे प्रेम, हमारे लगाव को दर्शाता है। यही कारण है कि हम उनके जन्मदिन को रामनवमी के रूप में घरों और मंदिरों में कथा–कीर्तन करके मनाते हैं तो रावण पर उनकी विजय को विजयादशमी के रूप में मनाते हैं और 14 वर्षों के वनवास के बाद उनके अयोध्या लौटने की खुशी को दीपावली के रूप में घर आंगन को रोशन कर उपहार तथा मिठाइयाँ बाँट कर मनाते हैं।

राम कथा के इसी प्रेम, इसी जुड़ाव ने ही तो वाल्मीकि रामायण के बाद तुलसीदास को अपनी लेखनी उठाने पर मजबूर होना पड़ा। इतने वर्षों में समाज बदल गया था, भाषा बदल गई थी, मानव मूल्य बदल गए थे। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए तुलसीदास ने इसे अवधी तथा ग्रामीण भाषा में एक नया स्वरूप दिया। उनकी यह कोशिश रंग लाई और श्रीरामचरितमानस के रूप में रामकथा जन–जन तक पहुँच गई। वे प्रारंभ में ही लिखते हैं –

स्याम सुरभि पय बिसद अति गुनद करहिं सब पान।
गिरा ग्राम्य सिय राम जस गावहिं सुनहिं सुजान।।

(1 / 10 ख)

वाल्मीकि के इस वृहद महाकाव्य को सहज, सरल, रोचक और एक धार्मिक ग्रन्थ बनाने का श्रेय तुलसीदास को जाता है। जहाँ वाल्मीकि के नायक राम एक साधारण मनुष्य की भाँति सुख–दुख का अनुभव करते हैं, किन्हीं विशेष परिस्थितियों में दुर्बल भी पड़ जाते हैं वहीं दूसरी ओर तुलसी के राम मर्यादापुरुषोत्तम हैं। वे देश और समाज के समक्ष एक आदर्श हैं, भगवान विष्णु के अवतार हैं जो दुष्टों, पापियों, आततायियों से छुटकारा दिलाने पृथ्वी पर अवतरित हुए हैं।

मूल कथा से कोई छेड़–छाड़ न करते हुए कई ऐसे छोटे–बड़े परिवर्तन कर तुलसीदास ने अपनी कलम का लोहा मनवाया है। वाल्मीकि के राजा दशरथ की 350 रानियां थीं, लेकिन तुलसीदास ने कथा को प्रमुख तीन रानियों (कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी) तक ही सीमित रखा है।

वाल्मीकि रामायण में वर्णित कौशल्या और कैकेयी के वर्षों से बिगड़े सम्बंधों को उजागर न कर तुलसीदास ने उन में सौतिया डाह न दिखा कर उनका आपसी प्रेम और स्नेह चित्रित किया है। इतना ही

नहीं कैकेयी, अहिल्या, विभीषण आदि कई ऐसे चरित्र हैं, जिन्हें बहुत सुधार के साथ आदर्श रूप में मानस में चित्रित किया गया है।

मूलकथा में राम और लक्ष्मण. ऋषि विश्वामित्र के साथ राजा जनक के धनुष यज्ञ में भाग लेने गए थे। वहां ऋषि के पूछने पर राजा जनक ने अपने दुख का कारण बताते हुए अपनी पुत्री सीता का स्वयंवर असफल होने की बात कही थी, क्योंकि शर्त के अनुसार कोई भी राजा स्वयंवर में रखे शिव धनुष पर प्रत्यंचा नहीं चढ़ा पाया था। तब राम ने वह धनुष देखने की जिज्ञासा प्रकट की थी। शिव धनुष यज्ञ भूमि में लाया गया। उसे देखते ही राम ने कौतूहल वश उस पर प्रत्यंचा चढ़ाने की कोशिश की तो वह बीच में ही टूट गया। यह सब देखकर जनक प्रसन्न हो गए। उन्होंने राम से सीता के साथ विवाह करने की याचना की तथा स्वीकृति के लिए तुरन्त अपने दूत अयोध्या के राजा दशरथ के पास भेजे। दशरथ ने सहर्ष यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और धूमधाम के साथ राम और सीता का विवाह सम्पन्न हुआ। तुलसीदास ने इस विवाह को सीता स्वयंवर के रूप में बड़े ही रोचक और मनोहारी रूप में प्रस्तुत किया है।

आज सदियों बाद भी लक्ष्मण रेखा की बात करते ही इसके पीछे की कहानी स्पष्ट हो जाती है। इतना ही नहीं इस रेखा के पीछे छिपी सुरक्षा की भावना तथा इसे लांघने के बुरे परिणाम भी स्पष्ट हो जाते हैं। यह मात्र निर्जन वन में सीता की सुरक्षा के लिए लक्ष्मण द्वारा खींची गई रेखा ही नहीं रही, बल्कि आज हर औरत की सुरक्षा, हर रिश्ते की मर्यादा के लिए खिंची एक रेखा का प्रतीक बन गई है, लेकिन क्या आप जानते हैं यह प्रसंग मात्र तुलसीदास की कल्पना है, वाल्मीकि की मूलकथा में लक्ष्मण रेखा का कोई वर्णन नहीं मिलता।

श्रीरामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड में सीता की खोज में लंका पहुँचने पर हनुमान को राक्षसराज रावण के छोटे भाई विभीषण मिलते हैं जो राम भक्त हैं, वही हनुमान को सीता का पता बताते हैं –

जुगुति बिभीषन सकल सुनाई। चलेउ पवनसुत बिदा कराई।।
करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ। बन असोक सीता रह जहवाँ।।

(5 / 8 / 5–6)

लेकिन वाल्मीकि रामायण में ऐसा नहीं है। वहाँ हनुमान स्वयं ही लंका के भवनों, गलियों, बाग–बगीचों यहाँ तक कि रावण के अन्तपुर में खोजते हुए अशोक वाटिका में सीता तक पहुँचते हैं। इतना ही नहीं सदियों से 'घर का भेदी लंका ढ़ाये' की लोकोक्ति मानस में वर्णित विभीषण से जुड़े प्रसंग पर ही आधारित है। मानस में राम रावण युद्ध में रावण का सिर काटने पर पुनः पुनः उसका नया सिर आ जाने से परेशान राम को विभीषण ही अपने बड़े भाई रावण के जीवन का भेद बताते हुए कहते हैं –

नाभिकुंड पियूष बस याकें। नाथ जिअत रावनु बल ताकें।।
सुनत बिभीषन बचन कृपाला। हरषि गहे कर बान कराला।।

(6 / 102 / 5–6)

जबकि वाल्मीकि रामायण में ऐसी स्थिति में इन्द्र के सारथी मातलि राम को अगस्त्य मुनि द्वारा दिए ब्रह्मास्त्र को रावण पर चलाने के लिए प्रेरित करते हैं।

दोनों कथाओं में ऐसे और भी कई छोटे–छोटे अन्तर हैं। जैसे मानस में युद्ध में मूर्च्छित हुए लक्ष्मण के उपचार के लिए वैद्य सुषेण को लंका से उठा कर लाया जाता है, जबकि वाल्मीकि रामायण में सुषेण लंका का वैद्य नहीं, बल्कि राम की सेना का एक सेनापति है जो उपचार विद्या भी जानता है और समय–समय पर घायल सैनिकों का उचार करता है। लक्ष्मण मूर्च्छा से पहले भी घायल सैनिकों के उपचार के लिए सुषेण के कहने पर हनुमान, जामवन्त के बताए पर्वत पर बूटी लेने जाते हैं। उस पर्वत पर चार प्रकार की बूटियाँ थी जो उपचार में काम आती थीं। लक्ष्मण मूर्च्छा के समय उन्हें जो एक बूटी लाने के लिए कहा गया था हनुमान उसे ठीक से पहचान नहीं पा रहे थे, इसलिए वह जल्दी से बड़ा सा पर्वत खंड ही उठा लाते हैं।

भले ही वाल्मीकि के आदि महाकाव्य रामायण और तुलसीदास के श्रीरामचरितमानस में ऐसे कई अन्तर हैं फिर भी दोनों ही साहित्य, संस्कृति और धर्म की दृष्टि से महत्वपूर्ण अमर ग्रन्थ हैं। दोनों ही कवियों ने अपनी–अपनी रचना के माध्यम से अपने ज्ञान और अपनी कलम का लोहा मनवाया है। एक ग्रन्थ का पठन–पाठन दूसरे ग्रन्थ के पठन–पाठन की जिज्ञासा जगाता है।

यहाँ पर यह विशेषरूप से उल्लेखनीय है कि वाल्मीकिजी द्वारा रचित रामायण और तुलसीदासजी द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस के अलावा भी अनेक कवियों ने श्रीरामकथा लिखी है। विभिन्न पुराणों में भी राम कथा वर्णित है। इन सभी प्रसंगों में भिन्नता कल्प भेद के कारण है। प्रत्येक कल्प भगवान राम का अवतार होता है और वे भक्तों के लिए नाना प्रकार की लीलाएँ करते हैं, अतः कल्प भेद समझकर संशय न करके श्रद्धा–विश्वास से प्रेमपूर्वक श्रीरामकथा का श्रवण–गायन, मनन–चिंतन करना चाहिए, क्योंकि हरि अनंत हैं और उनकी कथा अनंत है –

कलपभेद हरिचरित सुहाए। भाँति अनेक मुनीसन्ह गाए॥
करिअ न संसय अस उर आनी। सुनिअ कथा सादर रति मानी॥

(1/33/7–8)

'हरि अनंत हरि कथा अनंता'

यदि आप राम भक्त हैं और अपनी संस्कृति से जुड़े रहना चाहते हैं तो कम से कम एक–एक बार दोनों रामायण और श्रीरामचरितमानस का रसास्वादन अवश्य कीजियेगा। विश्वास कीजिए आपको अवश्य ही परमानन्द की अनुभूति होगी।

नींबू पानी का सदा, करता जो उपयोग।
पास नहीं आते कभी, यकृति-आंत के रोग॥

Add
AVG LOGISTICS PVT. LTD.

जपहिं नामु जन आरत भारी

श्री सोमदत्त गुप्ता,
सी–7 एफ, वाटिका अपार्टमैंट, मायापुरी, नई दिल्ली। मो0 : 9313787428

प्राणी संसार में अपने कर्मों के अनुसार ही सुख–दुख भोगता है। कई बार तो वह असाधारण परिस्थितियों से घिर जाता है। अपने को अत्यन्त ही दीन एवं असहाय महसूस करता है। उसे विपत्ति का कारण, निवारण एवं समाधान भी समझ से परे लगने लगता है। तब वह क्या करे, बस भगवान को ही पुकारेगा। श्रीराम दयासिंधु हैं, भव तारण हैं। भरोसा रखें तो कल्याण होगा ही, संताप मिटेगा ही। ऐसे दयानिधि प्रभु तुलसी के राम ने सदैव विनम्रता का व्यवहार करके हमें यह शिक्षा दी है कि क्रोध पर विनम्रता से विजय प्राप्त की जा सकती है। जनकपुर में शिव–धनुष टूटने से कुपित परशुरामजी से श्रीरामजी ने विनयपूर्वक यह निवेदन किया –

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।
आयसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।।

(1 / 271 / 1–2)

विनयभाव से विषम परिस्थितियों में प्रकोप भी दिखा सकते हैं, पर सामर्थ्यहीन को विनय के साथ साथ केवल भगवान का ही सहारा होता है। उचित समय की प्रतीक्षा करनी होगी। यदि हम आर्तभाव से पुकारेंगे तो सर्वशक्तिमान दुखहर्ता प्रभु को मदद के लिए आना ही होगा। यह विचारणीय तथ्य है कि निर्बल अपने हित के लिए सामर्थवान से याचना कर सकता है, पर अधिक सामर्थवान भी याचक बन जाए तो यह उनका बड़प्पन है। श्रीरामजी ने समुद्रराज के साथ कुछ ऐसा ही व्यवहार किया –

बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति।
बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति।।

(5 / 57)

सभयसिंधु गहि पद प्रभु केरे। छमहु नाथ सब अवगुन मेरे।।
गगन समीर अनल जल धरनी। इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी।।

(5 / 59 / 1–2)

लंका में जाने के लिए प्रभु श्रीराम ने समुद्रराज से प्रार्थना की। लक्ष्मणजी के बार–बार बल प्रयोग के आग्रह के उपरान्त भी प्रतीक्षा की, किन्तु जब तीन दिन प्रतीक्षारत रहकर विनय करने के पश्चात भी कोई सुनवाई न हुई, तब अन्ततः उन्होंने धनुष पर बाण चढ़ाया, पर छोड़ा नहीं। भयभीत होकर समुद्रराज ने प्रकट होकर क्षमा प्रार्थना की, फिर भी प्रभु श्रीराम ने उन्हें अपना प्रयोजन बताकर रास्ते के लिए विनय ही की। तब सहर्ष ही समुद्रराज ने रास्ता दिया और राम सेना ने समुद्र पार कर लंका में प्रवेश किया। समर्थता में विनय

भाव, ऐसे जनमानस के राम, प्रत्येक दीन की सहायतार्थ अवश्य ही आयेंगे, क्योंकि एक दीन को तो उन्हीं का आसरा है –

मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती। सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती।।
अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा। अनुज गहे पद बारहिं बारा।।

(5/41/5–6)

विभीषण ने रावण को समझाया नीति की बात की, पर रावण ने तो उन्हें लात मारकर लंका से चले जाने को कहा। फिर भी वे प्रार्थना करते रहे। उनके पास अब राम का ही आसरा था। विभीषण ने प्रार्थना की एवं अन्ततः भगवान श्रीराम ने ही रावणवध के पश्चात विभीषण महाराज का लंकाधिराज के रूप में अभिषेक किया।

ऐसे ही सुग्रीव भी भाई बालि द्वारा पत्नी छीनने एवं राज्य से निकालने के उपरान्त ऋष्यमूक पर्वत पर जाकर उचित समय की प्रतीक्षा करने लगे। भगवान राम से मिलने पर उन्होंने विनती की –

रिपु सम मोहि मारेसि अति भारी। हरि लीन्हेसि सर्बसु अरु नारी।।
ताकें भय रघुबीर कृपाला। सकल भुवन मैं फिरेउँ बिहाला।।

(4/6/11–12)

उन्हें भी श्रीराम ने बालि वध के पश्चात उनकी पत्नी एवं राज्य वापिस दिलवाया।

अहिल्या ने भी वर्षों राम की प्रतीक्षा करके मुक्ति पाई। शबरी ने भी राम की बाट जोहकर अपने लक्ष्य को प्राप्त किया। अनेकों ऐसे संदर्भ हैं जब दयासिंधु श्रीराम दीनों की सहायतार्थ आए। उन्हें संकट से उबारा। वो तो सदैव ही दीनों के, निबर्लों के समर्थ बनकर रहे। कोई उन्हें सच्चे दिल से पुकारे तो सही। एक कवि ने लिखा है –

लोग कहते कि राम आते नहीं। द्रोपदी की तरह तुम बुलाते नहीं।।
लोग कहते कि राम खाते नहीं। शबरी की तरह तुम खिलाते नहीं।।

श्रीरामजी को छल–कपट छोड़कर जो स्मरण करता है वे उस पर तुरंत कृपा करते हैं, क्योंकि उन्हें छल–कपट पसंद नहीं है। उन्हें तो निर्मल मन वाले ही भाते हैं –

निर्मल मन जन सो मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भावा।।

(5/44/5)

इस प्रकार जब–जब किसी ने भी अपने आपको असहाय पाकर निर्बल समझकर श्रीराम को पुकारा, वे आसरा बनकर सदैव सहायतार्थ आए। वे दयासिंधु, कृपासिंधु और दीनबंधु हैं। आर्तभाव से पुकारने पर वे तुरन्त सहायतार्थ चले आते हैं और सारे संकट दूर कर देते हैं, इसलिए नाम वंदना में परम पूज्य गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है –

जपहिं नामु जन आरत भारी। मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी।।

(1/22/5)

श्रीराम जय राम जय जय राम। श्रीराम जय राम जय जय राम।।

कामिहि नारि पियारि जिमि

रघुपति सिंह सिसौदिया (प्रवक्ता संस्कृत)
कुंज बिहारी संस्कृत महाविद्यालय वाराह घाट वृन्दावन मथुरा। मो0 : 9319006029

गोस्वामी तुलसीदासजी ने श्रीरामचरितमानस की रचना दो वर्ष सात माह छब्बीस दिन में पूर्ण की ऐसी प्रामाणिकता प्राप्त होती है। ग्रन्थ के समापन पर अन्तिम दोहे के रूप में **'कामिहि नारि पियारि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम। तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम॥** इस दोहे को लिखा है। अनासक्त कर्मयोगी सर्वदा श्रीराम की चरित्ररूपी सुधा–सरिता में निरन्तर अवगाहन करने वाले गोस्वामी तुलसीदासजी ग्रन्थ के समापन पर श्रीरामजी के प्रति प्रीति की उत्प्रेक्षा एक कामी की किसी रमणी के प्रति कामना करना अनर्गल तो नहीं कहा जा सकता, क्योंकि कामी की कामिनी के प्रति आसक्ति वासना युक्त होती है। वासनायुक्त प्रीति को विशुद्ध एवं सात्विक प्रेम नहीं कहा जा सकता, अतः ऐसा प्रतीत होता है कि गोस्वामीजी ने अपने पूर्व के अनुभव को यहाँ पर प्रदर्शित किया है। कहते हैं कि अपने वैवाहिक जीवन में तुलसीदासजी इतने कामासक्त थे कि वे अपनी प्रिय पत्नी के दो चार दिन के अलग रहने के वियोग को भी नहीं सह सकते थे। उनसे मिलने के लिये रात में ही मृतक शरीर का आश्रय लेकर नदी पार कर जीवित सर्प को पकड़कर छत पर चढ़कर पत्नी से मिले। गोस्वामी तुलसीदासजी का उक्त चरित्र श्रीकालिदासजी की उक्ति **'कामाती हि प्रकृति कृपणाचेतनाचेतेनेशु'** को चरितार्थ करती है।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीरामचन्द्रजी के प्रति गोस्वामी तुलसीदासजी की प्रीति एक कामासक्त का अपनी रमणी के प्रति चाह की तरह याचना करना सर्वथा यह सिद्ध करता है कि वे श्रीरामजी के अतिरिक्त अपनी दृष्टि, चित्त एवं अन्तकरण में कुछ और रखना ही नहीं चाहते। इसीलिये गोस्वामीजी अपने ग्रन्थ 'श्रीरामचरितमानस' के अन्त में याचना करते हुए अपनी मधुर अभिलाषा की अभिव्यक्ति करते हैं कि, 'हे रघुनाथ। जिस प्रकार कामी के ह्रदय में कामिनी का ध्यान रहता हैं, उसी प्रकार मेरे मन में निरन्तर आपके रूप का ही ध्यान रहे। हे श्रीराम! जिस प्रकार लोभी को धन से सन्तोष नहीं होता, उसी प्रकार हम आपके परम पावन नाम का कितना भी जप करें, परन्तु नामजप से हमारी तृप्ति न हो।

वास्तव में, प्रभु श्रीराम के प्रति अलौकिक प्रेम का चित्रण तुलसीदासजी ने अनेक प्रसंगों में किया है। महाराज मनु एवं महारानी सतरूपा की विशुद्धि सात्विक प्रीतियुक्त याचना इस प्रकार से चित्रित की है –

दानि सिरोमनि कृपानिधि नाथ कहउँ सतिभाउ।
चाहउँ तुम्हहि समान सुत प्रभु सन कवन दुराउ॥

(1/149)

सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति सोइ निज चरन सनेहु।
सोइ बिबेक सोइ रहनि प्रभु हमहि कृपा करि देहु।।

(1 / 150)

महाराज मनु की अनन्य प्रीति की यह याचना देखिए –

सुत विषइक तव पद रति होऊ। मोहि बड़ मूढ़ कहै किन कोऊ।।
मनि बिनु फनि जिमि जल बिनु मीना। मम जीवन तिमि तुम्हहि अधीना।।

(1 / 151 / 5–6)

माता कौशल्या की पुत्र विषयक प्रीति इस प्रकार से है –

पूत परम प्रिय तुम्ह सबही के। प्रान प्रान के जीवन जी के।।

(2 / 56 / 7)

महाराज दशरथ द्वारा श्रीरामजी का वियोग होने पर प्राण त्याग देना भगवद् चरणों में अलौकिक प्रेम को ही साकार करता है –

राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम।
तनु परिहरि रघुबर बिरहँ राउ गयउ सुरधाम।।

(2 / 155)

भरतजी की श्रीरामजी के चरणों में अद्भुत व उच्च कोटि की प्रीति दर्शनीय है –

मागउँ भीख त्यागि निज धरमू। आरत काह न करइ कुकरमू।।

(2 / 204 / 7)

अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहउँ निरबान।
जनम जनम रति राम पद यह बरदानु न आन।।

(2 / 204)

यहाँ भरतजी का अपने क्षत्रिय धर्म को त्याग कर श्रीराम प्रभु के चरणों में अगाध प्रीति की भीख की याचना यह सिद्ध करती है कि भरतजी की धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष रूपी चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति की अवहेलना करते है। जन्म–जन्म कहने का तात्पर्य नित्य निरन्तर श्रीरामजी के चरण कमलों की अहैतुकी प्रीति की चाह रखना है तथा इसे प्राप्त करने में ही वे अन्य चार पुरुषार्थो को नगण्य समझते हैं। इसी प्रकार रसखान कवि भी श्रीकृष्ण के चरण कमलों में अद्भुत अनुराग को उद्धृत करते हुए लिखते हैं –

मानुष हो तो वही रसखानि, बसौ बृज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पशु हौं तो कहा वश मेरौ, चरौ नित नन्द की धेनु मझारन।।

पाहन हौं तो वही गिरि को, जो धर्‌यो कर छत्र पुरन्दर कारन।
जो खग हौं तो बसेरौ करौं, मिलि कालिन्दी कूल कदम्ब की डारन॥

अर्थात वे पशु–पक्षी या पत्थर बनने में संकोच नहीं करते वह केवल प्रभु प्रीति से विमुख नहीं होना चाहते।

श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी ने श्रीराम के प्रति माता कौशल्या, महाराज दशरथ, भरत, शत्रुघ्न, लक्ष्मण एवं सभी नगरवासियों की अपार श्रद्धा का चित्रांकन अपनी विचित्र रसमयी शैली में किया है। मिथिला में स्त्रियों द्वारा श्रीरामजी को श्रृंगार रस के रूप में, विद्वानों को विराट स्वरूप में, (कुटुम्बियों का सगे स्वजन सम्बन्धी के रूप में) देखना, राजा जनक और रानियों का वात्सल्य भाव उमड़ना योगियों का शान्त शुद्ध सम और स्वतः प्रकाश स्वरूप परमतत्व के रूप में देखना, भगवद् भक्तों का अपने इष्टदेव के रूप में देखना, सीताजी का अनिर्वचनीय आनन्दघन के रूप में देखना गोस्वामीजी की श्रीराम प्रभु के प्रति अनुपम प्रीति और श्रद्धा को प्रकट करती है। अतः अन्त में **'कामिहि नारि पिआरि जिमि'** कहकर श्रीरामरूप में अन्तरंग होकर रम जाने की याचना करना उनकी विलक्षण प्रीति को प्रदर्शित करती है।

नारी में आसक्ति भले ही साधारण हो परन्तु भगवच्चरणों में अनन्य प्रीति होना भी अकाट्य सत्य है। महाकवि कालिदास को अपनी पत्नी से तिरस्कार मिलने पर ज्ञान प्राप्त हुआ। गोस्वामीजी को अपनी अति प्रिय पत्नी के द्वारा **'मेरे इस हाड़, माँस के शरीर में जितनी तुम्हारी आसक्ति है, उससे आधी भी यदि भगवान श्रीराम में होती तो तुम्हारा बेड़ा पार हो गया होता।'** कहे गए इन वचनों से श्रीराम भक्त बना दिया। उन्होंने **'दूषण में, भूषण सरिस'** मानकर अपनी पत्नी को ही अपना उद्धारक मान लिया।

अस्तु, अन्त में –

कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम॥

(7 / 130)

रचकर गोस्वामी तुलसीदासजी ने प्रभु श्रीराम के प्रति पूर्णरूपेण समर्पण का अपना भाव प्रस्तुत किया है।

घूट-घूट पानी पियो, रह तनाव से दूर।
एसिडिटी, अरु मधुमेह होवें चकनाचूर॥

मंत्रराजु नित जपहिं तुम्हारा

श्रीमती कुसुम पटैरया, सदस्य

वनवास काल में श्रीरामजी वाल्मीकिजी के आश्रम में जाते हैं और उनसे पूछते हैं कि उन्हें कोई ऐसा स्थान बता दें, जहाँ किसी ऋषि–मुनि को कोई कष्ट न हो ताकि हम वहाँ पर पर्ण कुटी बनाकर निवास कर सकें। महर्षि वाल्मीकिजी ने उन्हें पहचान कर कहा कि आप ही बता दें कोई ऐसा स्थान, जहाँ पर आप न हों। जो कण–कण में रमा हो उसी को तो राम कहते हैं तथापि उन्होंने 14 ऐसे भक्तों के लक्षण बताएं जिनके हृदय (मन) श्रीराम–लक्ष्मण सहित या श्रीसीताराम या तीनों जन निवास करें। उन चौदह में से एक भक्त के लक्षण इस प्रकार बताए –

मंत्रराजु नित जपहिं तुम्हारा। पूजहिं तुम्हहि सहित परिवारा।।
तरपन होम करहिं बिधि नाना। बिप्र जेवाँइ देहिं बहु दाना।।
तुम्ह तें अधिक गुरुहिं जियँजानी। सकल भायँ सेवहिं सनमानी।।

सबु करि मागहिं एकु फलु रामचरन रति होउ।
तिन्ह कें मन मंदिर बसहु सिय रघुनंदन दोउ।।

(2 / 129)

उपर्युक्त सभी साधनों में प्रमुख है नित्य मंत्रराज का जाप करना, क्योंकि कलियुग में श्रीभगन्नाम जप और श्रीभगवत् गुणगान के अलावा दूसरा कोई सुलभ साधन नहीं है। श्रीरामचरितमानस की समापन चौपाइयों में यह स्पष्ट रूप से लिखा है –

एहिं कलिकाल न साधन दूजा। जोग जग्य जप तप ब्रत पूजा।
रामहि सुमिरिअ गाइअ रामहिं। संतत सुनिअ राम गुन ग्रामहि।।
जासु पतित पावन बड़ बाना। गावहिं कबि श्रुति संत पुराना।।
ताहि भजहि मन तजि कुटिलाई। राम भजें गति केहिं नहिं पाई।।

(7 / 130 / 5–8)

श्रीकाकभुसुंडिजी कलियुग का वर्णन करते हुए गरुड़जी से कहते हैं कि जो फल सत्ययुग में ध्यान से, त्रेता में यज्ञ से और द्वापर में भगवत् पूजन से होता है, वही फल कलियुग में भगवन्नाम जप से होता है –

कृतजुग त्रेताँ द्वापर पूजा मख अरु जोग।

जो गति होइ सो कलि हरि नाम ते पावहिं लोग।।

(7 / 102 ख)

श्रीरामनाम वंदना में भी यही लिखा है कि कलियुग में जो कि एक प्रकार से पाप का समुद्र है और मनुष्य का मन उसमें मछली की तरह मग्न रहता है, केवल राम नाम ही मन वांछित फल देने वाला और सभी जंजालों से मुक्त कराके इस लोक में कल्याण करता है और परलोक भी सुधारता है, दोनों के लिए हितकारी है —

कलि केवल मल मूल मलीना। पाप पयोनिधि जन मन मीना।।
नाम कामतरु काल कराला। सुमिरत समन सकल जग जाला।।
राम नाम कलि अभिमत दाता। हित परलोक लोक पितु माता।।
नहिं कलि करम न धरम बिबेकू। राम नाम अबलंबन एकू।।

(1 / 27 / 4—7)

इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि अन्य साधन जैसे तर्पण, होम, ब्राह्मण भोजन, दान इत्यादि जितने व्यावहारिक हों, बन सकें तो करें अन्यथा भगवन्नाम जप और उसके गुणगान नित्य करें। जो ऐसा करते हैं और उसका कुछ फल नहीं चाहते हैं अर्थात् निष्काम भाव से भजन करते हैं उनके मन मंदिर में सीताराम जी निवास करते हैं और जब श्रीसीतारामजी मन मंदिर में निवास करेंगे, तब फिर और क्या चाहिए क्योंकि जीव का सच्चा स्वार्थ यही है, ऐसा काकभुसंडिजी का मत है वे कहते हैं —

स्वारथ साँच जीव कहुँ एहा। मन क्रम बचन राम पद नेहा।।

(7 / 96 / 1)

निषादराज को उपदेश देते हुए लक्ष्मणजी भी यही कहते हैं कि श्रीरामजी के चरणों में प्रेम उत्पन्न हो जाए, यही परम परमार्थ है —

सखा परम परमारथु एहू। मन क्रम बचन राम पद नेहू।।

(2 / 93 / 6)

श्रीभगवन्नाम जप और उनके गुणगान करने से श्रीरामजी के चरणों में प्रेम उत्पन्न होता है, ऐसा श्रीरामचरितमानस के प्रारंभ में ही गोस्वामी तुलसीदासजी ने लिखा है —

जे एहि कथहि सनेह समेता। कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता।।
होइहहिं रामचरन अनुरागी। कलि मल रहित सुमंगल भागी।।
सपनेहूँ साचेहुँ मोहि पर जौं हर गौरि पसाउ।
तौ फुर होउ जो कहेउँ सब भाषा भनिति प्रभाउ।।

(1 / 15)

भगवान के सभी नाम समान रूप से फलदाई हैं, कल्याणकारी हैं। जिसकी रुचि जिस नाम–रूप में हो, वे अपनी रुचि के अनुसार उस नाम–रूप का जप–स्मरण–चिंतन कर सकते हैं तथापि 'राम' नाम का विशेष महत्व है। इसी को 'मंत्रराज' अर्थात् मंत्रों का राजा, मंत्रों में श्रेष्ठ कहा गया है, क्योंकि नारदजी ने ऐसा वरदान श्रीरामजी से माँगा है। वे निवेदन करते हैं उस समय जब सीताहरण के पश्चात श्रीराम–लक्ष्मण पंपा सरोवर पर प्रसन्न मुद्रा में विराजमान थे –

बैठे परम प्रसन्न कृपाला। कहत अनुज सन कथा रसाला।।

(3 / 41 / 4)

श्रीनारदजी का निवेदन इस प्रकार से था –

जद्यपि प्रभु के नाम अनेका। श्रुति कह अधिक एक तें एका।।
राम सकल नामन्ह ते अधिका। होउ नाथ अघ खग मन बधिका।।
राका रजनी भगति तव राम नाम सोइ सोम।
अपर नाम उड़गन बिमल बसहुँ भगत उर ब्योम।।

(3 / 42 क)

इस निवेदन को स्वीकार करते हुए श्रीरामजी ने कहा –

एवमस्तु मनि सन कहेउ कृपासिंधु रघुनाथ।
तब नारद मन हरष अति प्रभु पद नायउ माथ।।

(3 / 42 ख)

इस प्रकार से श्रीराम नाम का विशेष महत्व और यही वह 'मंत्रराजु' है जिसका उल्लेख वाल्मीकिजी ने श्रीरामजी से किया था। श्रीरामचरितमानस का पठन–पाठन, मनन–चिंतन, इस पर लेखन आदि सभी 'मंत्रराजु' के जप के समान हैं, क्योंकि इसकी हर चौपाई, दोहा, सोरठे, छंद आदि में (थोड़े से अपवादों को छोड़कर) 'मंत्रराजु' के दो अक्षर 'र' और 'म' प्रयुक्त हुए हैं इसलिए प्रारंभ में ही यह लिखा है –

एहि महँ रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान श्रुति सारा।।

(1 / 10 / 1)

अब संक्षिप्त में इस पर भी विचार कर लें कि 'मंत्रराजु' का जप किस विधि से किया जाए। इस संदर्भ में गोस्वामी तुलसीदासजी लिखते हैं –

मन क्रम बचन छाड़ि चतुराई। भजत कृपा करिहहिं रघुराई।।

(1 / 200 / 6)

अर्थात् 'मनसा–वाचा–कर्मणा' से चतुराई अर्थात् छल–कपट त्याग कर भजन करने से श्रीरामजी कृपा करते हैं, क्योंकि छल–कपट श्रीरामजी को पसंद नहीं हैं, वे तो भक्त का निर्मल मन चाहते हैं –

निर्मल मन जन सो मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भावा।।

(5 / 44 / 5)

निर्मल मन बनाने के लिए हमें जगज्जननी जानकीजी की शरण में जाना होगा। जिस प्रकार एक माँ धूल धूसरित शिशु को अपने हाथों से स्वच्छ करती है उसी प्रकार जगज्जननी जानकीजी अपने भक्त को निर्मल मन बनाती हैं। वंदना प्रकरण में गोस्वामीजी लिखते है –

जनकसुता जग जननि जानकी। अतिसय प्रिय करुना निधान की।।
ताके जुग पद कमल मानवउँ। जासु कृपाँ निरमल मति पावउँ।।

(1 / 18 / 7–8)

श्रीराम नाम, जो कि 'मंत्रराजु' है, का प्रभाव असीम है। इसकी चिंता नहीं करनी है कि पहले निर्मल मन बनाएँ फिर जप करें। जप करने से, श्रीभगवन् गुणगान करने से, श्रद्धा–विश्वास पूर्वक श्रीरामचरितमानस का पाठ करने से निर्मल मन स्वतः हो जाएगा। इसलिए गोस्वामीजी ने 'श्रीराम नाम' वंदना के पश्चात बहुत स्पष्ट रूप से लिखा है कि चाहे भाव हो या कुभाव और यहाँ तक कि आलस और बिना मन के भी 'श्रीराम नाम' जप करने से दशों दिशाओं में मंगलमय वातावरण हो जाता है –

भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ। नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ।।

(1 / 28 / 1)

धन्य है श्रीरामनाम रूपी मंत्रराज और धन्य हैं वे जो इसमें रम गए हैं। यहाँ तक कि वह कुल धन्य है जिसमें इस मंत्रराज को जपने वाला श्रीरघुनाथ परायण विनम्र नर पैदा होता है। ये वचन संपूर्ण श्रीरामकथा सुनाने के पश्चात श्रीशिवजी ने पार्वतीजी से कहे थे –

सो कुल धन्य उमा सुनु जगत पूज्य सुपुनीत।
श्रीरघुबीर परायन जेहिं नर उपज बिनीत।।

(7 / 127)

रावण को उसके मैं (अहंकार) ने मारा

अयोध्या से वापस आने पर मां कौशल्या ने पूछा...

"रावण" को मार दिया?

भगवान श्रीराम ने सुन्दर जवाब दिया...

महाज्ञानी, महाप्रतापी, महाबलशाली, प्रकाण्ड पंडित, महा शिवभक्त, चारों वेदों के ज्ञाता को मैंने नहीं उसके ''मै'' ने मारा है।

प्रस्तुति : **मानस रत्न पंडित राम गोपाल तिवारी**

भरत सरिस को राम सनेही

श्रीमती राजबाला शर्मा,
कोठी नं0-1456, सैक्टर-21, गुड़गाँव

जिन श्रीराम का सारा संसार भजन करता है, वही राम अपने परम स्नेही भाई भरतजी को स्मरण करते हैं। ऐसा सौभाग्यशाली रामप्रेमी और भला कौन हो सकता है। जैसे अगाध समुद्र के किनारे बैठा व्यक्ति अनुमान नहीं लगा सकता कि सागर की गहराई में कितनी माणियां छिपी हुई हैं, वैसे ही भरतजी के हृदय में राम–प्रेम की अगणित मणियाँ छिपी हुई हैं। गोस्वामीजी तुलसीदास लिखते हैं –

भरत सरिस को राम सनेही। जगु जप राम रामु जप जेही।।

(2/218/7)

वे श्रीरामजी को भाई ही नहीं, अपना स्वामी मानते थे। जन्म से ही वे श्रीराम के प्रेम की मूर्ति थे। श्रीराम के सुख व प्रसन्नता में प्रसन्न रहते थे। श्रीराम के प्रति इतना प्रेम था कि श्रीराम को देखने की प्रबल आकांक्षा होते हुए भी संकोच वश उन्हें जी भर कर देख नहीं पाते थे –

महूँ सनेह सकोच बस सनमुख कही न बैन।
दरसन तृपित न आजु लगि पेम पियासे नैन।।

(2/260)

ऐसे परम अनुरागी, प्रेमी भरतजी को जब पता चला कि उनके ही कारण श्रीरामजी को वन जाना पड़ा तो उनकी व्यथा का पारावार नहीं रहा और वे अपनी माता के प्रति तक अति कठोर व निष्ठुर हो गये। उनकी व्याकुलता और तड़प की पराकाष्ठा इस दोहे में झलकती है –

भरतहि बिसरेऊ पितु मरन सुनत राम बन गौनु।
हेतु अपनपउ जानि जियँ थकित रहे धरि मौनु।।

(2/160)

भरतजी अपनी माता कैकेयी को अपशब्द कहकर कौशिल्या माँ के पास जाकर बिलख–बिलख कर रोने लगे और कहने लगे कि माँ इसमें मेरी कोई सम्मति नहीं है। मेरा इसमें कोई दोष नहीं है। मैंने कैकेयी की कोख से जन्म लिया, यही मेरा दोष है। भरतजी ने कहा कि हे माता! यदि मेरा इसमें दोष है तो मुझे वह पाप लगे जो कि पाप माता–पिता और पुत्र के मारने से होता है, जो पाप गोशाला और ब्राह्मणों की बस्ती में आग लगाने से होता है तथा इसी तरह के जघन्य पाप मुझे लगें यदि भैया के वन गमन में मेरा हाथ हो तो।

जे अघ मातु पिता सुत मारें। गाइ गोठ महिसुर पुर जारें॥
जे अघ तिय बालक बध कीन्हें। मीत महीपति माहुर दीन्हें॥
जे पातक उपपातक अहहीं। करम बचन मन भव कबि कहहीं॥
ते पातक मोहि होहुँ बिधाता। जौं यहु होइ मोर मत माता॥

(2 / 167 / 5–8)

भरतजी ने भारी मन से अपने पिताजी का क्रियाकर्म विधि विधान से किया और जब राज्य संभालने के लिये गुरुजी ने कहा तो मानो भरतजी को लगा कि किसी ने पके फोड़े को छू लिया हो। यदि कोई आज का भाई होता तो माँ के वचनानुसार गुरु की आज्ञा मानकर राज्य गद्दी स्वीकार कर लेता। राजा दशरथ का राज्य, जिसकी इन्द्र भी सराहना करते थे। उनकी धन सम्पति देख कुबेर भी संकुचा जाते। पर भरत तो पागल हो रहे हैं श्रीराम विरह में और पश्चाताप की अग्नि में पल पल जल रहे हैं। कौन जान सकता था उनकी आत्मग्लानि की व्यथा को।

राज्य सिंहासन स्वीकार करना तो क्या वे बोले –

कैकेई सुअ कुटिलमति राम बिमुख गतलाज।
तुम्ह चाहत सुखु मोहबस मोहि से अधम के राज॥

(2 / 178)

मोहि राजु हठि देइहहु जबहीं। रसा रसातल जाइहि तबहीं॥

(2 / 179 / 2)

भरतजी कहते हैं कि हे गुरुदेव मुझ जैसे कुटिल मति कैकेई पुत्र को राज्य देंगे तो पृथ्वी रसातल में चली जाएगी। वे कहते हैं कि आज इस दुनियाँ में मेरे समान पापी और कौन होगा जिसके कारण श्रीसीताराम को वन जाना पड़ा और पिताजी का परलोक गमन हुआ। मैं ही इन सारे अनर्थों की जड़ हूँ। जगत का उपहास सहकर भी ये प्राण अभी तक मेरे शरीर में हैं, कितना वज्र से भी कठोर है मेरा हृदय। धिक्कार है मेरे जीवन को। मुझे इस बात का दुःख नहीं है कि लोग क्या कहेंगे और न ही परलोक का सोच है। मेरे हृदय में तो दुख इस बात का है कि सीता रामजी को मेरे कारण वन के दुख उठाने पड़ रहे हैं। वे अपने मन की बात इस प्रकार से कहते हैं –

आपनि दारुन दीनता कहउँ सबहि सिरु नाइ।
देखें बिनु रघुनाथ पद जिय कै जरनि न जाइ॥

(2 / 182)

यदि कोई मेरी इस भारी विपत्ति में सहायक है तो चलें मेरे साथ श्रीसीतारामजी को मना लायें। अपना राज्य अपना अधिकार वे स्वयं सँभालें। यह मत सबको अतिप्रिय लगा और सभी लोग चित्रकूट जाकर श्रीरामजी को वापिस लाने की तैयारी में लग गए। श्रीरामजी को मनाने उनके साथ में सारा परिवार, सेना,

अयोध्यावासी तथा तीनों मातायें, गुरुजी जो सब श्रीरामजी के विरह में डूबे हुए थे, चल पड़े।

गुरु वसिष्ठ व मातायें पालकी में बैठीं। छोटे–भाई शत्रुघ्न और स्वयं पैदल जा रहे हैं, नंगे पैर। कुश–कंटक कठिन रास्ते, कोमल पैर, पर मन में उत्साह है श्रीरामजी से मिलन का। भरतजी को सेवकों ने सवारी के लिये बहुत विनय की तब वे कहते हैं कि "मेरे प्रभु इसी धरती पर पैदल चल कर गए हैं। मुझे तो सिर के बल चल कर जाना चाहिये, क्योंकि मैं तो उनका सेवक हूँ।" –

सिर भर जाउँ उचित अस मोरा। सब तें सेवक धरमु कठोरा।।

(2 / 203 / 7)

श्रीराम के वियोगी भी मार्ग में उपवास करते, कंद मूल फल खाते, भूमि शयन करते हुए गए। भरतजी के कोमल चरणों में छाले पड़ गये, परन्तु श्रीराम के मतवाले वे चले जा रहे हैं –

झलका झलकत पायन्ह कैसें। पंकज कोस ओस कन जैसें।।
भरत पयादेहिं आए आजू। भयउ दुखित सुनि सकल समाजू।।

(2 / 204 / 1–2)

जब निषादराज ने सुना कि भरत सेना समेत श्रीराम के पास चित्रकूट जा रहे हैं, तो चिन्तित हो उठे और अपने वीर साथियों को युद्ध के लिए सजग किया। तत्पश्चात एक वृद्ध की सलाह पर निषादराज भरतजी की मनः स्थिति जानने के लिये कुछ भेंट लेकर आगे बढ़े। इधर भरतजी निषाद को राम सखा जानकर दौड़ कर उनसे लिपट गये और कहने लगे; भैया मेरे प्रभु राम का हाल बताओ। मैं अभागा ही उनकी विपत्ति का मूल कारण हूँ निषादराज ने भरतजी को धीरज बंधाया। निषादराज के साथ भरतजी श्रीरामजी के विरह में व्याकुल चले जा रहे हैं। प्रयागराज में प्रवेश किया और त्रिवेणी में स्नान कर हाथ जोड़कर त्रिवेणी से यही विनय की कि मैं अपना क्षत्रिय धर्म का उल्लंघन करके आपसे भीख माँगता हूँ कि मुझे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष कुछ भी नहीं चाहिये। केवल जन्म जन्मान्तर तक श्रीरामजी के चरणों में मेरा प्रेम रहे –

अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहउँ निरबान।
जनम जनम रति राम पद यह बरदानु न आन।।

(2 / 204)

रात्रि में मुनि भरद्वाज के आश्रम में विश्राम किया। मुनिजी कहते हैं कि हे भरत! हम तपस्वी कभी झूँठ नहीं कहते हैं। तप के प्रभाव से ही हमें श्रीरामजी के दर्शन हुए हैं और श्रीराम के दर्शन के फलस्वरूप हमें तुम्हारे दर्शन हुए है तुम धन्य हो। तुम्हारा राम के प्रति प्रेम भी धन्य है, पर भरतजी के मन में आत्मग्लानि होती है और उनके नेत्रों से अश्रु गिरने लगते हैं।

चित्रकूट पहुँच कर भरतजी श्रीरामजी के पीछे से दण्डवत प्रणाम करते हैं। उन्हें देखकर लक्ष्मण के

संकेत से श्रीरामजी उन्हें उठाकर अपने गले से लगा लेते हैं –

बरबस लिए उठाइ उर लाए कृपानिधान।।
भरत राम की मिलनि लखि बिसरे सबहि अपान।।

(2 / 240)

चित्रकूट में विचार मंथन के दौरान गुरु वसिष्ठजी द्वारा भरतजी की प्रशंसा करने के पश्चात श्रीरामजी घोषणा कर देते हैं कि भरत जैसा कहदें मैं करने को तैयार हूँ। पर भरतजी सोचते हैं कि वे श्रीरामजी को संकोच में नहीं डालेंगे। वे विचार करते हैं कि सेवक का हित स्वामी की सेवा में है। वे कहते हैं कि जिस प्रकार से मेरा हित हो, पर आपका मन प्रसन्न हो, वही कीजिए –

अब करुनाकर कीजिअ सोई। जन हित प्रभु चित छोभ न होई।।
जो सेवकु साहिबहि सँकोची। निज हित चहइ तासु मति पोची।।
सेवक हित साहिब सेवकाई। करै सकल सुख लोभ बिहाई।।

(2 / 268 / 2–4)

भरतजी त्याग की साक्षात मूर्ति हैं। उनके राम–प्रेम की पराकाष्ठा यह है कि बिना किसी लोभ के, बिना किसी सुख की कामना के श्रीरामजी की इच्छा के अनुसार आचरण करते हैं। यही कारण है कि श्रीमद् गोस्वामी तुलसीदास द्वारा विरचित श्रीरामचरितमानस अयोध्याकाण्ड, जो कि श्रीभरतजी के चरित्र से ओतप्रोत है, की फलश्रुति लिखी है कि जो भरतजी के चरित्र को नियमपूर्वक आदर सहित सुनेंगे, उन्हें इस संसार के भोगों से विरक्ति होकर श्रीरामजी के चरणों में अवश्य ही प्रेम हो जाएगा –

भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं।
सीय राम पद पेमु अवसि होइ भव रस बिरति।।

(2 / 326)

हमारा भविष्य

बिक रहा है पानी, पवन बिक न जाए, बिक गयी है धरती, गगन बिक न जाए।
चाँद पर भी बिकने लगी है जमीं, डर है कि सूरज की तपन बिक न जाए।
हर जगह बिकने लगी है स्वार्थ नीति, डर है कि कहीं धर्म बिक न जाए।
देकर दहेज खरीदा गया है दुल्हे को, कहीं उसी के हाथों दुल्हन बिक न जाए।
हर काम की रिश्वत ले रहे जो नेता, कहीं इन्हीं के हाथों वतन बिक न जाए।

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला

सुश्री प्रभा पाण्डेय, सी-510, रॉयल टावर, सैक्टर-61, नोएडा

जब जब पृथ्वी पर दुष्टों का अत्याचार चरम सीमा पर पहुँच जाता है, तब तब भगवान दुष्टों के संहार, भक्तों के कल्याण एवं एक आदर्श समाज की स्थापना हेतु अवतरित होते हैं, प्रकट होते हैं और जन्म लेते हैं। तीन शब्द—अवतरण, प्राकट्य और 'जन्म' में पात्र भेद से भेद है, यथा — देवता ब्रह्म का अवतरण मानते हैं, भक्त जन प्राकट्य और जिन्होंने भगवान को पुत्र रूप में पाने का वरदान माँगा अर्थात् महाराज दशरथ भगवान का जन्म मानते हैं। इन तीनों की व्याख्या इस प्रकार से है —

1. जब शंकरजी के सुझाव पर ब्रह्माजी सहित सभी देवताओं ने अखिल ब्रह्माण्ड नायक परमब्रह्म परमात्मा की आर्त स्वर से प्रार्थना की, तब आकाशवाणी हुई कि मेरे भक्त कश्यप और अदित ने महान तप किया था और मैंने उनको वरदान दिया था कि मैं उनका पुत्र बनकर अवतरित होऊँगा। वे अयोध्या में दशरथ—कौशिल्या के रूप में प्रकट हुए हैं। मैं उनके यहाँ चारों भाइयों सहित अवतार लूँगा —

कस्यप अदिति महातप कीन्हा। तिन्ह कहुँ मैं पूरब बर दीन्हा।।
ते दशरथ कौसल्या रूपा। कौसलपुरीं प्रगट नर भूपा।।
तिन्ह के गृह अवतरिहउँ जाई। रघुकुल तिलक सो चारिउ भाई।।

(1 / 187 / 3—5)

अवतार का अर्थ है किसी उच्च स्तर से नीचे भूलोक में अवतरण, इस प्रकार से देवगण श्रीरामजी का अवतार मानते हैं। कौशिल्याजी भक्त हैं, अतः उनके सामने भगवान प्रकट हुए, क्योंकि भक्त भगवान का प्राकट्य मानते हैं —

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी।।
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा। निज आयुध भुजचारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी।।

(1 / 192 / छंद)

यहाँ राम के जन्म का नहीं, प्राकट्य का वर्णन है, जो आयुध धारण किए चतुर्भुज स्वरूप हैं। भगवान को इस रूप में देखकर माता कौशिल्या कहती हैं —

कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला। यह सुख परम अनूपा।।

(1 / 192 / छंद)

यह सुनकर भगवान एक शिशु की भाँति व्यवहार करते हुए रोना प्रारम्भ कर देते हैं –

सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।

(1 / 192 / छंद)

महाराज दशरथ ने तो यह वरदान माँगा था कि चाहे कोई उनको कुछ भी कहे वे तो पुत्रवत प्रेम चाहते हैं अर्थात् भगवान से वैसा ही प्रेम करना चाहते हैं जैसे एक पिता अपने पुत्र से करता है। पुत्र न तो अवतरित होता है और न प्रकट, उसका तो जन्म होता है, अतः दशरथजी के लिए गोस्वामी तुलसीदासजी ने श्रीरामजी का जन्म लिखा है –

दसरथ पुत्रजन्म सुनि काना। मानहुँ ब्रह्मानंद समाना।।

(1 / 193 / 3)

वाल्मीकीय रामायण में श्रीरामजी को एक आदर्श राजा के रूप में माना है। पर गोस्वामी तुलसीदासजी ने उसी कथा को मर्यादित रूप में लिखते हुए श्रीराम को अखिल ब्रह्माण्ड नायक ब्रह्म का अवतार के रूप में प्रस्तुत किया है। उनका भावात्मक दृष्टिकोण श्रीराम को सार्वकालिक, सार्वभौमिक और सार्वजनिक बना देता है। श्रीरामजी ने जो आदर्श प्रस्तुत किए हैं उनके अनुपालन से एक आदर्श समाज की स्थापना संभव है।

गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा विरचित श्रीरामचरितमानस ऐसा ग्रन्थ है, जिसमें मानव–जीवन की सभी विधाएँ, उसके सारे आदर्श कुशल पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किए गये हैं। 'मानस' का मूल स्वर है कि राम ईश्वर हैं और उनकी प्राप्ति ही जीवन का लक्ष्य है, पर इसकी प्राप्ति उनके प्रति अनुराग के बिना सम्भव नहीं है।

मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा। किएँ जोग जप ग्यान बिरागा।।

(7 / 62 / 1)

ईश्वर

एक शब्द है (वफा)
जमाने में नहीं मिलती कहीं ढूंढ पाओ तो कहना,
एक शब्द है (आँसू)
दिल में छुपा कर रखो तुम्हारी आँखों से ना निकल जाये तो कहना,
एक शब्द है (ईश्वर)
इसे पुकार कर तो देखो सब कुछ पा ना लो तो कहना

अरुन पराग जलजु भरि नीकें

रामजन्म सिंह, हिन्दी प्रवक्ता (सेवा निवृत्त)
ग्राम+पोस्ट– दामा, तहसील–मेंहनगर, जिला–आजमगढ़ (उ0 प्र0) फोन :– 9839453851

भगवान श्रीराम के विवाह का प्रसंग है। सिंदूर दान विवाह के कृत्यों में बड़े महत्व की विधि है। विदेह नन्दिनी सीता के माथे पर भगवान श्रीराम किस प्रकार से सिंदूर अर्पित कर रहे हैं। गोस्वामी तुलसीदास अपनी बात को उपमा के माध्यम से कहते हैं। इस उपमा में भी अटपटेपन की अनुभूति हो रही है। विवाह मण्डप में कन्या के माथे पर वर सिंदूर अर्पित करता है। यहाँ सिन्दूर दान ऐसा लग रहा है जैसे सर्प कमल में लाल पराग लेकर अमृत के लोभ से चन्द्रमा को विभूषित कर रहा हो।

"राम सीय सिर सेंदुर देहीं"

(1 / 325 / 8)

उपमा में कहा गया है जैसे लोभी सर्प अमृत के लोभ से चन्द्रमा को पराग भेंट कर रहा है।

अरुन पराग जलजु भरि नीकें। ससिहि भूष अहि लोभ अमी कें॥

(1 / 325 / 9)

इस उपमा में विरोधाभास दिखाई पड़ रहा है। प्रश्न उठता है कि लोभी कौन, देने वाला या लेने वाला। इस प्रसंग में गोस्वामीजी की उपमा देखें। श्रीराम की भुजा को सांप बना दिया, सीता का मुख चन्द्रमा है। सिन्दूर सौभाग्य का प्रतीक है। श्रीराम का विवाह प्रसंग विनोद एवं व्यंग्य से भरा हुआ है। एक दृष्टांत देखें, अगर किसी स्त्री ने पति को प्रणाम किया और पति ने 'अखण्ड सौभाग्यवती भव' (तुम्हारा सौभाग्य अखण्ड रहे) का आशीर्वाद दिया तब प्रश्न यह उठता है कि पति आशीर्वाद दे रहा है या ले रहा है। स्त्री सौभाग्यवती तभी रहेगी जब पति दीर्घ जीवी हो। देखने में प्रतीत हो रहा है आशीर्वाद दिया जा रहा है, पर सत्य यह है कि परोक्ष रूप से वह ले रहा है। विदेह नन्दिनी को सौभाग्य चिन्ह दे रहे हैं यहाँ अनोखी दार्शनिक वृत्ति का परिचय दिया गया है। सर्प काल का प्रतीक है। सर्प(काल) सिंदूर के रूप में सौभाग्य चिन्ह अर्पित कर रहा है।

यहाँ सिंदूर निर्माण की विधि पर चर्चा प्रासंगिक है। सिंदूर में पारा मिलाया जाता है। पारा चंचल होने से पकड़ में नहीं आता है। सिंदूर में निहित पारा स्थिर हो जाता है। ठीक इसी प्रकार व्यक्ति का मन पारे के समान चंचल है। सिंदूर में स्थित पारे की चंचलता समाप्त हो जाती है। वर अपने मन रूपी पारे का अनुराग के सिंदूर में मिलाकर कन्या के मस्तक पर अर्पित करता है। तब उसका स्नेह स्थिर हो जाता है। अनुराग का रंग लाल माना गया है और सिंदूर भी लाल रंग का होता है।

श्रीराम के हाथ का अगला भाग तो कमल है, पिछला भाग सर्प की तरह, सिन्दूर ही मानो पराग है, सीताजी का मुख चन्द्रमा के समान है। चन्द्रमा में अमृत की कल्पना है। सर्प चन्द्रमा से अमृत की याचना

करने जा रहा है। भक्ति के सन्दर्भ में करुणा का अमृत सीता के पास है। महाकवि ने इस चौपाई में गागर में सागर भर दिया है। सर्प ऐसी भेंट लेकर चन्द्रमा के पास जा रहा है, जो चन्द्रमा के लिए दुर्लभ है। कमल का पराग लेकर चन्द्रमा के पास जाना अनोखा दृष्टांत है। चन्द्रमा कमल का पराग कभी नहीं पा सका, क्योंकि चन्द्रमा के निकलते ही कमल बंद हो जाता है। आज वही कमल चन्द्रमा के समीप पहुंच कर विकसित रहेगा। यह अनोखा उपहार है।

ब्रह्म का अनुराग प्राप्त कैसे होगा, ब्रह्म तो विरागी है। यहाँ गोस्वामीजी ने बताया है, विरागी ब्रह्म ही भक्त को देखकर अनुरागी हो जाता है और अनुराग (सिंदूर) की भेंट अर्पित करते हुए श्रीराम मानो सीताजी से कह रहे हैं कि जब तक इस अनुराग के साथ–साथ आप की करुणा का दिव्य अमृत सम्मिलित न हो, तब तक जीव धन्य नहीं हो सकता। इस प्रकार यह सिंदूर दान सौभाग्य की अखण्डता का प्रतीक है तथा त्यागी ब्रह्म के रागी बनने का क्रम है।

सीता का जन्म सुनयना के गर्भ से नहीं हुआ है। वह विदेह–राज की भावनात्मक पुत्री हैं। जनक के यहाँ चार कन्याएँ जीव के अन्तः करण में रहने वाली चार अवस्थाओं की प्रतीक हैं। उर्मिला जाग्रत अवस्था है, श्रुत कीर्ति स्वप्नावस्था, माण्डवी सुषुप्ति अवस्था की प्रतीक हैं तथा सीताजी तुरीयावस्था की प्रतीक हैं। यह चौथी अवस्था शरीर से ऊपर की है। यह विवाह चार फल, चार क्रियाओं का मिलन है। शत्रुघ्न अर्थ हैं, लक्ष्मण काम के प्रतीक हैं। राम मोक्ष और भरत मूर्तिमान धर्म हैं। श्रीसीताराम विवाह तो साक्षात ब्रह्म और शक्ति का दिव्य मिलन है।

इंसान की आदत

एक बार इंसान ने कोयल से कहा -
"तू काली ना होती तो कितनी अच्छी होती"

सागर से कहा -
"तेरा पानी खारा ना होता तो कितना अच्छा होता"

गुलाब से कहा -
"तुझमें कँाटे ना होते तो कितना अच्छा होता"

तब तीनों एक साथ बोले -
"हे इंसान अगर तुझमें दूसरों की कमियाँ देखने की आदत
ना होती तो तू कितना अच्छा होता....

रामकथा कलि कलुष बिभंजनि

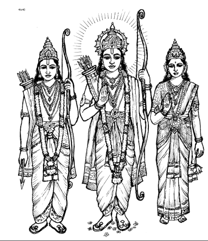

श्री देवेन्द्र पांडे
मंदिर, सूरजपुर, नोएडा

श्रीरामचरितमानस के प्रारंभ में ही श्रीराम कथा की महत्ता का वर्णन करते हुए गोस्वामी तुलसीदासजी लिखते हैं कि राम कथा कलियुग के पापों को नष्ट करने वाली है, श्रीरामकथा जीवों को विश्राम देने वाली है, सब मनुष्यों को प्रसन्न करने वाली है और कलियुग के पापों का नाश करने वाली है। रामकथा कलियुग रूपी साँप के लिये मोरनी है और विवेक रूपी अग्नि को प्रकट करने के लिये अरणि (मन्थन की जाने वाली लकड़ी) है –

बुध बिश्राम सकल जन रंजनि। रामकथा कलि कलुष बिभंजनि।।
राम कथा कलि कामद गाई। सुजन सजीवन मूर सुहाई।।

(1/31/5–7)

रामकथा कलियुग में सब मनोरथों को पूर्ण करने वली कामधेनु गौ है और सज्जनों के लिये सुन्दर संजीवनी बूटी है। पृथ्वी पर यही अमृत की नदी है, जन्म–मरण रूपी भय का नाश करने वाली और भ्रम रूपी मेढ़कों को खाने के लिये सर्पणी है। राम कथा असुरों की सेना के समान नरकों का नाश करने वाली और साधु रूपी देवताओं के कुल का हित करने वाली पार्वती (दुर्गा) है। यह संत समाज रूपी क्षीर समुद्र के लिये लक्ष्मीजी के समान है और सम्पूर्ण विश्व का भार उठाने में अचल पृथ्वी के समान है। इतनी सुन्दर और मर्यादित राम कथा को भी मूढ लोग तर्क की दृष्टि से देखते हैं, क्योंकि उनके अंदर विवेक ओर ज्ञान नहीं है। श्रीरामचरितमानस को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें और संतों का संग करें तभी रामकथा समझ में आएगी और फिर सभी कुतर्क स्वतः मिट जाएंगे क्योंकि –

सठ सुधरहिं सतसंगति पाई। पारस परस कुधातु सुहाई।।

(1/3/9)

रामकथा को संत अनेकों तरीकों से गाते हैं। संत बाबा तुलसीदासजी ने रामकथा बड़े मर्यादित ढंग से लिखी है। अगर हम अपने परिवार में प्रेम और मर्यादा चाहते हैं तो रामचरितमानस को अपने बच्चों को सुनाना और समझाना चाहिए। श्रीरामजी की लीलाओं का वर्णन करना चाहिए। कुछ लोगों में फैली हुई भ्राँति है कि धर्म क्या है? अगर धर्म जानना है या अनुभव करना है तो श्रीरामचरितमानस पढ़िए। स्वयं भगवान श्रीराम ने कहा है –

पर हित सरिस धर्म नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।

(7/41/1)

अर्थात् परोपकार के समान दूसरा कोई धर्म नहीं है और दूसरे को कष्ट देने के समान कोई पाप नहीं है। श्रीरामजी को धर्म का साक्षात विग्रह कहा है। **रामो विग्रहवान धर्मः**

धर्म की सम्पूर्ण व्याख्या तो श्रीरामजी के चरित्र से मिल जाती है। सौतेली माता के वचन सुनकर श्रीरामजी भार्या जानकी और लघु भ्राता लक्ष्मण के साथ वन में गये। आज के बेटे वन नहीं जाते हैं माँ–बाप को ही घर से निकाल देते हैं। ऐसा क्यों होता है? क्योंकि हम (माँ–बाप) अपने बच्चों को रामजी जैसी मर्यादा या गुण नहीं सिखा पाते हैं। हम अपने बच्चों को अच्छी संगत नहीं दे पाते।

श्रीराम कथा इहलोक और परलोक दोनों में सुधार करती है। मथुरा के संत कवि बिंदुजी ने लिखा है–

हमें निज धर्म पर चलना सिखाती रोज रामायण।
सदा शुभ आचरण करना बताती रोज रामायण॥

समाज में अपने दायित्व के निर्वाह हेतु ऐसे सदाचारी उदाहरण रामायण (श्रीरामचरितमानस) में मिलते हैं, जिनका पालन करने से सर्वत्र सुख शांति मिल जाएगी। इतना ही नहीं इसके आचरण से संसार सागर को इतनी आसानी से पार कर सकते हैं, जैसे गाय के पैर से बने गड्ढ़े को पार करना हो –

कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं। ते गोपद इव भवनिधि तरहीं॥

(7/129/6)

सठ सुधरहिं सतसंगति पाई

एक बार किसी ने प्रश्न किया कि आजकल चहुँ ओर सत्संग–श्रीराम कथा के कार्यक्रम हो रहें हैं पर फिर भी समाज का नैतिक स्तर क्यों नहीं सुधर रहा है। इसका उत्तर देने का प्रयास किया जा रहा है। श्रीरामचरितमानस के प्रारंभ में ही लिखा है कि सतसंगति से 'सठ' सुधर जाते हैं।

सठ सुधरहिं सतसंगति पाई। पारस परस कुधात सुहाई॥

(1/3/9)

अब प्रश्न यह है कि सठ अर्थात् बिगड़े हुए लोग तो सत्संग में जाते ही नहीं तब वे सुधरेंगे कैसे। अब फिर प्रश्न उठता है कि जब बिगड़े हुए लोग सुधर नही पाते हैं तब सत्संग का लाभ ही क्या है। इसका सीधा सादा उत्तर यह है कि सुधरे हुए लोग तो सत्संग में जाते हैं और कम से कम वे तो नहीं बिगड़ पाते बिगड़े हुए लोगों के साथ रहने पर भी। यह भी श्रीरामचरितमानस में लिखा है।

बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं। फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं॥

(1/3/10)

जब फोन की बैटरी डिस्चार्ज हो जाती है तब फोन काम करना बंद कर देता है। इसी प्रकार कुसंगत में रहते – रहते सद्गुणों का प्रभाव कम होने लगता है पर श्रीराम कथा और सत्संग से बैटरी चार्ज होने की तरह सुसंस्कार जाग्रत हो जाते हैं जिससे कुसंगति का कुप्रभाव नहीं पड़ता है। इसका लाभ यह है कि समाज का नैतिक स्तर यदि बढ़ न सके तो कम से कम घटे तो नहीं।

बिनु संतोष न काम नसाहीं

श्री उमाकांत पाण्डेय,
आदर्श मार्ग, दिलदार नगर, जनपद–गाजीपुर (उ0प्र0) फोन : 09335022837

अधिकांश लोगों के मन में यह विचार बिन्दु पुरजोर प्रभावी हो गया है कि कोई भी व्यक्ति सुखी तभी हो सकता है जब उसे कहीं से, किसी भी माध्यम से प्रचुर धन प्राप्त हो जाये। अब प्रश्न यह है कि सुखी कौन है, इसके लिए कितने धन की आवश्यकता है तथा वह किस प्रकार से प्राप्त किया जाये। यह तो अकाट्य सत्य है कि येन–केन–प्रकारेण प्राप्त धन जो दुष्कर्म तथा अमानवीय व्यवहार से हरण किया गया है, वह अपना रंग अवश्य दिखलायेगा। बहुत धन भी कुछ इसी प्रकार का परिणाम दर्शाता है। इस सन्दर्भ में एक कहावत है कि **'पापी का धन पानी में, बेईमानी का धन शैतानी में'** धन बहुत है, पर यदि किसी विशेष व्याधि से व्यथित है तो धन का कोई सार्थक लाभ भी दृष्टिगोचर नहीं होता। अनेक सत्पुरुषों ने सुखी जीवन–यापन कम धन से ही किया है।

अतः स्पष्ट है कि मनुष्य धनी तो हो सकता है, परन्तु सुखी कदापि नहीं। सुख दो प्रकार का होता है – एक भौतिक और दूसरा आध्यात्मिक। संसार के भोग्य पदार्थों के सेवन से या सांसारिक संबंधों से जो सुख प्राप्त होता है वह भौतिक सुख है और जो आत्मा के अनुभव से आत्मानंद, परमानंद प्राप्त होता है वह आध्यात्मिक सुख है। भौतिक सुख के संबंध में एक कवि ने लिखा है –

प्रथम सुख नीरोगी काया। दूजे सुख हो घर में माया।।
तीजे सुख कुलवंती नारी। चौथे सुख सुत आज्ञाकारी।।
पंचम सुख है सुंदर वासा। षष्ठम सुख है सज्जन पासा।।

इस भौतिक सुख में भी जब तक मन शान्त नहीं होगा, सुख नहीं मिलेगा, क्योंकि सच्चा स्वास्थ्य तभी मिलेगा जब मन स्वस्थ होगा और जहाँ तक माया अर्थात् धन का संबंध है यदि वह न्यायपूर्वक नहीं कमाया गया तो मन में अशांति पैदा करेगा और **'अशान्तः कुतः सुखम्'** सिद्धांत के अनुसार यह भौतिक सुख भी नहीं मिल सकता है। आध्यात्मिक सुख के संदर्भ में श्रीरामचरितमानस में लिखा है –

सुखी मीन जे नीर अगाधा। जिमि हरि सरन न एकउ बाधा।।

(4 / 17 / 1)

अर्थात् जैसे अगाध जल में मछली सुखपूर्वक रहती है इसी तरह ईश्वर की शरण में आने पर एक भी बाधा अर्थात् दुख नहीं रहता। फिर तो सुख ही सुख है।

इस संदर्भ में रामचरितमानस में यह भी वर्णन आया है कि जब तक कामनाओं का अंत नहीं होगा, तब

तक सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। एक कामना पूरी होती है तो दूसरी तैयार हो जाती है और इस प्रकार से कामनाओं की पूर्ति हेतु मानव जीवन भर प्रयासरत रहता है, किन्तु वे पूरी नहीं होतीं और इस स्थिति में सुख कैसे मिल सकता है। भगवान के भजन से कामनाएँ मिट सकती हैं। यह सूत्र श्रीरामचरितमानस में इस प्रकार से है –

बिनु संतोष न काम नसाहीं। काम अछत सुख सपनेहुँ नाहीं।।
राम भजन बिनु मिटहिं कि कामा। थल बिहीन तरु कबहुँ कि जामा।।

(7 / 90 / 1–2)

अर्थात् बिना संतोष के कामनाएँ नष्ट नहीं होंगी और कामनाओं के रहते कभी सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। जिस प्रकार से बिना थल अर्थात् जमीन पेड़ नहीं उग सकता है उसी प्रकार राम भजन के बिना कामनाएँ नहीं मिट सकती हैं। इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि यदि सुख चाहिए तो 'राम भजन करना ही एक साधन स्वरूप है। अब प्रश्न यह है कि भजन कैसे किया जाए। इसका उत्तर भी श्रीरामचरितमानस में इस प्रकार से दिया गया है –

मन क्रम बचन छाड़ि चतुराई। भजत कृपा करिहहिं रघुराई।।

(1 / 200 / 6–8)

अर्थात् मन वाणी कर्म से चतुराई (कपट) छोड़कर भजन करने से श्रीरघुनाथजी कृपा करते हैं। स्वयं भगवान श्रीराम ने विभीषण शरणागति के प्रसंग में सुग्रीव से कहा था कि निर्मल मन वाला ही उन्हें पसंद है। उन्हें छल–कपट करने वाला बिल्कुल नहीं भाता है –

निर्मल मन जन सो मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भावा।।

(5 / 44 / 5)

भक्तमती शबरी को नवधा भक्ति का उपदेश देते समय सरल सुभाव अर्थात चतुराई, छल–कपट रहित होना नवमी भक्ति का लक्षण बताया है –

नवम सरल सब सन छलहीना। मम भरोस हियँ हरष न दीना।।

(3 / 36 / 5)

अयोध्यावासियों को उपदेश देते हुए भी श्रीरामजी ने 'सरल सुभाव का उल्लेख करते हुए कहा कि भक्ति पथ का सुगम साधन सरल सुभाव तथा मन की कुटिलता को दूर भगाना है। इसके साथ ही जो कुछ प्राप्त हो जाए उसी में संतोष करना भी एक साधन का लक्षण है –

सरल सुभाव न मन कुटिलाई। जथा लाभ संतोष सदाई।।

(7 / 46 / 2)

यहाँ पर भी सरल सुभाव और संतोष को महत्व दिया गया है। नीतिशास्त्र का भी यही उपदेश है कि

सुख की जड़ संतोष में है **'संतोष एव सुखस्य परम निधानम्'**

भक्ति कवि रहीम खानखाना ने भी इसी का समर्थन किया है। उन्होंने लिखा है कि जब संतोष धन आ जाता है, तब सभी धन धूल के समान हो जाते हैं अर्थात सब निरर्थक हो जाते हैं –

गो धन गज धन वाजि धन और रतन धन खान।
जब आवै संतोष धन सब धन धूर समान॥

अब पुनः विचार करें कि आखिर मन की कुटिलता कैसे समाप्त हो, क्योंकि जब तक मन में इसका स्थान रहेगा, तब तक न संतोष आएगा और यदि संतोष नहीं है तो सुख कैसे मिल सकता है? मन की कुटिलता दूर करने का एक मात्र साधन है श्रीराम नाम जप। यदि मन न भी लगे तब भी जप करते–करते उसमें मन रमने लगेगा और शनैः शनैः कुटिलता कम होती जाएगी तथा श्रीराम कृपा बरसने लगेगी। फिर तो सुख ही सुख है। एक बार उस परमपिता परमात्मा की कृपा से वह अलौकिक सुख का अनुभव हो जाए तो फिर सांसारिक दुख तिनके के समान तुच्छ लगने लगेंगे। श्रीराम नाम जप के महत्व पर गोस्वामी तुलसीदासजी लिखते हैं –

भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ। नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ॥

(1 / 28 / 1)

श्रीरामजी आनंद सिंधु हैं, सुख के सागर हैं। उस आनंद सिंधु की एक बूँद भी जीव को कृतार्थ कर देती है। फिर तो सुख ही सुख है। हर परिस्थिति में सुख का अनुभव होता जाता है, यदि उस सुख सागर के नाम का स्मरण जप होता रहे। नामकरण के समय गुरु वशिष्ठजी महाराज दशरथजी से कहते हैं –

जो आनंद सिंधु सुखरासी। सीकर तें त्रैलोक सुपासी॥
सो सुख धाम राम अस नामा। अखिल लोक दायक बिश्रामा॥

(1 / 197 / 5–6)

श्रीराम नाम जप से वह सुख प्राप्त हो जाता है जो किसी अन्य साधन से संभव ही नहीं है। धन का इस सुख से कोई संबंध नहीं है। भक्त सुदामा अत्यंत निर्धन थे, किन्तु परम सुखी थे। आज के अरबपतियों से पूछिए क्या वे वास्तव में सुखी हैं। सुख का धन से कोई संबंध नहीं है। सुख तो मन की एक स्थिति है जो यदि भगवन्नाम में हो जाए तो फिर सुख तो क्या परमसुख, आत्मानंद और परमानंद की प्राप्ति संभव है। तब जीव की यह स्थिति हो जाती है –

फिरत सनेहँ मगन सुख अपनें। नाम प्रसाद सोच नहिं सपने॥

(1 / 25 / 8)

मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान तुम्हारे चरणों में

श्रीरामचरितमानस सत्संग समिति (पंजीकृत)

ए-447, सेक्टर-47, नोएडा-201 301

दूरभाष : 2571547

वित्तीय वर्ष 2014 - 2015 का आय/व्यय विवरण (राशि भारतीय रुपयों में)

क्र.सं. आय विवरण	रुपये	व्यय विवरण	रुपये
1. वर्ष के प्रथम दिन की स्थिति			
(क) मियादी जमा खाता	55,269.00		
(ख) बैंक में बचत खाता	1,96,461.00		
(ग) नकद राशि	1,285.00		
2. स्मारिका में विज्ञापन से प्राप्त राशि	1,25,400.00	1. स्मारिका छपाई व्यय	1,00,000.00
3. दान/आरती मानस पाठ से प्राप्त राशि	2,47,754.00	2. श्रीरामनवमी उत्सव एवं श्रीराम कथा आयोजन पर व्यय	2,14,070.00
4. अन्य प्राप्तियाँ/बैंक ब्याज	3,818.00	3. टेलीफोन बिलों का भुगतान	8,045.00
		4. विविध व्यय	1,707.00
		5. गरीब/असहाय लोगों की सहायतार्थ व्यय	5,001.00
		6. वर्ष के अंतिम दिन की स्थिति	
		(क) मियादी जमा खाता	1,55,269.00
		(ख) बैंक में बचत खाता	1,39,612.00
		(ग) नकद राशि	6,283.00
कुल योग	6,29,987.00	कुल योग	6,29,987.00

दिनेश चन्द्र शर्मा	डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी	भगवान दास पटैरया	जे.के. गुप्ता	चार्टड
अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	सचिव	कोषाध्यक्ष	लेखाकार

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति

संस्था का ज्ञापन

1. **संस्था का उद्देश्य :**

(i) विभिन्न सद्ग्रन्थों एवं श्रीरामचरितमानस के अनुसार भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ धार्मिक कुरीतियों को दूर करना।

(ii) सत्साहित्य का प्रचार–प्रसार, प्रकाशन एवं प्रदर्शनी, सम्मेलन तथा श्रीराम कथा के आयोजन आदि के माध्यम से जन सामान्य के नैतिक स्तर में वृद्धि करना, आपसी भाई चारे एवं विश्व बंधुत्व तथा देशप्रेम की भावना जागृत करना।

(iii) गरीब / अनाथ / असहाय, जनजातीय आदि लोगों के स्वास्थय, शिक्षा एवं पुनर्वास में सहायता करना, स्कूल / कालेज / प्रशिक्षण संस्थान चलाना।

(iv) जन सामान्य के उपभोग हेतु मंदिर, स्कूल, धर्मशाला, पुस्तकालय, वाचनालय, सामुदायिक भवन और सत्संग भवन आदि का निर्माण एवं रखरखाव करना।

(v) पर्यावरण सुरक्षा, वृक्षारोपण, आपदा प्रबंधन आदि से संबंधित कार्यों में सरकार / स्वयंसेवी संस्थाओं का सहयोग करना।

(vi) महिलाओं के प्रति सम्मान जागृत करना तथा उनके उत्थान हेतु घरेलू उद्योग स्थापित करना।

(vii) किसी व्यक्ति विशेष / समुदाय के प्रति अन्याय तथा भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज उठाना।

(viii) प्राकृतिक चिकित्सा, योग, ध्यान, आयुर्वेद आदि के माध्यम से जन सामान्य में 'स्वस्थ जीवन' के प्रति जागरूकता पैदा करना तथा ऐसे स्वास्थ्य केन्द्रों की स्थापना एवं उनका रखरखाव करना।

(ix) देश–काल–परिस्थिति के अनुकूल समय–समय पर आवश्यकतानुसार यह संस्था अपने उद्देश्यों / नियमों में आम सभा की स्वीकृति से परिवर्तन कर सकती है।

उपर्युक्त सभी उद्देश्य धर्मार्थ / सामाजिक कल्याण हेतु गैर लाभ वाले हैं। यह संस्था पूर्णरूपेण अराजनैतिक होगी।

श्रीरामचरितमानस के सिद्ध मंत्र

श्रीरामचरितमानस एक काव्य ग्रन्थ ही नहीं, बल्कि सशक्त मंत्रों का संकलन है। इसकी चौपाइयाँ, दोहे, सोरठे सभी सरल मंत्र हैं। संस्कृत के मंत्र कठिन होते हैं, इससे हर एक को उनके उच्चारण में सुगमता नहीं होती, इसलिये जापक का मन उनमें पूरा नहीं लगता। साबर–मंत्र रूखे और कठिन शब्दावली से भरे होते हैं। उनमें भी मन नहीं लगता, परन्तु श्रीरामचरितमानस के ये मंत्र सरल, सरस और सार्थक हैं। जापक इनमें तन्मय हो जाता है। इच्छाशक्ति तल्लीन हो जाती है। इससे मनवांछित फल शीघ्र प्राप्त होता है।

रक्षा-रेखा :

मन्त्र सिद्ध करने के लिये या किसी संकटपूर्ण जगह पर रात्रि व्यतीत करने के लिये अपने चारों ओर रक्षा की रेखा खींच लेनी चाहिए। लक्ष्मणजी ने सीताजी की कुटी के आसपास जो रक्षा रेखा खींची थी, उसी लक्ष्य पर निम्नांकित रक्षा-मन्त्र बनाया गया है। इसे एक सौ आठ आहुति द्वारा सिद्ध कर लेना चाहिए।

मामभिरक्षय रघुकुलनायक। धृत बर चाप रुचिर कर सायक॥

इन मंत्रों को सिद्ध करके उनका जप करना अथवा मानस पाठ करते समय दोहा/सोरठा एवं चौपाइयों के बीच संपुट लगाने से इष्ट फल की अवश्य ही प्राप्ति होती है। मंत्र सिद्ध करने के लिए उपयुक्त मुहूर्त में रात्रि 10 बजे के बाद अष्टांग हवन सामग्री से इष्ट चौपाई अथवा दोहा/सोरठा से 108 आहुतियाँ देनी चाहिए। अष्टांग हवन सामग्री में चन्दन का बुरादा, तिल, शुद्ध घी, शक्कर, अगर, तगर, कपूर, शुद्ध केशर, नागर मोथा, पंच मेवा, जौ और चावल आते हैं। एक दिन हवन करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। इसके बाद जब तक कार्य सफल न हो, तब तक उस मंत्र (दोहा/चौपाई आदि) का प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ बार प्रातःकाल या रात्रि को जब सुविधा हो, जप करते रहना चाहिए, पर किसी भी स्थिति में 21 बार से कम जप न हो, इसका ध्यान रखें। सामान्यतया सवा लाख जप किया जाता है, पर इससे पहले ही यदि कार्य सिद्ध हो जाए तब भी अनुष्ठान पूरा करना चाहिए और जीवन पर्यन्त उस मंत्र को रोज स्मरण कर लेना चाहिए, ताकि मंत्र सिद्ध रहे।

इस सम्बन्ध में निम्नांकित नियम महत्वपूर्ण हैं :

1. पूर्ण श्रद्धा–विश्वास एवं समर्पण भाव से जप करें।
2. वाराणसी में भगवान शंकरजी ने मानस की चौपाइयों को मन्त्र शक्ति प्रदान की है, इसलिये वाराणसी की ओर मुख करके शंकरजी को साक्षी मानकर श्रद्धा से जप करना चाहिये।
3. जिस उद्देश्य के लिये जो चौपाई, दोहा या सोरठा जप करना बताया गया है, उसको सिद्ध करने के लिये अष्टांग हवन की सामग्री से उसी चौपाई, दोहे या सोरठे के द्वारा 108 आहुतियां देनी चाहिये। यह

हवन केवल एक ही दिन करना है। शुद्ध मिट्टी की वेदी बनाकर उस पर अग्नि स्थापित करके उसमें आहुति देनी चाहिये। प्रत्येक आहुति के साथ चौपाई, दोहा, सोरठा आदि के अन्त में 'स्वाहा' बोल देना चाहिये।

4. प्रत्येक आहुति लगभग 10 ग्राम की (सब चीजें मिलाकर) होनी चाहिये। इस हिसाब से 108 आहुति के लिये लगभग एक किलोग्राम सामग्री सब चीजें मिलाकर बना लेनी चाहिये। कोई चीज कम–ज्यादा हो तो कुछ आपत्ति नहीं। पंचमेवा में पिश्ता, बादाम, किसमिस (द्राक्षा), अखरोट और काजू ले सकते हैं। इनमें से कोई चीज न मिले तो उसके बदले में मिस्री मिला सकते हैं। केसर शुद्ध 3 ग्राम ही डालने से काम चल जायेगा, अधिक की आवश्यकता नहीं है।
5. हवन करते समय माला रखने की आवश्यकता एक सौ आठ की संख्या गिनने भर के लिये है। माला रखने में असुविधा हो तो गेहूँ, जौ या चावल आदि के 108 दाने रखकर उनसे गिनती की जा सकती है। करमाला का उपयोग भी कर सकते हैं।
6. बैठने के लिये आसन ऊन का अथवा कुशा का होना चाहिये।
7. मन्त्र सिद्ध करने के लिये यदि लंकाकाण्ड की चौपाई या दोहा हो तो उसका हवन शनिवार को करना चाहिये। दूसरे काण्डों के चौपाई–दोहे किसी भी दिन उपयुक्त मुहूर्त में हवन करके सिद्ध किये जा सकते हैं।
8. एक दिन हवन करने से ही मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इसके बाद जब तक कार्य सफल न हो, तब तक उस मन्त्र (चौपाई–दोहे आदि) का प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ बार प्रातःकाल या रात्रि को, जब सुविधा हो, जप करते रहना चाहिये, अधिक कर सकें तो अधिक उत्तम। आप चाहें तो नियमित जप के अलावा भी दिनभर चलते–फिरते हुए उस चौपाई या दोहे का जप कर सकते हैं। जितना अधिक जप हो, उतना ही उत्तम है।
9. कोई दो तीन कार्यों के लिये दो तीन मन्त्रों का अनुष्ठान एक साथ करना चाहें तो कर सकते हैं, पर उन मन्त्रों को पहले अलग–अलग हवन करके सिद्ध कर लेना चाहिये। हवन के द्वारा एक ही दिन में दो या तीन मंत्रों को सिद्ध कर सकते हैं।
10. स्त्रियाँ भी इस अनुष्ठान को कर सकती हैं, परन्तु रजस्वला होने की स्थिति में जप नहीं करना चाहिये। इस अवस्था में हवन भी नहीं करना चाहिये।
11. जप करते समय मन में यह विश्वास अवश्य रखना चाहिये कि भगवान श्रीसीताराम की अहैतुकी कृपा से मेरा कार्य अवश्य सफल होगा। विश्वासपूर्वक जप करने पर सफलता निश्चित रूप से प्राप्त होगी।

12. अधिकांश मंत्र तथा उपर्युक्त नियम कल्याण के मासिक अंकों से लिए गए हैं।

13. जप करते समय यदि निम्नांकित बिन्दुओं का पालन करें तो सफलता शीघ्रता से प्राप्त होगी :

(क) जप सूर्योदय से पूर्व करें।

(ख) पूर्व की ओर अथवा वाराणसी की ओर मुँह करके जप करें।

(ग) ऊन के आसन पर बैठें।

(घ) अपने सामने श्रीरामदरबार का चित्र रखें। एक लोटा जल अपने बाईं ओर रखें जिसे जप के पश्चात किसी पौधे में डाल दें या सूर्य को अर्घ्य दें।

(ङ) अपने दाईं ओर घी का दीपक जला कर रखें।

विभिन्न कामनाओं की प्राप्ति हेतु मानस के कुछ सिद्ध मंत्र इस प्रकार हैं –

1. **असमंजस की स्थिति में परम कल्याण हेतु**

जेहि बिधि नाथ होइ हित मोरा। करहु सो बेगि दास मैं तोरा।। (1/131/7)

2. **शरणागत होकर संकट निवारणार्थ**

मोरें हित हरि सम नहिं कोऊ। एहि अवसर सहाय सोइ होऊ।। (1/131/2)

3. **सर्व मंगल कामना हेतु**

मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवउ सो दसरथ अजिर बिहारी।। (1/111/4)

4. **श्रेष्ठ भक्ति की कामना**

अब कछु नाथ न चाहिअ मोरें। दीन दयाल अनुग्रह तोरें।। (2/101/7)

5. **मानस का गायत्री मन्त्र**

जनकसुता जग जननि जानकी। अतिसय प्रिय करुनानिधान की।।
ताके जुग पद कमल मनावउँ। जासु कृपाँ निरमल मति पावउँ।। (1/17/7–8)

6. **संकट नाश के लिए**

दीन दयाल बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी।। (5/26/4)

7. **जीविका प्राप्ति के लिए**

बिस्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई।। (1/196/7)

8. लक्ष्मी प्राप्ति हेतु

जिमि सरिता सागर महुँ जाहीं। जद्यपि ताहि कामना नाहीं।।
तिमि सुख संपति बिनहिं बोलाएँ। धरम सील पहिं जाहिं सुभाएँ।। (1/293/2–3)

9. शत्रुता नाश के लिए

बयरु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप विषमता खोई।। (7/19/8)

10. यात्रा की सफलता के लिए

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदयँ राखि कोसलपुर राजा।। (5/4/1)

11. परीक्षा में पास होने के लिए

जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी। कवि उर अजिर नचावहिं बानी।। (1/104/6)
मोरि सुधारिहि सो सब भाँती। जासु कृपा नहि कृपाँ अघाती।। (1/27/3)

12. विद्या प्राप्ति के लिए

गुरुगृहँ गए पढ़न रघुराई। अलप काल विद्या सब आई।। (1/203/4)

13. प्रेम बढ़ाने के लिए

सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।। (7/20/2)

14. विविध रोगों एवं उपद्रवों की शांति के लिए

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा।। (7/20/1)

15. ईश्वर से अपराध क्षमा कराने के लिए

अनुचित बहुत कहेउँ अग्याता। छमहु छमामंदिर दोउ भ्राता।। (1/284/6)

16. मन पसन्द वर की प्राप्ति हेतु

सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी।। (1/235/7)

17. मन पसन्द वधू की प्राप्ति हेतु

सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। रामु लखनु सुनि भए सुखारे।। (1/236/4)

18. अपने इष्ट की प्राप्ति हेतु

जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू।। (1/258/6)

19. विपत्ति नाश हेतु

राजिवनयन धरें धनु सायक। भगत बिपति भंजन सुख दायक।। (1/17/10)

20. भूत-प्रेत भगाने हेतु

प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यानघन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर।। (1/17)

21. दरिद्रता नाश के लिए

अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के। कामद घन दारिद दबारि के।। (1/31/8)

22. सन्तान प्राप्ति के लिए

दसरथ पुत्रजन्म सुनि काना। मानहुँ ब्रह्मानंद समाना।। (1/192/3)
प्रेम मगन कौसल्या, निसि दिन जात न जान।
सुत सनेह बस माता बालचरित कर गान।। (1/200)

23. सुख सम्पत्ति प्राप्ति हेतु

जे सकाम नर सुनहि जे गावहिं। सुख सम्पति नाना विधि पावहिं।। (7/14/3)

24. मुकदमा जीतने के लिए

पवन तनय बल पवन समाना। बुधि बिबेक बिग्यान निधाना।। (4/29/4)

25. शत्रु को मित्र बनाने हेतु

गरल सुधा रिपु करहिं मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई।। (5/4/2)

26. निन्दा निवृत्ति के लिए

रामकृपाँ अवरेब सुधारी। बिबुध धारि भइ गुनद गोहारी।। (2/316/3)

27. विघ्न विनाश के लिए

सकल विघ्न ब्यापहिं नहिं तेही। राम सुकृपाँ बिलोकहिं जेही।। (1/38/5)

28. अकाल मृत्यु के निवारण के लिए

नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट।। (5/30)

29. नजर झाड़ने के लिए

स्याम गौर सुंदर दोउ जोरी। निरखहिं छबि जननीं तृन तोरी।। (1/117/5)

30. खोयी हुई चीज पुनः प्राप्त करने के लिए

गई बहोर गरीब नेवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू।। (1/12/7)

31. ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त करने के लिए

साधक नाम जपहिं लय लाएँ। होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएँ।। (1/21/4)

32. उत्सव के अवसर प्राप्त करने के लिए

सिय रघुबीर बिबाहु जे सप्रेम गावहिं सुनहिं।
तिन्ह कहुँ सदा उछाहु मंगलायतन राम जसु।। (1/361)

33. संकट के समय रक्षा के लिए

मोरें हित हरि सम नहिं कोऊ। एहि अवसर सहाय सोइ होऊ।। (1/131/2)

34. विरक्ति तथा श्रीसीताराम चरणों में प्रेम प्राप्ति के लिए

भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं।
सीय राम पद पेमु अवसि होइ भव रस बिरति।। (2/326)

35. ज्ञान प्राप्ति के लिए

छिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित अति अधम सरीरा।। (4/10/4)

36. भक्ति की प्राप्ति के लिए

भगत कल्पतरु प्रनत हित कृपा सिंधु सुख धाम।
सोइ निज भगति मोहि प्रभु देहु दया करि राम।। (7/84 ख)

37. श्रीहनुमानजी को प्रसन्न करने के लिए

सुमिरि पवनसुत पावन नामू। अपने बस करि राखे रामू।। (1/25/6)

38. श्रीसीतारामजी के दर्शन के लिए

नील सरोरुह नील मनि नील नीरधर स्याम।
लाजहिं तन सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम।। (1/146)

39. सहज स्वरूप दर्शन के लिए

भगत बछल प्रभु कृपानिधाना। बिस्वबास प्रगटे भगवाना।। (1/145/8)

40. भगवत्स्मरण करते हुए आराम से शरीर त्याग करने के लिए

राम चरन दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग।
सुमन माल जिमि कंठ ते गिरत न जानइ नाग।। (4/10)

41. संशय निवृत्ति के लिए

रामकथा सुंदर कर तारी। संसय बिहग उड़ावनिहारी।। (1/113/1)

42. प्रभु-प्रेम में निरन्तर वृद्धि के लिए

सीता राम चरन रति मोरें। अनुदिन बढ़उ अनुग्रह तोरें।। (1/204/2)

श्रीरामशलाका-प्रश्नावली

मानसानुरागी महानुभावों को श्रीरामशलाका–प्रश्नावली का विशेष परिचय देने की कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती, उसकी महत्ता एवं उपयोगिता से प्रायः सभी मानस प्रेमी परिचित होंगे। अतः नीचे उसका स्वरूपमात्र अंकित करके उससे प्रश्नोत्तर निकालने की विधि तथा उसके उत्तर–फलों का उल्लेख कर दिया जाता हैं। श्रीरामशलाका–प्रश्नावली का स्वरूप इस प्रकार है–

सु	प्र	उ	बि	हो	मु	ग	व	सु	नु	बि	घ	धि	इ	द
र	रु	फ	सि	सि	रे	बस	है	मं	ल	न	ल	य	न	अं
सुज	सो	ग	सु	कु	म	स	ग	त	न	ई	ल	धा	बे	नो
त्य	र	न	कु	जो	म	रि	र	र	अ	की	हो	सं	रा	य
पु	सु	थ	सी	जे	इ	ग	म*	सं	क	रे	हो	स	स	नि
त	र	त	र	स	इ	ह	ब	ब	प	चि	स	य	स	तु
म	का	ा	र	र	मा	मि	मी	म्हा	ा	जा	हू	हीं	ा	जू
ता	रा	रे	री	ह्र	का	फ	खा	जि	ई	र	रा	पू	द	ल
नि	को	मि	गो	न	म	ज	य	ने	मनि	क	ज	प	स	ल
हि	रा	म	स	रि	ग	द	न	ष	म	खि	जि	मनि	त	जं
सिं	मु	न	न	कौ	मि	ज	र	ग	धु	ख	सु	का	स	र
गु	क	म	अ	ध	नि	म	ल	ा	न	ढ़	ती	न	रि	भ
ना	पु	व	अ	ढा	र	ल	का	ए	तु	र	न	नु	व	थ
सि	ह	सु	म्ह	रा	र	स	हिं	र	त	न	ष	ा	ज	ा
र	सा	ा	ला	धी	ा	री	जा	हू	हीं	षा	जू	ई	रा	रे

इस रामशलाका–प्रश्नावली के द्वारा जिस किसी को जब कभी अपने अभीष्ट प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने की इच्छा हो तो सर्वप्रथम उस व्यक्ति को भगवान् श्रीरामचन्द्र जी का ध्यान करना चाहिये।

तदनन्तर श्रद्धा–विश्वास पूर्वक मन से अभीष्ट प्रश्न का चिन्तन करते हुए प्रश्नावली के मनचाहे कोष्ठक में अंगुली या कोई शलाका रख देना चाहिये और उस कोष्ठक में जो अक्षर हो उसे अलग किसी कोरे कागज या स्लेट पर लिख लेना चाहिये। प्रश्नावली के कोष्ठक पर भी ऐसा कोई निशान लगा देना चाहिये जिससे न तो प्रश्नावली गंदी हो और न प्रश्नोत्तर प्राप्त होने तक वह कोष्ठक भूल जाये। अब जिस कोष्ठक का अक्षर लिख लिया गया है, उससे आगे बढ़ना चाहिये तथा उसके नवें कोष्ठक में जो अक्षर पड़े, उसे भी लिख लेना चाहिये। इस प्रकार प्रति नवें अक्षर को क्रम से लिखते जाना चाहिये और तब तक लिखते जाना चाहिये, जब तक उसी पहले कोष्ठक के अक्षर तक अंगुली अथवा शलाका न पहुँच जाये। पहले कोष्ठक का अक्षर जिस कोष्ठक के अक्षर से नवाँ पड़ेगा, वहाँ तक पहुँचते–पहुँचते एक चौपाई पूरी हो जायेगी, ये प्रश्नकर्ता के अभीष्ट प्रश्न का उत्तर होगा। यहाँ इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि किसी–किसी कोष्ठक में केवल 'आ' की मात्रा (ा) और किसी–किसी कोष्ठक में दो–दो अक्षर हैं। अतः गिनते समय न तो मात्रा वाले कोष्ठक को छोड़ देना चाहिये और न दो अक्षरों वाले कोष्ठक को दो बार गिनना चाहिये। जहाँ मात्रा का कोष्ठक आवे, वहाँ पूर्वलिखित अक्षर के आगे मात्रा लिख लेना चाहिये और जहाँ दो अक्षरों वाला कोष्ठक आवे, वहाँ दोनों अक्षर एक साथ लिख लेना चाहिये।

अब उदाहरण के तौर पर इस रामशलाका प्रश्नावली से किसी प्रश्न के उत्तर में एक चौपाई निकाल दी जाती है। पाठक ध्यान से देखें। किसी ने भगवान् श्रीरामचन्द्र जी का ध्यान और अपने प्रश्न का चिन्तन करते हुए यदि प्रश्नावली के * इस चिह्न से संयुक्त 'म' वाले कोष्ठक में अँगुली या शलाका रक्खा और वह ऊपर बताये क्रम के अनुसार अक्षरों को गिन–गिनकर लिखता गया तो उत्तर स्वरूप चौपाई बन जायेगी–

हो इ है सो ई जो रा म * र चि रा खा । को क रि त र क ब ढ़ा व हिं सा षा ।।

यह चौपाई बालकाण्डान्र्तगत शिव और पार्वती के संवाद में है। प्रश्नकर्ता को इस उत्तर स्वरूप चौपाई से यह आशय निकालना चाहिये कि कार्य होने में संदेह है, अतः उसे भगवान् पर छोड़ देना श्रेयष्कर है।

1. सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजहि मन कामना तुम्हारी।।

स्थान– यह चौपाई बालकाण्ड में श्री सीताजी के गौरीपूजन के प्रसंग में है। गौरी जी ने श्रीसीता जी को आशीर्वाद दिया है।

फल– प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है, कार्य सिद्ध होगा।

2. प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदय राखि कोसलपुर राजा।।

स्थान– यह चौपाई सुन्दरकाण्ड में हनुमान जी के लंका में प्रवेश करने के समय की है।

फल– भगवान का स्मरण करके कार्यारम्भ करो, सफलता मिलेगी।

3. उघरें अंत न होई निबाहू। कालनेमि जिमि रावन राहू।।

स्थान– यह चौपाई बालकाण्ड के आरम्भ में सत्संग वर्णन के प्रसंग में है।

फल– इस कार्य में भलाई नहीं है। कार्य की सफलता में संदेह है।

4. बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं। फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं।।

स्थान– यह चौपाई भी बालकाण्ड के आरम्भ में ही सत्संग वर्णन के प्रसंग की है।

फल– खोटे मनुष्यों का संग छोड़ दो। कार्य पूर्ण होने में संदेह है।

5. मुद मंगलमय संत समाजू। जिमि जग जंगम तीरथ राजू।।

स्थान– यह चौपाई बालकाण्ड में संत–समाज रूपी तीर्थ के वर्णन में है।

फल– प्रश्न उत्तम है। कार्य सिद्ध होगा।

6. गरल सुधा रिपु करहिं मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई।।

स्थान– यह चौपाई श्रीहनुमान जी के लंका में प्रवेश करने के समय की है।

फल– प्रश्न बहुत श्रेष्ठ है। कार्य सफल होगा।

7. बरुन कुबेर सुरेस समीरा। रन सनमुख धारि काहुँ न धीरा।।

स्थान– यह चौपाई लंकाकाण्ड में रावण की मृत्यु के पश्चात् मन्दोदरी के विलाप के प्रसंग में है।

फल– कार्य पूर्ण होने में संदेह है।

8. सफुल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। रामु लखनु सुनि भए सुखारे।।

स्थान– यह चौपाई बालकाण्ड में पुष्प वाटिका से पुष्प लाने पर विश्वामित्र जी का आशीर्वाद है।

फल– प्रश्न बहुत उत्तम है। कार्य सिद्ध होगा।

इस प्रकार रामशलाका–प्रश्नावली से कुल नौ चौपाइयाँ बनती हैं; जिनमें सभी प्रकार के प्रश्नों के उत्तराशय संन्निहित हैं।

विक्रम संवत् 2073 वर्ष की प्रमुख तिथियाँ - एक दृष्टि में

मास/पक्ष	गणेश चतुर्थी	एकादशी (स्मार्त)	प्रदोष	मास शिवरात्रि	अमावस्या	पूर्णिमा	सत्य0 व्रत	संक्रान्ति
चैत्र शुक्ल	—	17.04.16	19.04.16	—	—	22.04.16	21.04.16	—
वैशाख कृष्ण	25.04.16	03.05.16	04.05.16	05.05.16	06.05.16	—	—	—
वैशाख शुक्ल	—	17.05.16	19.05.16	—	—	21.05.16	21.05.16	13.04.16
ज्येष्ठ कृष्ण	25.05.16	01.06.16	02.06.16	03.06.16	05.06.16	—	—	—
ज्येष्ठ शुक्ल	—	16.06.16	17.06.16	—	—	20.06.16	19.06.16	14.05.16
आषाढ़ कृष्ण	23.06.16	30.06.16	02.07.16	02.07.16	04.07.16	—	—	—
आषाढ़ शुक्ल	—	15.07.16	17.07.16	—	—	19.07.16	19.07.16	14.06.16
श्रावण कृष्ण	23.07.16	30.07.16	31.07.16	01.08.16	02.08.16	—	—	—
श्रावण शुक्ल	—	14.08.16	15.08.16	—	—	18.08.16	17.08.16	16.07.16
भाद्रपद कृष्ण	21.08.16	28.08.16	29.08.16	30.08.16	01.09.16	—	—	—
भाद्रपद शुक्ल	—	13.09.16	14.09.16	—	—	16.09.16	16.09.16	16.08.16
आश्विन कृष्ण	19.09.16	26.09.16	28.09.16	29.09.16	30.09.16	—	—	—
आश्विन शुक्ल	—	12.09.16	13.10.16	—	—	16.10.16	15.10.16	16.09.16
कार्तिक कृष्ण	19.10.16	26.09.16	28.10.16	28.10.16	30.10.16	—	—	—
कार्तिक शुक्ल	—	10.11.16	12.11.16	—	—	14.11.16	14.11.16	17.10.16
मार्गशीर्ष कृष्ण	17.11.16	24.11.16	26.11.16	27.11.16	29.11.16	—	—	—
मार्गशीर्ष शुक्ल	—	10.12.16	11.12.16	—	—	13.12.16	13.12.16	15.11.16
पौष कृष्ण	17.12.16	24.12.16	26.12.16	27.12.16	29.12.16	—	—	—
पौष शुक्ल	—	08.01.17	10.01.17	—	—	12.01.17	11.01.17	15.12.16
माघ कृष्ण	15.01.17	23.01.17	25.01.17	26.01.17	27.01.17	—	—	—
माघ शुक्ल	—	07.02.17	08.02.17	—	—	10.02.17	10.02.17	14.01.17
फाल्गुन कृष्ण	14.02.17	22.02.17	24.02.17	24.02.17	26.02.17	—	—	—
फाल्गुन शुक्ल	—	08.03.17	10.03.17	—	—	12.03.17	12.03.17	12.02.17
चैत्र कृष्ण	16.03.17	24.03.17	25.03.17	26.03.17	28.03.17	—	—	14.03.17

विक्रमी संवत् 2073 के व्रत, पर्व त्यौहारों की सूची

शुभ संवत् 2073, शाके 1938, राजा शुक्र, मन्त्री बुध, समय वास कुम्भकार के घर में, वाहन मेंढ़क, रोहिणी का निवास पर्वत पर, संवत्सर का नाम सौम्य

08 से 22 अप्रैल 2016 तक (चैत्र शुक्ल पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	शुक्रवार	8.4.2016	विक्रमी संवत् 2073 आरम्भ, नवरात्र प्रारम्भ, कलश स्थापन, पंचक समाप्त 23.22
द्वितीया / तृती॰	शनिवार	9.4.2016	गणगौरी तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती, तृतीय तिथि क्षय
चतुर्थी	रविवार	10.4.2016	दमन चतुर्थी
पंचमी	सोमवार	11.4.2016	श्री (लक्ष्मी) पंचमी, नाग पंचमी
षष्ठी	मंगलवार	12.4.2016	स्कन्दषष्ठी व्रत
सप्तमी	बुधवार	13.4.2016	वैशाख संक्रांति
अष्टमी	गुरुवार	14.4.2016	श्री दुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति
नवमी	शुक्रवार	15.4.2016	श्रीरामनवमी, नवरात्र समाप्त
दशमी	शनिवार	16.4.2016	नवरात्र–पारण
एकादशी	रविवार	17.4.2016	कामदा एकादशी व्रत
द्वादशी	सोमवार	18.4.2016	श्री विष्णु दमनोत्सव
त्रयोदशी	मंगलवार	19.4.2016	भौम प्रदोष व्रत, महावीर जयन्ती (जैन), अनंग त्रयोदशी
चतुर्दशी	बुधवार	20.4.2016	श्रीशिव–दमनोत्सव, अगस्त्यास्त
चतुर्दशी	गुरुवार	21.4.2016	सत्यनारायण व्रत
पूर्णिमा	शुक्रवार	22.4.2016	चैत्र पूर्णिमा स्नानदानादि, हनुमान जयन्ती

23 अप्रैल से 6 मई 2016 तक (वैशाख कृष्ण पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
तृतीया	सोमवार	25.4.2016	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत
चतुर्थी	मंगलवार	26.4.2016	सती अनुसूया जयंती
नवमी	रविवार	1.5.2016	पंचक प्रारम्भ 9.37 से, मई मास प्रारम्भ
दशमी	सोमवार	2.5.2016	शुक्र अस्त
एकादशी	मंगलवार	3.5.2016	वरूथिनी एकादशी व्रत, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती
द्वादशी	बुधवार	4.5.2016	प्रदोष व्रत
त्रयोदशी / चतु॰	गुरुवार	5.5.2016	मास शिवरात्रि, पंचक समाप्त 13.17, चतुर्दशी तिथि का क्षय
अमावस्या	शुक्रवार	6.5.2016	वैशाख अमावस्या (स्नानदानादि)

7 से 21 मई 2016 तक (वैशाख शुक्ल पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	शनिवार	7.5.2016	वैशाख शुक्ल पक्षारम्भ, श्री टैगोर जयंती
द्वितीया	रविवार	8.5.2016	चन्द्रदर्शन, श्री परशुराम जयन्ती, वीर शिवाजी जयन्ती
तृतीया	सोमवार	9.5.2016	अक्षय तृतीया
पंचमी	बुधवार	11.5.2016	आद्यगुरु शंकराचार्य जयन्ती
षष्ठी	गुरुवार	12.5.2016	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती, श्रीगंगा जयंती, सूरदास जयन्ती
अष्टमी	शनिवार	14.5.2016	ज्येष्ठ संक्रान्ति
नवमी	रविवार	15.5.2016	श्री सीता नवमी
एकादशी	मंगलवार	17.5.2016	मोहिनी एकादशी व्रत
त्रयोदशी	गुरुवार	19.5.2016	प्रदोष व्रत
चतुर्दशी	शुक्रवार	20.5.2016	श्री नृसिंह जयन्ती
पूर्णिमा	शनिवार	21.5.2016	वैशाख स्नान पूर्ण, बुद्ध पूर्णिमा, सत्यनारायण व्रत,

22 मई से 5 जून 2016 तक (ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष)			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत पर्व त्योहार**
द्वितीया	सोमवार	23.5.2016	देवर्षि नारद जयन्ती, वीणादान
तृतीया	बुधवार	25.5.2016	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
षष्ठी	शनिवार	28.5.2016	पंचक प्रारम्भ 15.56
सप्तमी/अष्ट॰	रविवार	29.5.2016	कालाष्टमी, अष्टमी तिथि का क्षय
एकादशी	बुधवार	1.6.2016	अपरा एकादशी व्रत, भद्रकाली एकादशी, पंचक समाप्त 22.38
द्वादशी	गुरुवार	2.6.2016	प्रदोष व्रत
त्रयोदशी	शुक्रवार	3.6.2016	वटसावित्री व्रत प्रारम्भ
चतुर्दशी	शनिवार	4.6.2016	शनैश्चर जयंती, अमावस्या (पितृकार्येषु)
अमा॰/प्रति॰	रविवार	5.6.2016	ज्येष्ठ अमावस्या, भावुका अमा॰, श्रीगंगा स्नान प्रा॰, वटसावित्री व्रत पूजन, ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा का क्षय

06 से 20 जून 2016 तक (ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष)			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत पर्व त्योहार**
द्वितीया	सोमवार	6.6.2016	चन्द्रदर्शन
तृतीया	मंगलवार	7.6.2016	रम्भा तृतीया व्रत
चतुर्थी	बुधवार	8.6.2016	उमा अवतार
षष्ठी	शुक्रवार	10.6.2016	विन्ध्यवासिनी पूजा, अरण्य षष्ठी
अष्टमी	रविवार	12.6.2016	श्री दुर्गाष्टमी, धूमावती जय॰, मेला क्षीर भवानी
नवमी	सोमवार	13.6.2016	उमा ब्राह्मणी व्रत
दशमी	मंगलवार	14.6.2016	आषाढ़ संक्रांति पुण्यकाल, गंगा दशहरा
एकादशी	गुरुवार	16.6.2016	निर्जला एकादशी व्रत
द्वादशी	शुक्रवार	17.6.2016	प्रदोष व्रत, वटसावित्री व्रतारम्भ, चम्पक द्वादशी
त्रयोदशी	शनिवार	18.6.2016	सायन दक्षिणायन प्रारम्भ, वर्षा ऋतु प्रारम्भ
चतुर्दशी	रविवार	19.6.2016	श्री सत्यनारायण व्रत, फादर्स डे
पूर्णिमा	सोमवार	20.6.2016	ज्येष्ठ पूर्णिमा, संतकबीर जय॰, वटसावित्री व्रत पूर्ण

21 जून से 04 जुलाई 2016 तक (आषाढ़ कृष्ण पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
तृतीया	गुरुवार	23.6.2016	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
चतुर्थी	शुक्रवार	24.6.2016	पंचक प्रारम्भ 21.22
षष्ठी	रविवार	26.6.2016	अहिल्या बाई होल्कर जयंती
नवमी	बुधवार	29.6.2016	पंचक समाप्त 05.37
दशमी / एका॰	गुरुवार	30.6.2016	योगिनी एकादशी व्रत (स्मार्त)
द्वादशी	शुक्रवार	1.7.2016	योगिनी एकादशी व्रत (वैष्णव)
त्रयोदशी	शनिवार	2.7.2016	शनि प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत
चतुर्दशी	रविवार	3.7.2016	तीर्थ स्नान माहात्म्य
अमावस्या	सोमवार	4.7.2016	आषाढ़ी अमावस्या, सोमवती अमावस्या

5 से 19 जुलाई 2016 तक (आषाढ़ शुक्ल पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	मंगलवार	5.7.2016	गुप्त नवरात्र प्रारम्भ
द्वितीया	बुधवार	6.7.2016	रथ यात्रा (श्री जगन्नाथपुरी)
पंचमी	शनिवार	9.7.2016	द्वारिकाधीश पाटोत्सव (कांकरोली)
षष्ठी	रविवार	10.7.2016	स्कंद पूजा
सप्तमी	सोमवार	11.7.2016	विवस्वत सप्तमी
अष्टमी	मंगलवार	12.7.2016	श्रीदुर्गाष्टमी
नवमी	बुधवार	13.7.2016	भड्डलीनवमी, गुप्तनवरात्र समा॰, मेला शरीक भवानी
दशमी	गुरुवार	14.7.2016	रथ वापसी (पुरी)
एकादशी	शुक्रवार	15.7.2016	हरिशयनी एकादशी व्रत, चातुर्मास्य व्रत
द्वादशी	शनिवार	16.7.2016	श्रावण संक्रांति
त्रयोदशी	रविवार	17.7.2016	प्रदोष व्रत
चतुर्दशी	सोमवार	18.7.2016	अम्बिका व्रत
पूर्णिमा	मंगलवार	19.7.2016	आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पू॰, व्यास पूजा, कोकिला व्रत

20 जुलाई से 2 अगस्त 2016 तक (श्रावण कृष्ण पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
द्वितीया	गुरुवार	21.7.2016	पंचक प्रारम्भ 27.39 से, अशून्यशयन व्रत
चतुर्थी	शनिवार	23.7.2016	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत
पंचमी	रविवार	24.7.2016	नागपंचमी (राज. व बंगाल)
षष्ठी	सोमवार	25.7.2016	सोमवार व्रत प्रारम्भ
सप्तमी	मंगलवार	26.7.2016	पंचक समाप्त 11.05
नवमी	गुरुवार	28.7.2016	शीतला सप्तमी, मंगला गौरी व्रत प्रारम्भ
एकादशी	शनिवार	30.7.2016	कामिका एकादशी व्रत
द्वादशी / त्रयो॰	रविवार	31.7.2016	प्रदोष व्रत, त्रयोदशी तिथि का क्षय
चतुर्दशी	सोमवार	1.8.2016	मास शिवरात्रि व्रत, लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव
अमावस्या	मंगलवार	2.8.2016	हरियाली भौमवती अमावस्या

3 से 18 अगस्त 2016 तक (श्रावण शुक्ल पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	बुधवार	3.8.2016	श्रावण शुक्ल पक्षारम्भ, मेला छिन्नमस्तिका
द्वितीया	गुरुवार	4.8.2016	चन्द्र दर्शन
तृतीया	शुक्रवार	5.8.2016	हरियाली तीज, मधुश्रवा तीज, सिंधारा तीज
चतुर्थी	शनिवार	6.8.2016	वरद चतुर्थी
पंचमी	रविवार	7.8.2016	नाग पंचमी
पंचमी	सोमवार	8.8.2016	कल्कि जयन्ती, पंचमी की वृद्धि
सप्तमी	बुधवार	10.8.2016	गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती
अष्टमी	गुरुवार	11.8.2016	दुर्गाष्टमी
एकादशी	रविवार	14.8.2016	पवित्रा एकादशी व्रत
द्वादशी	सोमवार	15.8.2016	प्रदोष व्रत, भारत स्वतंत्रता दिवस
त्रयोदशी	मंगलवार	16.8.2016	भाद्रपद संक्रांति
चतुर्दशी	बुधवार	17.8.2016	श्री सत्यनारायण व्रत
पूर्णिमा	गुरुवार	18.8.2016	श्रावण पूर्णिमा, रक्षा बन्धन, पंचक प्रारम्भ 11.48 से

19 अगस्त से 01 सितम्बर 2016 तक (भाद्रपद कृष्ण पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
द्वितीया	शनिवार	20.8.2016	कज्जली तृतीया
तृतीया / चतु॰	रविवार	21.8.2016	श्रीगणेश बहुला चतुर्थी, चतुर्थी तिथि का क्षय
पंचमी	सोमवार	22.8.2016	पंचक समाप्त 16.57
षष्ठी	मंगलवार	23.8.2016	चन्दन षष्ठी व्रत
सप्तमी	बुधवार	24.8.2016	शीतला सप्तमी, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (स्मार्त)
अष्टमी	गुरुवार	25.8.2016	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णव)
नवमी	शुक्रवार	26.8.2016	गोगा नवमी, नन्दोत्सव
एकादशी	रविवार	28.8.2016	अजा एकादशी व्रत
द्वादशी	सोमवार	29.8.2016	वत्स द्वादशी (पूजा) सोम प्रदोष व्रत
अमावस्या	गुरुवार	1.9.2016	भाद्रपद अमावस्या

02 से 16 सितम्बर 2016 तक (भाद्रपद शुक्ल पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
द्वितीया	शनिवार	3.9.2016	चन्द्र दर्शन
तृतीया	रविवार	4.9.2016	हरितालिका तीज, गौरी तृतीया, श्री वराह जयन्ती
चतुर्थी	सोमवार	5.9.2016	सिद्धि विनायक व्रत, गणेश जन्मोत्सव
पंचमी	मंगलवार	6.9.2016	ऋषि पंचमी पर्व, सम्वत्सरी महापर्व (जैन)
षष्ठी	बुधवार	7.9.2016	सूर्य षष्ठी व्रत
सप्तमी	गुरुवार	8.9.2016	श्रीमहालक्ष्मी व्रत
अष्टमी	शुक्रवार	9.9.2016	श्रीराधा अष्टमी
अष्टमी	शनिवार	10.9.2016	श्रीचन्द नवमी
एकादशी	मंगलवार	13.9.2016	पद्मा एकादशी व्रत, वामन जयन्ती
द्वादशी / त्रयो॰	बुधवार	14.9.2016	पंचक प्रारम्भ 21.38, प्रदोष व्रत
चतुर्दशी	गुरुवार	15.9.2016	अनन्त चतुर्दशी व्रत, कदली व्रत
पूर्णिमा	शुक्रवार	16.9.2016	महालय श्राद्ध प्रा॰, भाद्रपद पूर्णिमा, प्रोष्ठपदी पूर्णिमा का श्राद्ध, श्री सत्यनारायण व्रत

17 से 30 सितम्बर 2016 तक (आश्विन कृष्ण पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	शनिवार	17.9.2016	महालय श्राद्ध (पितृपक्ष) प्रा॰, प्रतिपदा का श्राद्ध
द्वितीया	रविवार	18.9.2016	पंचक समाप्त 24.55, द्वितीया का श्राद्ध
तृतीया	सोमवार	19.9.2016	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, तृतीया का श्राद्ध
चतुर्थी	मंगलवार	20.9.2016	चतुर्थी एवं पंचमी का श्राद्ध
पंचमी	बुधवार	21.9.2016	चन्द्र षष्ठी व्रत, षष्ठी तिथि का श्राद्ध
षष्ठी / सप्त॰	गुरुवार	22.9.2016	सप्तमी का श्राद्ध
अष्टमी	शुक्रवार	23.9.2016	श्रीमहालक्ष्मी व्रत सम्पन्न, जीवित्पुत्रिका व्रत, अष्टमी का श्राद्ध
नवमी	शनिवार	24.9.2016	नवमी, सौभाग्यवतीनां श्राद्ध, मातृनवमी
दशमी	रविवार	25.9.2016	दशमी का श्राद्ध
एकादशी	सोमवार	26.9.2016	इन्दिरा एकादशी व्रत, एकादशी का श्राद्ध
द्वादशी	मंगलवार	27.9.2016	संन्यासीनां श्राद्ध, द्वादशी का श्राद्ध
त्रयोदशी	बुधवार	28.9.2016	प्रदोष व्रत, त्रयोदशी का श्राद्ध
चतुर्दशी	गुरुवार	29.9.2016	मास शिवरात्रि व्रत, चतुर्दशी का व घटना में मृतकों का श्राद्ध, देवी कात्यायनी जयन्ती
अमावस्या	शुक्रवार	30.9.2016	आश्विन (महालय) अमावस्या, सर्वपितृ श्राद्ध, पितृ विसर्जन

1 से 16 अक्टूबर 2016 तक (आश्विन शुक्ल पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	शनिवार	1.10.2016	शारदीय नवरात्र प्रा॰, कलश स्थापन, श्री दुर्गा पूजा
प्रतिपदा	रविवार	2.10.2016	चन्द्र दर्शन, महात्मा गाँधी व लाल बहादुर जयन्ती
तृतीया	मंगलवार	4.10.2016	सिन्दूर तृतीया
पंचमी	गुरुवार	6.10.2016	उपांग ललिता पंचमी व्रत
षष्ठी	शुक्रवार	7.10.2016	गुरु उदय
सप्तमी	शनिवार	8.10.2016	भद्रकाली अवतार
अष्टमी	रविवार	9.10.2016	दुर्गाष्टमी, महाअष्टमी, सरस्वती पूजन
नवमी	सोमवार	10.10.2016	महानवमी, नवरात्र समाप्त
दशमी	मंगलवार	11.10.2016	विजय दशमी, अपराजिता पूजन, सरस्वती विसर्जन
एकादशी	बुधवार	12.10.2016	पंचक प्रारम्भ 07.45
द्वादशी	गुरुवार	13.10.2016	प्रदोष व्रत, पद्नाभ द्वादशी
चतुर्दशी	शनिवार	15.10.2016	शरद पूर्णिमा व्रत, सत्यनारायण व्रत, कोजागरी व्रत
पूर्णिमा / प्रति॰	रविवार	16.10.2016	आश्विन पूर्णिमा, कार्तिक मास प्रारम्भ, पंचक समाप्त 11.13, कार्तिक संक्रांति, शरद पूर्णिमा, महर्षि बाल्मीकि जयंती

17 से 30 अक्टूबर 2016 तक (कार्तिक कृष्ण पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
द्वितीया	सोमवार	17.10.2016	कार्तिक संक्रांति
चतुर्थी	बुधवार	19.10.2016	करवा चौथ, चन्द्रोदय 20.47
षष्ठी	शुक्रवार	21.10.2016	स्कन्द षष्ठी
सप्तमी	शनिवार	22.10.2016	अहोई अष्टमी व्रत, दाम्पत्य अष्टमी
अष्टमी	रविवार	23.10.2016	राधा अष्टमी, कालाष्टमी
एकादशी	बुधवार	26.10.2016	रमा एकादशी व्रत, गोवत्स द्वादशी
द्वादशी	गुरुवार	27.10.2016	धन त्रयोदशी पर्व शुरू
त्रयोदशी	शुक्रवार	28.10.2016	प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी, श्री हनुमान जयन्ती
चतुर्दशी	शनिवार	29.10.2016	नरकचौदश, रूप चौदश, यमतर्पण, दीपदान
अमावस्या	रविवार	30.10.2016	कार्तिक अमावस्या, दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, दीपोत्सव

31 अक्टूबर से 14 नवम्बर 2016 तक (कार्तिक शुक्ल पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	सोमवार	31.10.2016	गोवर्धन पूजा, अन्नकूट पूजा
द्वितीया	मंगलवार	1.11.2016	भाई दूज, विश्वकर्मा पूजा
चतुर्थी	गुरुवार	3.11.2016	दूर्वा गणपति व्रत, नाग व्रत
पंचमी	शनिवार	5.11.2016	जया पंचमी, ज्ञान पंचमी
षष्ठी	रविवार	6.11.2016	सूर्य षष्ठी छठ (बिहार)
अष्टमी	मंगलवार	8.11.2016	पंचक प्रारम्भ 16.26 से, गोपाष्टमी
नवमी	बुधवार	9.11.2016	अक्षय नवमी, आरोग्य व्रत, कुष्मांड नवमी
दशमी	गुरुवार	10.11.2016	भीष्म पंचक प्रारम्भ, हरिप्रबोधिनी एका॰ व्रत (स्मार्त)
एकादशी/द्वाद॰	शुक्रवार	11.11.2016	चातुर्मास्य व्रत, तुलसी विवाह, देव प्रबोधिनी एकादशी व्रत (वैष्णव)
त्रयोदशी	शनिवार	12.11.2016	पंचक समाप्त 22.29, शनि प्रदोष व्रत
चतुर्दशी	रविवार	13.11.2016	बैकुण्ठ चतुर्दशी
पूर्णिमा	सोमवार	14.11.2016	कार्तिकी पूर्णिमा, गुरुनानक देव जय॰, सत्यनारायण व्रत, भीष्म पंचक समाप्त, गंगा स्नान,

15 से 29 नवम्बर 2016 तक (मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	मंगलवार	15.11.2016	मार्गशीर्ष संक्रांति
द्वितीया	बुधवार	16.11.2016	सौभाग्य सुन्दरी व्रत
तृतीया/चतु॰	गुरुवार	17.11.2016	गणेश चतुर्थी व्रत
अष्टमी	सोमवार	21.11.2016	काल भैरवाष्टमी
एकादशी	गुरुवार	24.11.2016	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स्मार्त)
एकादशी	शुक्रवार	25.11.2016	उत्पन्ना एकादशी व्रत (वैष्णव)
द्वादशी	शनिवार	26.11.2016	शनि प्रदोष व्रत
त्रयोदशी	रविवार	27.11.2016	मास शिवरात्रि व्रत, श्री बालाजी जयन्ती
चतुर्दशी	सोमवार	28.11.2016	देविका स्नान
अमावस्या	मंगलवार	29.11.2016	मार्गशीर्ष (भौमवती) अमावस्या

30 नवंबर से 13 दिसम्बर 2016 तक (मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
चतुर्थी	शनिवार	3.12.2016	विनायक चतुर्थी व्रत
पंचमी	रविवार	4.12.2014	नागपंचमी, श्रीपंचमी, श्रीराम विवाहोत्सव
षष्ठी	सोमवार	5.12.2016	पंचक प्रारम्भ 23.03 से, स्कन्द षष्ठी
सप्तमी	मंगलवार	6.12.2016	मित्र सप्तमी
अष्टमी	बुधवार	7.12.2016	श्रीदुर्गाष्टमी
नवमी	गुरुवार	8.12.2016	नन्दा नवमी
एकादशी	शनिवार	10.12.2016	मोक्षदा एकादशी व्रत, श्रीगीता जयंती, पंचक समाप्त 08.28 पर
द्वादशी	रविवार	11.12.2016	प्रदोष व्रत, अखण्ड द्वादशी
त्रयोदशी	सोमवार	12.12.2016	पिशाच मोचन श्राद्ध, शिव चतुर्दशी व्रत
चतुर्दशी/पूर्णि॰	मंगलवार	13.12.2015	मार्गशीर्ष पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत

14 से 29 दिसम्बर 2016 तक (पौष कृष्ण पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
द्वितीया	गुरुवार	15.12.2016	पोष संक्रांति
चतुर्थी	शनिवार	17.12.2016	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत
अष्टमी	बुधवार	21.12.2016	रूक्मिणी अष्टमी, अष्टका श्राद्ध
दशमी	शुक्रवार	23.12.2016	पार्श्वनाथ जयन्ती
एकादशी	शनिवार	24.12.2016	सफला एकादशी व्रत
द्वादशी	रविवार	25.12.2016	क्रिसमस डे
त्रयोदशी	सोमवार	26.12.2016	सोम प्रदोष व्रत
त्रयोदशी	मंगलवार	27.12.2016	मासि शिवरात्रि
चतुर्दशी	बुधवार	28.12.2016	अमावस्या (पितृकार्येषु)
अमावस्या	गुरुवार	29.12.2016	पौष अमावस्या (स्नानदानादि)

30 दिसंबर से 12 जनवरी 2017 तक (पौष शुक्ल पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
द्वितीया	शनिवार	31.12.2016	आरोग्य व्रत
तृतीया	रविवार	1.01.2017	पंचक प्रारम्भ 28.25 से
चतुर्थी	सोमवार	2.01.2017	श्री विनायक चतुर्थी
सप्तमी	गुरुवार	5.01.2017	श्री गुरुगोविन्द सिंह जयंती
अष्टमी	शुक्रवार	6.01.2017	पंचक समाप्त 15.44, श्रीदुर्गाष्टमी
दशमी / एका॰	रविवार	8.01.2017	पुत्रदा एकादशी व्रत (स्मार्त)
द्वादशी	सोमवार	9.01.2017	पुत्रदा एकादशी व्रत (वैष्णव)
त्रयोदशी	मंगलवार	10.01.2017	भौम प्रदोष व्रत
चतुर्दशी	बुधवार	11.01.2017	श्री सत्यनारायण व्रत, ईशान व्रत
पूर्णिमा	गुरुवार	12.01.2017	पौष पूर्णिमा (स्नानदानादि), माघ स्नान प्रारम्भ, शाकम्भी जयंती, स्वामी विवेकानन्द जयंती

13 से 27 जनवरी 2017 तक (माघ कृष्ण पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	शुक्रवार	13.01.2017	लोहडी पर्व
द्वितीया	शनिवार	14.01.2017	मकर संक्रांति व्रत
तृतीया	रविवार	15.01.2017	गणेश संकट चतुथी व्रत
पंचमी	मंगलवार	17.01.2017	सौभागय सुन्दरी व्रत, गौरी चतुर्थी
षष्ठी	बुधवार	18.01.2017	शीतला षष्ठी
सप्तमी	गुरुवार	19.01.2017	स्वामी रामानंदाचार्य जयंती
एकादशी	सोमवार	23.01.2017	षट्तिला एका॰ व्रत, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जयंती
द्वादशी	मंगलवार	24.01.2017	तिल द्वादशी
त्रयोदशी	बुधवार	25.01.2017	प्रदोष व्रत
चतुर्दशी	गुरुवार	26.01.2017	भारत गणतंत्र दिवस
अमावस्या	शुक्रवार	27.01.2017	मौनी अमावस्या, मेला हरिद्वार, प्रयागराज

28 जनवरी से 10 फरवरी 2016 तक (माघ शुक्ल पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	शनिवार	28.01.2017	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, गुप्त नवरात्र
द्वितीया	रविवार	29.01.2017	पंचक प्रारम्भ 10.50 से, बाबा श्रीलालदयाल जयंती,
तृतीया	सोमवार	30.01.2017	गौरी तृतीया व्रत
चतुर्थी	मंगलवार	31.01.2017	अंगारकी श्रीगणेश तिल चतुर्थी
पंचमी	बुधवार	1.02.2017	बसंत पंचमी, सरस्वती पूजन, वागेश्वरी जयंती
षष्ठी	गुरुवार	2.02.2017	पंचक समाप्त 21.10 तक
सप्तमी	शुक्रवार	3.02.2017	रथ–आरोग्य सप्तमी
अष्टमी	शनिवार	4.02.2017	भीष्माष्टमी, श्री दुर्गाष्टमी
एकादशी	मंगलवार	7.02.2017	जया एकादशी व्रत
द्वादशी	बुधवार	8.02.2017	भीष्म द्वादशी, प्रदोष व्रत,तिलद्वादशी, मेला जैसलमेर
चतुर्दशी/पूर्णि॰	शुक्रवार	10.02.2017	माघ पूर्णिमा, गुरु रविदास जयंती

11 से 26 फरवरी 2017 तक (फाल्गुन कृष्ण पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
चतुर्थी	मंगलवार	14.02.2017	अंगारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत
षष्ठी	शुक्रवार	17.02.2017	विशेष पूजन, महाकालेश्वर,उज्जैन
सप्तमी	शनिवार	18.02.2017	श्री नाथ उत्सव
अष्टमी	रविवार	19.02.2017	जानकी व्रत
नवमी	सोमवार	20.02.2017	रामदास नवमी
दशमी	मंगलवार	21.02.2017	महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती
एकादशी	बुधवार	22.02.2017	विजया एकादशी व्रत
त्रयोदशी	शुक्रवार	24.02.2017	प्रदोष व्रत, महाशिरात्रि व्रत
चतुर्दशी	शनिवार	25.02.2017	पंचक प्रारम्भ 19.12 से
अमावस्या	रविवार	26.02.2017	फाल्गुन अमावस्या, देव–पितृ कार्येषु

27 फरवरी से 12 मार्च 2016 तक (फाल्गुन शुक्ल पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
द्वितीया	मंगलवार	28.02.2017	श्रीरामकृष्ण परमहंस जयंती
तृतीया	बुधवार	1.03.2017	पंचक समाप्त 27.26
चतुर्थी	गुरुवार	2.03.2017	अविघ्नकर व्रत
पंचमी	शुक्रवार	3.03.2017	याज्ञवल्क्य जयंती
अष्टमी	रविवार	5.03.2017	होलाष्टक प्रारम्भ
एकादशी	बुधवार	8.03.2017	आमलकी एकादशी व्रत
द्वादशी	गुरुवार	9.03.2017	गोविन्द द्वादशी
त्रयोदशी	शुक्रवार	10.03.2017	प्रदोष व्रत
चतुर्दशी	शनिवार	11.03.2017	महेश्वर व्रत, वृषदान व्रत
पूर्णिमा	रविवार	12.03.2017	फाल्गुन पूर्णिमा, होलिका दहन

13 से 28 मार्च 2017 तक (चैत्र कृष्ण पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	सोमवार	13.03.2017	वसंतोत्सव
चतुर्थी	गुरुवार	16.03.2017	श्री गणेश चतुर्थी व्रत, श्री भगवान्नारायण जयंती
पंचमी	शुक्रवार	17.03.2017	श्रीरंग पंचमी, मेला नवचण्डी
षष्ठी	शनिवार	18.03.2017	एकनाथ षष्ठी
सप्तमी	रविवार	19.03.2017	शीतला सप्तमी
सप्तमी	सोमवार	20.03.2017	शीतला पूजन
अष्टमी	मंगलवार	21.03.2017	शीतलाष्टमी
एकादशी	शुक्रवार	24.03.2017	पंचक प्रारम्भ 28.50 से, पापमोचिनी एकादशी व्रत
द्वादशी	शनिवार	25.03.2017	शनि प्रदोष व्रत
त्रयोदशी	रविवार	26.03.2017	शुक्रास्त
चतुर्दशी	सोमवार	27.03.2017	अमावस्या (पितृकार्येषु)
अमावस्या	मंगलवार	28.03.2017	चैत्र अमावस्या (स्नानदानादि प्रातः 8.27 तक), विक्रमी सम्वत् 2073 पूर्ण, विक्रमी सम्वत् 2074 प्रारम्भ, नवरात्र प्रारम्भ, कलश–स्थापना

स्वयं सिद्ध मुहूर्त (अनपूछ मुहूर्त)

नीचे दिये गये साढ़े तीन मुहूर्त स्वयं सिद्ध माने जाते हैं, जिसमें पंचांग की शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं है –

1. चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, 2. वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तृतीया), 3. आश्विन शुक्ल दशमी (विजय दशमी), 4. (आधा) दीपावली का प्रदोष काल।

भारतवर्ष में इनके अतिरिक्त लोकाचार और देशाचार के अनुसार निम्नलिखित तिथियों को भी स्वयंसिद्ध मुहूर्त माना जाता है।

1. भड्डुली नवमी (आषाढ़ शुक्ल नवमी), 2. देवोत्थानी एकादशी (कार्तिक शुक्ल एकादशी), 3. वसन्त पंचमी (माघ शुक्ल पंचमी), 4. फुलेरा दूज (फाल्गुन शुक्ल द्वितीया)

इनमें (स्वयंसिद्ध मुहूर्तों में) किसी भी कार्य को करने के लिए पंचांग शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु विवाह आदि में तो पंचांग में दिये गये मुहूर्तों को ही स्वीकार करना श्रेयकर है।

मामभिरक्षय रघुकुल नायक

सर्वदा राम एवास्तु मे रक्षकः रामचन्द्रं प्रभुं सर्वदाहं भजे।

नास्ति रामेण तुल्यो दयालुः परः सर्व दैवास्तु रामाय भूयो नमः ॥1॥

भगवान श्रीराम सर्वदा मेरी रक्षा करें और मैं हमेशा प्रभुराम का भजन करूं। श्रीराम के समान कोई अन्य दयालु नहीं है। पुनः पुनः श्रीराम को मेरा प्रणाम (स्वीकार) हो।

नास्ति रामात् परं तत्व मन्यत् क्वचित् सर्वदैवास्मि रामस्य दासानुगः।

सर्वदैवास्तु रामे विलीन मनः हे राम मामुद्ध प्रार्थये ॥2॥

भगवान श्रीराम से परे कोई अन्य तत्व नहीं है कहीं भी। मैं हमेशा श्रीराम के दासों का अनुगामी बना रहूँ। मेरा मन सर्वदा श्रीराम में लगा रहे, हे श्री राम मैं प्रार्थना करता हूँ कि (भवसागर में मग्न) मेरा शीघ्र ही उद्धार करें।

प्रस्तुति : **गोपाल सिंह (पूर्व प्राचार्य)**
श्री सेठ लक्ष्मी नारायण संस्कृत विद्यालय प्रेम सरोवर गाजीपुर,
बरसाना (मथुरा) मो0 : 8273550296

॥ राम नाम महिमा ॥

मथुरा शब्द विलोमेन, मध्यमाक्षर वर्जितं

यन्मुखे तद्द्वयं नास्ति, तन्मुखे मध्यमाक्षरं

मथुरा शब्द का विलोम (राथुम) करने तथा मध्यम अक्षर वर्जित कर देने के बाद 'राम' पद बनेगा, ये दो अक्षर 'राम' जिसके मुख में नहीं है, ऐसे व्यक्ति के मुख में मध्यम अक्षर प्राप्त होवे। उपर्युक्त श्लोक का भाव यह है।

वस्तुतः राम का नाम राम से भी बढ़कर है। अतः अविस्मरणीय है। श्रीरामचरितमानस के अनुसार –

ब्रह्म राम तें नामु बड़ बर दायक बर दानि।

रामचरित सत कोटि महँ लिय महेस जियँ जानि॥

(1 / 25)

राघवेन्द्र भगवान का सम्पूर्ण जीवन अनुकरणीय है। त्रेतायुग में अवतार ग्रहणकर भगवान श्रीराम ने मर्यादा की स्थापना कर धर्म की रक्षा की।

जब जब होइ धरम कै हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी॥

तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा॥

(1 / 121 / 6 एवं 8)

हे राम मेरे सुखधाम हो तुम और करुणा के आगार हो तुम।।
हे रघुनन्दन, हे जनरंजन। मर्यादा के सार हो तुम।।
हे दशरथनन्दन, कष्ट विभंजन। करुणावतार भगवान हो तुम।।

प्रस्तुति : **सुश्रीशारदा मिश्रा (चेतन),** मथुरा । मो0 : 09897162687

आरती एवं वन्दना

आरती गणेशजी की

जय गणेश, जय गणेश जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।
एकदन्त दयावन्त, चार भुजा धारी। मस्तक सिन्दूर सोहे, मूषे की सवारी।। जय गणेश ...।।
अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया। बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया।। जय गणेश ...।।
लड्डुन का भोग लगे, सन्त करें सेवा। हार चढ़ें, फूल चढ़ें और चढ़े मेवा।। जय गणेश ...।।
दीनन की लाज रखो शम्भु–सुत वारी। कामना को पूर्ण करो जग बलिहारी।। जय गणेश ...।।

आरती श्रीरामचन्द्रजी की

जगमग जगमग जोत जली है। राम आरती होन लगी है।।
भक्ति का दीपक प्रेम की बाती। आरती संत करें दिन राती।।
आनन्द की सरिता उभरी है। जगमग जगमग जोत जली है।।
कनक सिंहासन सीय समेता। बैठहिं राम होइ चित चेता।।
वाम भाग में जनक लली है। जगमग जगमग जोत जली है।।
आरती हनुमत के मन भावे। राम कथा नित शंकर गावे।।
सन्तों की ये भीड़ लगी है। जगमग जगमग जोत जली है।।

आरती श्रीरामायणजी की

आरति श्रीरामायनजी की। कीरति कलित ललित सिय पी की।। आरति श्री ...
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद। बालमीक बिग्यान बिशारद।।
सुक सनकादि सेष अरु सारद। बरनि पवनसुत कीरति नीकी।। आरति श्री ...
गावत बेद पुरान अष्टदस। छओ सास्त्र सब ग्रंथन को रस।।
मुनि जन धन संतन को सरबस। सार अंस संमत सबही की। आरति श्री ...
गावत संतत संभु भवानी। अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी।।
ब्यास आदि कबिबर्ज बखानी। कागभुसुंडि गरुड़ के ही की।। आरति श्री ...
कलिमल हरनि बिषय रस फीकी। सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की।।
दलन रोग भव मूरि अमी की। तात मात सब बिधि तुलसी की।। आरति श्री ...

आरती भगवान जगदीश्वर की

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे,
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे।। **ॐ** जय ...।।
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनसे मन का।। स्वामी ...।।
सुख–सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।। **ॐ** जय ...।।
मात–पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी।। स्वामी ...।।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी।। **ॐ** जय ...।।
तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।। स्वामी ...।।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।। **ॐ** जय ...।।
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता।। स्वामी ...।।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता।। **ॐ** जय ...।।
तुम हो एक अगोचर, सब के प्राण पती।। स्वामी ...।।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमती।। **ॐ** जय ...।।
दीनबन्धु दुख हरता, तुम ठाकुर मेरे।। स्वामी ...।।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे।। **ॐ** जय ...।।
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।। स्वामी ...।।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।। **ॐ** जय ...।।
तन, मन, धन, सब कुछ है तेरा।। स्वामी ...।।
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा।। **ॐ** जय ...।।
श्यामसुन्दरजी की आरति जो कोई नित गावे।। स्वामी ...।।
कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पत्ति पावे।। **ॐ** जय ...।।

आरती सरस्वतीजी की

शारदे जय हंसवाहिनी,
जयति वीणावादिनी।
जय सरस्वती ज्ञानदायिनी,
कमल हंस विराजिनी।

शारदे जय हंसवाहिनी,
ऋद्धि सिद्धि विवेकदायिनी,
कुमति शूल विनाशनी।
देवी मंद सुहास वर्षनी,
हृदय हंस विराजिनी।
शारदे जय हंसवाहिनी,
मधुर काव्य कला,
प्रणव नाद विकासिनी।
भगवती संगीत वर दे,
भुवन मानस वासिनी।

शारदे जय हंसवाहिनी,
जयति वीणावादिनी।

आरती शिवजी की

कर्पूर गौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानीसहितं नमामि।।

जय शिव ओंकारा प्रभु हर शिव ओंकारा, ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा। ॐ हर हर महादेव।।

एकानन चतुरानन पंचानन राजे, हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजे। ॐ हर हर महादेव।।

दो भुज चारु चतुर्भुज दस भुज ते सोहे, तीनों रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहे। ॐ हर हर महादेव।।

अक्षमाला बनमाला मुण्डमाला धारी, चंदन मृगमद सोहे भोले शुभकारी। ॐ हर हर महादेव।।

श्वेताम्बर, पीताम्बर, बाघम्बर अंगे, सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे। ॐ हर हर महादेव।।

लक्ष्मी बर गायत्री, पारवती संगे, अरधंगे अरु शिरभंगे, सिर सोहत गंगे। ॐ हर हर महादेव।।

करके मध्य कमण्डलु चक्र त्रिशूल धारी, सुखकारी दुखहारी जग पालन कारी। ॐ हर हर महादेव।।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका, प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका। ॐ हर हर महादेव।।

त्रिगुणस्वामी की आरती जो कोई नित गावे, कहत शिवानन्द स्वामी वांछित फल पावे। ॐ हर हर महादेव।।

आरती श्रीहनुमानजी की

आरती कीजे हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।।
जाके बल से गिरिवर कांपे। रोग–दोष जाके निकट न झांके।।
अंजनि पुत्र महा बलदाई। सन्तन के प्रभु सदा सहाई।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये।।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई।।
लंका जारि असुर संहारे। सियाराम के काज संवारे।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि संजीवन प्रान उबारे।।
पैठि पताल तोरि जमकारे। अहिरावन की भुजा उखारे।।
बायें भुजा असुरदल मारे। दाहिने भुजा संतजन तारे।।
सुर नर मुनि आरती उतारें। जै जै जै हनुमान उचारें।।
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई।।
जो हनुमानजी की आरती गावै। बसि बैकुण्ठ परम पद पावै।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महं डेरा।। आरती ०००

आरती सत्यनारायणजी की

ॐ जय श्री लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय श्री लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी, जन–पातक–हरणा।। ॐ जय ...

रत्न जटित सिंहासन, अद्भुत छवि राजे।
नारद करत निराजन, घण्टा ध्वनि बाजे।। ॐ जय ...

प्रकट भये कलिकारण, द्विज को दरस दियो।
बूढ़ो ब्राह्मण बनके, कंचन महल कियो।। ॐ जय. ...

दुर्बल भील कराल, जिन पर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा, तिनकी विपति हरी।। ॐ जय ...

वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीन्हीं।
सो फल भोग्यो प्रभुजी, फिर अस्तुति कीन्हीं।। ॐ जय ...

भाव–भक्ति के कारण, छिन–छिन रूप धरयो।
श्रद्धा धारण कीन्हीं, तिनको काज सरयो।। ॐ जय ...

ग्वाल–बाल संग राजा, बन में भक्ति करी।
मनवांछित फल दीन्हों, दीनदयालु हरी।। ॐ जय ...

चढ़त प्रसाद सवायो, कदली फल मेवा।
धूप दीप तुलसी से, राजी सत्यदेवा।। ॐ जय ...

श्री सत्यनारायणजी की, आरती जो कोई नित गावे।
भगतदास मनवांछित सुखसम्पत्ति पावे।। ॐ जय ...

आरती अम्बेजी की

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी। तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवजी।। ॐ जय अम्बे ...

मांग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को। उज्ज्वल से दोउ नयना, चन्द्र वदन नीको।। ॐ जय अम्बे ...

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे। रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे।। ॐ जय अम्बे ...

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी। सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुख हारी।। ॐ जय अम्बे ...

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती। कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योती।। ॐ जय अम्बे ...

शुम्भ–निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती। धूम्र विलोचन नयना, निशिदिन मदमाती।। ॐ जय अम्बे ...

चण्ड–मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे। मधु–कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे।। ॐ जय अम्बे ...

ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी। आगम–निगम बखानी, तुम शिव पटरानी।। ॐ जय अम्बे ...

चौसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरू। बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरू।। ॐ जय अम्बे ...

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता। भक्तन की दुःख हरता, सुख सम्पत्ति करता।। ॐ जय अम्बे ...

भुजा चार अति शोभित, वर–मुद्रा धारी। मनवांछित फल पावत, सेवत नर–नारी।। ॐ जय अम्बे ...

कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती। मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योती।। ॐ जय अम्बे ...

माँ अम्बे की आरति, जो कोई नित गावे। कहत शिवानन्द स्वामी, सुख–सम्पत्ति पावे।। ॐ जय अम्बे ...

श्री रामचन्द्रजी की स्तुति

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारुणम्।
नव कंज लोचन, कंज मुख कर कंज पद कंजारुणम्।।
कंदर्प अगणित अमित छवि, नव नील नीरज सुन्दरम्।
पटपीत मानहुँ तड़ित रुचि शुचि, नौमि जनक सुतावरम्।।
भजु दीनबंधु दिनेश दानव दैत्य वंश निकंदनम्।
रघुनन्द आनन्द कन्द कौशल चन्द दशरथ नन्दनम्।।
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणम्।
आजानु भुज शर चाप धर संग्राम जिति खरदूषणम्।।
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनम्।
मम ह्रदय कंज निवास कुरु कामादि खलदल गंजनम्।।
मनु जाहि राचेउ मिलिहि सो वर सहज सुन्दर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो।।
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि–पुनि मुदित मन मन्दिर चली।।

आरती कुंजबिहारीजी की

आरती कुंज बिहारी की, गिरधर कृष्ण मुरारी की।

गले में बैजन्ती माला, बजावै मुरली मधुर बाला।
श्रवन में कुण्डल झलकाला।
नन्द के आनन्द, मोहन बृजचन्द, परमानन्द, राधिका रमण बिहारी की।। आरती कुंज ...

गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली।
लतन में ठाढ़े बनमाली, भ्रमर सी अलक, कस्तूरी तिलक,
चन्द्र सी झलक, ललित छवि श्यामा प्यारी की।। आरती कुंज ...

कनकमय मोर मुकुट विलसें, देवता दर्शन को तरसें।
गगन से सुमन बहुत बरसें, बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग,
ग्वालिनी संग, अतुल छवि गोप कुमारी की।। आरती कुंज ...

जहां ते प्रकट भई गंगा, कलुष कलि हारिणी गंगा,
स्मरण से होत मोह भंगा, बसी शिव शीश, जटा के बीच,
हरै अघ कीच, चरण छवि श्री बनवारी की।। आरती कुंज ...

चमकती उज्ज्वल तट रेणू, बाजती वृन्दावन वेणू।
चहुँ दिशि गोप ग्वाल धेनू, हंसत मृदुमन्द, चांदनी चन्द।
कटत भव फन्द, टेर सुन दीन दुखारी की।। आरती कुंज ...

आरती लक्ष्मीजी की

जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशिदिन सेवत हर विष्णु धाता।। जय लक्ष्मी ...

उमा रमा ब्रह्माणी तुम ही जग माता,
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता। जय लक्ष्मी ...

दुर्गा रूप निरंजन सुख संपति दाता,
जो कोई तुमको ध्यावत ऋद्धि सिद्धि पाता। जय लक्ष्मी ...

तू ही है पाताल बसंती तू ही है शुभ दाता,
कर्म प्रभाव प्रकाशक भवनिधि की त्राता। जय लक्ष्मी ...

जिस घर में तुम रहतीं सब सद्गुण आता,
सब संभव हो जाता, मन नहीं घबड़ाता। जय लक्ष्मी ...

तुम बिन यज्ञ न होवे वस्त्र न कोइ पाता,
खान पान को वैभव सब तुम से आता। जय लक्ष्मी ...

शुभ गुण सुन्दर मुक्ता क्षीरो निधि जाता,
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहीं पाता। जय लक्ष्मी ...

श्रीलक्ष्मीजी की आरती जो कोई नित गाता,
उर आनन्द समाता पाप उतर जाता। जय लक्ष्मी ...

आरती श्रीराम की

हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ
आरती उतारूँ मैं तो तन मन वारूँ।
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ।।

कनक सिंहासन राजत जोरी—दसरथ नन्दन जनक किशोरी।
युगल छवी को सदा निहारूँ।
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ।।

वाम भाग शोभित जग जननी—चरण विराजत हैं सुत अंजनी।
इन चरणों में जीवन वारूँ।
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ।।

चरणों से निकली गंगा प्यारी— पावन करती है दुनियाँ सारी।।
इन चरणों को सदा पखारूँ।
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ।।

आरति हनुमत के मन भावै—रामकथा नित शिवजी गावै।
मैं सुन सुन निज जनम संवारूँ।
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ।।

आरती अवध विहारी की

आरती अवध विहारी की, लखन सिया जनक दुलारी की।

शीश पर क्रीट मुकुट सोहे। चंद्रिका की छवि मन मोहे।।
लखन सेवा बलिहारी की। लखन सिया जनक दुलारी की।।

कपोलन पै अलकैं झलकें। अधर पै बिजली सी चमके।।
छवि कजरारे नयनन की। लखन सिया जनक दुलारी की।।

अंग सब ज्यों निर्मल नीरा। भरत रिपुदलन महावीरा।।
चरण सेवा धनुधारी की। लखन सिया जनक दुलारी की।।

जिए जुग श्यामलता जोरी। भजो रे मन सब माया तोरी।।
दरस हित युगल विहारी की। लखन सिया जनक दुलारी की।।

वंदना

जिस घर में हो आरती, चरण कमल चितलाय। वहाँ प्रभु वासा करें, स्वर्ग लोक से आय।।
कथा सदा होती रहे, सुनो वीर हनुमान। राम लखन सीता सहित, सदा करो कल्यान।।
बार बार वर माँगहुं, राम कृपा कर देहुं। जन्म जन्म प्रभु पद कमल, कबहुं घटे जनि नेहु।।
देवता सब आश्रम गये, शम्भु गये कैलाश। श्रोता–वक्ता जायेंगे, हरि सुमिरन की आस।।
मो सम दीन न दीन हित, तुम समान रघुवीर। अस विचार रघुवंश मनि, हरहु विषम भव भीर।।
हम तो कुछ जाने नहीं, तुम जानों रघुनाथ। सेवा पूजा वन्दना, सबहि तुम्हारे हाथ।।
पुष्पांजलि अर्पण करूं, ग्रहण करो महाराज। कृपा दृष्टि अवलोकिए, शरण पड़े की लाज।।

ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्।
ॐ कात्यायन्यै च विद्महे कन्या कुमारी च धीमहि तन्नो दुर्गे प्रचोदयात्।
ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णु प्रचोदयात्।
ॐ आदित्याय विद्महे भास्कराय धीमहि तन्नो सूर्यः प्रचोदयात्।
ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।
ॐ वासुदेवाय विद्महे राधाबल्लभाय धीमहि तन्नो कृष्णः प्रचोदयात्।
ॐ दशरथाय विद्महे सीताबल्लभाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात्।
ॐ रामदूताय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि तन्नो हनुमत प्रचोदयात्।
ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं, पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्ण मेवावशिष्यते।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनं। पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं, भक्तिहीनं सुरेश्वरः। यत्पूजितं मया देव! परिपूर्णं तदस्तु मे।

श्रीरामचरितमानस पाठ आयोजन हेतु आवश्यक सामग्री

नारियल–1		देशी घी	1 कि.ग्रा.
कंद		गोला साबुत *	1
सुपारी–11+10 *		मिश्री	200 ग्राम
धूपबत्ती		सौंफ	100 ग्राम
अगरबत्ती		काली मिर्च	10 ग्राम
कलावा		गंगाजल	
रोली		फल (ऋतु फल)	5 तरह के
कपूर (डली का)		दूर्वा	
इलायची	10 ग्राम	तुलसी के पत्ते	
लौंग	10 ग्राम	रूई	
पंचरंगा *		पान साबुत	5
हवन सामग्री *	1 कि.ग्रा.	फूल हार	7
काले तिल *	50 ग्राम	आम के पत्ते	
इन्द्र जौ *	25 ग्राम	हवन के लिए लकड़ी *	5 कि.ग्रा.
जौ *	50 ग्राम	(आम / आक / ढाक की)	
बेलगिरी *	250 ग्राम	कलश	1
अगर *	25 ग्राम	थाली	4
तगर *	25 ग्राम	लोटा	2
नागर मौथा *	25 ग्राम	चम्मच	2
कपूर कचरी *	25 ग्राम	माचिस	2
चन्दन चूरा *	25 ग्राम	आसन	2
धाय के फूल *	25 ग्राम	कटोरी	4
कच्ची खांड *	250 ग्राम	आटा	50 ग्राम
चावल	250 ग्राम	हल्दी	50 ग्राम
पंच मेवा	50 ग्राम		

समिति द्वारा प्रतिमाह श्रीरामचरितमानस पाठ / सुन्दरकाण्ड पाठ, यज्ञ, कीर्तन एवं प्रवचन निःशुल्क आयोजित किये जाते हैं। सभी प्रभु प्रेमी अपने निवास अथवा समीपस्थ मंदिर / उपयुक्त स्थान पर उपर्युक्त धार्मिक आयोजन करवा कर पुण्य लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

* यदि यज्ञ न कराएँ तो यह सामग्री नहीं चाहिए।